



# यह कब की बात है

ची० मालसिंह



आनंद प्रकाशन  
बीकानेर

लेखापीन

प्रकाशक

आलोक प्रकाशन

बीकानेर-334001

प्रथम संस्करण 1000

1992

मूल्य

साठ रुपये मात्र

मुद्रक

शिवरतन डावाणी

मोहन प्रिंटिंग प्रेस

कोटगेट जोशीगडा

बीकानेर

---

YEH KAB KI BAT HAI

by

Ch Mal Singh

Price Rs 60 00

समर्पित  
अमरत्व को प्राप्त  
प्रिय पुत्र  
सज्जन

श्री० मालसिंह

चन्द्र टले सूरज टले, टले सकल व्यवहार ।  
पर वेटे सज्जन की टले न यादगार ॥

## “यह कब की बात है”

यह नाम उस पुस्तक का है जिसके लेखक चौ मालसिंह हैं। चौ मालसिंह के नाम से हिन्दी जगन अपरिचित नहीं है। इस रचना से पहले उनकी निम्नलिखित रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं—  
1 राजस्थान में पचासत राज 2 राज थान के पड पोधे, पशु पक्षी  
3 राजस्थान का पशुधन एव गावों की अथव्यवस्था 4 सैक्यूलर-वाद  
5 जगलपुरी का हैडमास्टर 6 लादेवाला 7 राज काज की बातें 8 जगलपुरी का हैडमास्टर (शिक्षा प्रशामन)

इन रचनाओं के नामों से ही पता चलता है कि लेखक का अध्ययन एव अध्यापन बहु आयामी रहा है। इनके विषय में और अधिक लिखना अप्रसंगिक होगा।

“यह कब की बात है” के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है। लेखक के अध्ययन का आधार यद्यपि इतिहास है किन्तु उन्हीं के शब्दों में एव अन्वये की बात “कैसे, क्यों, किसने, कौन पर कितने

बहुत है। पर “कब” पर एक भी किताब नहीं है। अतः इतिहास के इस महत्वपूर्ण अंग को अपने अध्ययन का आधार बना कर उन्होंने तिथिशास्त्र (Chronology) की जरूरत को महसूस करके प्रस्तुत पुस्तक की रचना की है। इस दृष्टि से उन्होंने अध्यापको विद्यार्थियों एवं सामान्य जनता के लिए एक महत्वपूर्ण विश्व कोष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो प्रशंसनीय है।

इस पुस्तक के लेखक चौ० मालसिंह ने विश्व इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत कर दी है जिसे भविष्य की पीढ़ी रग देकर एक रमणीय चित्र का निर्माण कर सकती है। इस प्रकार यह रचना भावी भवन निर्माण के लिए नींव का पत्थर बन सकती है। इस चित्र का चित्तरा होगा भावी अध्यापक, उम भवन का निर्माता होगा भविष्य का होनहार विद्यार्थी, भवावी युवक और कर्मशील मानव।

इस पुस्तक का प्रथम अध्याय ‘विद्यालय की खोज में’ स्वयं ही चौ० मालसिंह के व्यक्तिगत प्रारम्भिक इतिवृत्त है। एक छोटे से गांव का 8 वर्ष का बालक तब अली मोहम्मद जूने लोक हितकारी एवं समाज सेवी जकात के थानेदार से प्रारम्भिक अक्षर जानस लेकर बीस तक की गिनती सीखने के बाद स्वयं ही अपनी यादगता में सौ तक गिनती सीख गया और नाम लिखने तथा पत्र पढ़ने लगा ता उसकी विद्या प्राप्ति की उत्कृष्ट इच्छा का प्रमाण था। सामने आ ही गया। इसने बाद विद्यालय की खोज में यह बालक कहा—वहा भयंकर, क्या-क्या कष्ट झाले कितनी-कितनी गम ठण्डी भेनी, क्या क्या काम किये, किस किस की बिडकिया फन्कारे महे यह सब इस अध्याय को पढ़ने पर मालूम हो जाएगा।

भूतपूर्व बीकानेर रियासत में एक वहावत मसहूर थी “जाट और मूज तो कूट्या ही काम देव” इस वहावत के पीछे एक व्यव-

म्या का सकेत है। वह सामंती व्यवस्था थी। राजपूत सामन्त था और था शोषक। इसके त्रिपरीत जाट कृषक था, पशु पालक था। सामंत श्रम नहीं करता था, कृषक पशु पालक श्रम करता था। राजपूत राजा था, जागीरदार था, श्रम से वास्ता नहीं, दौलत और ऐंग आराम की कमी नहीं गुलछरें उडान से फुसत नहीं, जाट कृषक था, श्रमिक था, पशुपालन करता था और सारा जीवन ऐडी से चोटी तरु का पसीना बहा कर भूखे पेट रहता था, तन ढकने को कपडा नहीं, रहने को घर नहीं, अकाल पड जाय तो और भी तबाही एक तरफ था गापक सामन्त दूमरी तरफ था शोषित सबहारा श्रमिक। दानो का सघपं होता रहता था और इसी को प्रकट करती है उम्यु कत बहावत। इस बहावत के पीछे एक सत्य था और वह था सर्वहारा का, श्रमिक का शोषक द्वारा उरडीडन।

चौ० मालसिंह का जन्म एक जाट परिवार में हुआ। सामंती उरडीडन में, अत्याचार से यह परिवार भी अप्रभावित न था। सर्वहारा वर्ग में जन्मे इस बालक ने जिन मुषीबतों को भेला हैं, जिन कठिनाइयों को सहा है जिन अपभावों और दुखों को भोगा है उसकी एक झलक हम प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय में मिलती है। इस अध्याय को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि जीवट के घनी ची मालसिंह का दरिद्रता एवं अपभाव के विरुद्ध सघप करके जीवन में सफलता प्राप्त करने में ब्रह्म के मार्ग में कोई बाधा बाधक बन कर नहीं टिक सकी। मत्त परिश्रम, ध्येय के प्रति आस्था, विद्या के हेतु अनवरत रुचि एवं लगन उनके जीवन के प्रकाश स्तम्भ रहे हैं और 'तमसा मा ज्योतिर्गमय' को उन्होंने अपने अथक, सक्रिय जीवन में मूर्तिमान कर दिखया है।

मैं उस कथ्यनिष्ठ का आदर करता हूँ जो अपनी मारा जीवन



एक तपस्वी की भाँति व्यतीत करता है जो समाज के लिए जीता और समाज के लिए ही मरता है। उसने समाज से जो पाया उस वह धरोहर की तरह सहजता है और समाज को सुरभित लोग देता है। मेरी दृष्टि में चौ मालसिंह एक कम्युनिस्ट है, सबहल के प्रतीक हैं अपने व्यक्तित्व के लिए जिसे न ऐग चाहिए न आराम जीवन की इस सध्या में भी जो सजग है, जो सतक है, जो सावधान है, जो विद्यार्जन में तल्लीन है, जो लेखन एवं सृजन में गतिशील है जो जीवन के दुखों को भी सुख की तरह भोग रहा है वह चौ मालसिंह सही अर्थों में कम्युनिस्ट हैं। आज वह नीव का पत्थर चाहे दिखाई न दे पर भवन का निर्माण उसी पर होगा। मेरी कामना है कि चौ मालसिंह स्वस्थ एवं सक्रिय बने रह कर हम लोगों के प्रेरणा स्रोत बने रहे।

सध-यवाद !

**गोविन्दलाल व्यास**

छठवीली घाटी  
बोकानेर  
दि० 1 जनवरी 1992

सेवा निवृत्त  
जिला शिक्षा अधिकारी

□

## अध्ययन का आधार तिथिवाद

हिस्टरी ज्योग्राफी बेवफा ।

राब का रटी, सवेरे सफा ॥

1901 से लेकर आज तक यह कहावत विद्वानों और विद्यार्थियों पर लागू है । आज भी भूगोल की किताबें ऐसी पढ़ी जाती हैं जिस लोग उपयोग और कहानियाँ पढ़ते हैं । किताब नक्शा से और चित्रों से भरी है । पर उन्हें पढ़ा नहीं जाता, उन्हें देखी नहीं जाती । किताब नक्शों से क्यों भरी गई । इस पर पाठक और अध्यापक नहीं सोचते । अध्यापक इतिहास ऐसे पढ़ाता है जैसे हिन्दी साहित्य पढ़ा रहा हो । भूगोल का मास्टर नक्शे जरूर टागता है । पर वह छात्रों को इस मांग पर नहीं लाता कि छात्र निरंतर नक्शे देखें और नक्शे खींचें । एक बात अध्यापकों को याद रखनी चाहिए कि वह यह देख लें कि जो छात्र नवीं, दसवीं कक्षा में भूगोल लेंगे हैं, वह नक्शा खींच सकता है कि नहीं । नक्शा खींचना एक कला है जो हर छात्र नहीं जानता है ।

## इतिहास

जब भूगान नवनों बिना नहीं सीखा जा सकता, वन ही ईतिहास तारीखों, तिथियों बिना नहीं सीखा जा सकता। जो भी घना सीखो, पढ़ो उसके दिनांक साम याद करो। जा कान प्राप पढ़ रहे हो, वह कम से शुरू होता है। इसे आधार मान कर, माग क्रम बनालो। इतिहास दिनांक बिना याग नहीं होता और दिनांक कम बनाए बिना याद नहीं हाता। दिनाकों की एक श्रलला हाती है। उसी श्रमना म हए दिनाको का जमा दो।

मोटे रूप मे हर देश का इतिहास तीन भागों मे बांटा जाता है। प्राचीन युग, मध्य युग और वतमान युग। प्राचीन काल मे शिवार कुछ इन्ने गिन अनाजा की खेती जैसे भाजरा, जी, मक्का भादि घघे थे। अधिकाश लोग चलते फिरते थे। यर्पा जहो होती, वही चले जाते थे। म्काल पढे स्थानों को छोड देते थ। मडाइ मे हारे लोग भाग कर वही दूसरी जगह पर बस जाते थे।

मध्य युग को सामंती युग भी कहते हैं। सामंती युग भूमि वब्जा काल से बैबर भाज तक चलता है। सामंती करण तो सब जगह एक ही समय मे हुआ, पर उद्योगीकरण यानी आधुनीकरण सब जगह एक साथ नहीं हुआ।

तो इतिहास की घटनाओं का और सामाजिक व्यवस्थाओं और परिस्थितियों को समय कालवद्ध और निनांक बद्ध करना बहुत ही जरूरी है। नहीं वही पुरानी कहावत वेवफाई की लागू हा जाएगी जिसमे वेवफाई पाटम विषय की नही अध्ययनकर्ता की है)

## एक अचम्बे की बात

"कैसे, क्यों, किसने, कौन" पर किताबें बहुत हैं। पर 'कब' पर एक भी किताब नहीं है। इससे मेरे मनलोकन और अध्ययन को बल मिलता है कि बेवफाई इतिहास की नहीं हैं पाठक और समाज की हैं। इसीलिए सीखन में मस्तिष्क पर अनावश्यक जोर पड़ता है। इतिहास जमे सरस और आभासभूत विषय को निरस और बेवफा कहा जाता है।

10926

दि० 1 जनवरी 1992

श्री मालसिंह

पोकर क्वार्टर्स

रानी बाजार, बीकानेर



## अनुक्रमणिका

1	सज्जन परिगष्टि	पष्ठ
2	सज्जन एक दृष्टि	भ
3	विद्यालय की सोज मे	ट
4	यह कव की वात है	9
5	प्रमुख व्यक्तियो का परिचर	21
		183

सज्जन स्मृति परिशिष्ट

मेरे जीवन की सध्या को गुलजार किये होते ।  
सज्जन इस दुनिया मे कुछ और रहे होते ॥

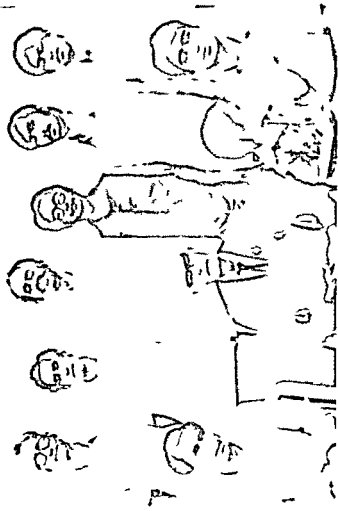
*माता श्रीमति नारायणी देवी*

जब तक मेरी लिखाई चलेगी ।  
सज्जन तेरी बडाई चलेगी ॥

*पिता चौ. मालसिंह*







कुर्मी पर रहे हुए—श्री गिव किमन जाशी, का० शाकत उम्मानो  
 वातक अजय चाधरो साथ म गज्जन चौधरी

गीष्ट मते २०—१ कवन श्री मोहन गिष्ट २ श्री रमणवीर मिष्ट यादव ३ (

## जोशीला नौजवान

इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति में विद्यमान गुण तथा उसमें छिपी प्रतिभा अल्पांगु जीवन के घायलद भी उसके जीव ब्यक्तित्व का चिरस्थायी बना देती है। मैंने चौधरी सज्जन कुमार को सदा इसी रूप में देखा और पहचाना। चौधरी सज्जन कुमार एक ऐसा ही जिदाली नौजवान था। मानवतावादी बल्पना शक्ति के मरुल्प व साथ वह किस न मजदूर और गरीब के चेहरो पर रोषनाई देखन के लिए तालायित रहता था। सुशील क्षारीरिफ सौष्ठव का धनी हाने पर भी उसने कभी अपनी आलो को कमजार के प्रति काधित नही बनने दिया। बरिफ असहाय की सरायता में उसने कदम क रवां बनरर भाग की ओर चल पडत थे। चौधरी सज्जन कुमार ने अपन विचारा क अनुकून वसव्य को निभाने में समय का इतजार नही किया। छात्र जीवन को सघर्षों के साथ जाड दिया। वह स्टुडे ट फेडरेशन का उपाव्यक्ष वना-छात्र समस्याया में शूजने हुए अनक भा वाननो में गिरफ्तार हुया लेकिन इन गिरफ्तारियो में उसने

उत्साह को आगे बढ़ाया ।

सामुदायिक विराम के विचारों से घात प्राप्त सज्जन कुमार जमातारों और जलीरेबाजों का घार विरोधी बनकर उसके खिलाफ वह हमारा आन्दोलित रहा—जेल जाना पड़ा तो बिना हिचक जेल गया । भाषणों के महगाई विरोधी आन्दोलन की धगुवाई में या जनहित के सपनों में उसे कई बार जेल के शिक्काओं में बन्द होना पड़ा तब भी उस नौजवान के मन में कभी धबराहट उत्पन्न नहीं हुई । दूमरी और कतधय परायण में अग्रणीयता उसका विशेष गुण था । बिहार के बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने का सवाल उठा तब साम्यवादी नेता रामानन्द प्रगवाल की माफत उसने पूरी मदद पहुँचाई । स्वयं की हिस्सेदारी के साथ-साथ अन्य लोगों को उसने प्रेरित किया ।

इसी तरह अकाल के समय वह सब कुछ छोड़ कर ग्रामीण क्षेत्रों में राहत पहुँचाने में मददगार बनने के निमित्त निकल पड़ता था । उसकी सलपायु ने बहन श्रीमति नारायणी देवी एवं चौधरी मालसिंह के साथ-साथ मुझ भी दुःखदायी बनाकर शक्ति पहुँचाई है ।

**महबूब अली**

बीकानेर

पूर्व नगर विधायक एवं पूर्व

जन सम्पर्क मंत्री राजस्थान सरकार



## वह क्रांति का साधक था

उद्दीयवान मनुष्य के लिए परिस्थितियाँ और वातावरण ही वह स्रोत साबित होता है जो उसे जीवन में कुछ कर गुजरने की प्रेरणा प्रदान करता है। समस्याओं का सामना और क्षणघाता से जूझता हुआ जो व्यक्ति आगे बढ़ता है उसके समक्ष वाघाएँ स्वयं रास्ता छोड़ देती हैं। सघर्ष उगे शक्ति प्रदान करता है। उसे निस्कटक बना आगे का रास्ता दिखलाने वाला पथ प्रदर्शक बन जाता है। ऐसे पुरुष जब विजित होकर जीवट व्यक्तित्व के धनी बनकर सामूहिक ावृत्व की कमान सम्भालने में समर्थ बने हैं। उन्हें क्रांति का साधक समथा जाता है।

छोटी उम्र का मोजवान चौ० सरजन कुमर की गिनती ऐस जीवट व्यक्ति के रूप में की जान लगी जब अग्रणीय बन कर छात्र-जीवन के दौरान ही उसने किसानों और मजदूरों के उत्थान के धा दोलन में अपने मृत्युधाम ग्रन्थयन के समय के साथ-साथ अपना

समर्पित श्रुगुग्रा सहय ग टिया । सज्जन कुमार ढवल पारिती की साधन बनकर नही रहा, बल्कि शिक्षा प्रसार की रचनात्मक वाय-गैली का अपनाकर उसने अपने अककाग के समय को गावा म प्रौढ शिक्षा प्रसार म भागीदार बनकर सक्डो प्रौढ स्त्री-पुम्पो को साक्षरता का नान करवाया ।

साधना के प्रतीक ची० सज्जन कुमार का अल्पायु म आक-मिक निघन स न सिफ उसने माता पिता का दुखित नही किया, अपितु मेरे महित समाज के हर बग के अकविन को व्यथित बना दिया और एक होनहार नेतृत्व से वच्छिन कर दिया जिसकी पूति कभी वही हा सवेगी ।

गिरधारीलाल भोबिया

अध्यक्ष

सरमून डेवरी, बीकानेर

दि० 25-12-91

ॐ

## एक समर्पित अध्यापक

अध्यापन के क्षेत्र में मैं काफी वर्षों तक कार्यरत रहा। उमर दोगत मुझे बहुत मे मानी अध्यापकों का साथ मिला। आज मैं उन साथ रह अध्यापकों की विशेषताओं का विश्लेषण करता हूँ तब स्वतः ही दिमाग व आँखों में सामन चौधरी सज्जन कुमार का चेहरा उभर आता है। लम्बे समय तक अध्यापन कार्य का अनुभव बतलाता है कि आज के युग में सज्जन कुमार जैसे शिक्षक लिए समर्पित अध्यापक का मिलना कितना कठिन है। जो सज्जन कुमार जब मेरी गाना में स्वदानान्तरण होकर आए, तब ग्रामीण क्षेत्रों की गानाओं अध्यापन का मैं सही मूल्यांकन नहीं कर सका। परन्तु समय के साथ साथ सज्जन कुमार अपनी शिक्षा प्रचार क प्रति निष्ठा रहते अध्यापकों व छात्रों का इतना प्रिय बन गया, जिसे आज भी याद किया जाता है। कक्षा में नियमित समय पर पहुँचना पाठ्य पुस्तकों के पाठों को याद करवाने की उसकी एक विशेष शैली थी। वह स्कूल के समय कभी बेकार नहीं बैठता। जा कक्षा खाली

मिली वहा प्रतिरिक्त समय म पठान को दौड पडता । इस से कि उस कक्षा के विद्यार्थिया का समय फिजुन सच न हो । छा पूरा नोस पढने से वाञ्छित न रह जाय । यही कारण था कि छा के सभी विद्यार्थी जितना आदर और सम्मान अध्यापक सज्जनकुमार का करते अन्य अध्यापकों का नहीं । विद्यार्थियो क साथ उता व्यवहार केवन एक अध्यापक का ही नहीं था बल्कि वह विद्यार्थियों का मित्रवत साथी बनकर उनका भागदण्ड करता, ताकि प्रत्येक छात्र प्रगति करें । खेलकूद का आयोजन हो अथवा सांस्कृतिक कार्यक्रम अध्यापक सज्जन कुमार की सभी म विशेष हिस्सेदारी रहती थी अनुशासनप्रियता को वह सदा अपन आस पास रखता और हर समय गैरकानूनिक विषयों पर उनसे चर्चा करता रहता था । उसकी काय शैली के अनेक सस्मरण गिनाये जा सकते है । लेकिन प्रकृति की श्रुता ने सज्जन कुमार जैसे समर्पित अध्यापक को समाज को प्रति फल मिलने से पूर्व ही हमसे उसे अल्पायु मे ही छोन लिया लेकिन विशेषताओ स्मृतिया आज भी उसकी याद दिला जाती है और उनके प्रति नतमस्तक बना देती है ।

व्यास कालानी  
बीकानेर

मोहम्मद जफर  
सेवा निवृत्त  
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय  
बीकानेर

## चौ. सज्जन : एक दृष्टि

प्रकृति किसी प्रतिभा का पलायन समय पूर्व करा सकती है किन्तु उसके प्रभाव को अनन्तकाल तक कामम रहने को नहीं रोक सकती। चौ० सज्जन कुमार का ऐसा ही एक व्यक्तित्व था। चौ० सज्जन कुमार का जन्म फरवरी 1953 में हुआ था। सज्जन कुमार का पालन पोषण अपनी माता श्रीमति नारायणी देवी की स्नहपूर्ण हरी भरी गोद में हुआ, वहीं पिता श्री मालसिंहजी चौधरी चु कि हायर सैकेण्टरी स्कूल के प्रधानाचार्य थे, अतः सज्जन कुमार को छात्रकाल से विद्या अध्ययन का वातावरण मिला। यही कारण था कि अपनी कुशाग्र बुद्धि, लगनगील जिनासा के रहते चौधरी सज्जन कुमार ने जब से विद्या अध्ययन के लिए स्कूल में प्रवेश लिया तब से आखिर तक वह पढ़ाई लिखाई में हमेशा मग्न रहता।

बहु आयामी गुण उसमें मौजूद थे। पढ़ना-पढ़ाना और लिखना उसकी विशेष रुचि थी। छात्र जीवन से सज्जन कुमार ने



दक्षिण कायों के अतिरिक्त सामाजिक राजनीति और नारीक  
 विनास में योगदान जिस रचनात्मक उद्देश्यों से स्वयं को जाड़ लिया  
 था। व्यायाम व खेलकूद उसकी दिनचर्या के अनिवार्य अंग थे।  
 गरीब सहपाठी छात्रों के प्रति सज्जन कुमार की हमदर्दी थी। ऐसे  
 कई अक्सर आये जब वह स्वयं की पाठ्य पुस्तकों को अथवा गरीब  
 छात्रों को दे देता, जा कि पुस्तकें खरीदने में समय नहीं हाते। एक  
 बार उसकी कक्षा के सहपाठी को बितावे न हाने की वजह से कक्षा  
 अध्यापक ने बिना बितावे कक्षा में आने पर निकाश दिया था।  
 अध्यापक ने उस छात्र को चेतावनी दी कि वह कल से स्कूल नहीं  
 आये। सज्जन को अध्यापक की बात गुरी लगी। उसका अध्यापक  
 तब कहा सर यह मेरे पास की पुस्तकें इसी की हैं। और उमन अपनी  
 पुस्तकें अपने सहपाठी को सौंप दी। कक्षा में अबल रहने व सहपा-  
 ठिया का मददगार गुणों ने उसे हर अध्यापक का प्रिय बना लिया।  
 सज्जन कुमार का बदन गढोला व फसलती था। खेलकूद की प्रति-  
 योगिताओं में अबल आकर उसने अनेक पारितोषिक पाये। स्कूल  
 से लेकर महाविद्यालयी शिक्षा तक एक होशियार विद्यार्थी बना रहा  
 और खेलकूद का अग्रिम खिलाडी।

सज्जन कुमार के दो बड़े भाई थे, जा डाक्टर एम वी वी  
 एस की डीग्री प्राप्त कर डाक्टर बन चुके थे। उसका झूकाव  
 विज्ञान विषय में अधिक था। महाविद्यालय में रहकर विज्ञान विषय  
 की उच्च शिक्षा पूर्ण करता उसी दौरान राज्य-भाषी छात्र आन्दोलन  
 की प्रमान सभाल दी। बाद में वह स्टुडेंट फेडरेशन से जुड़ गया।  
 कार्यक्रमित दम्य उम फेडरेशन का उपाध्यक्ष बना दिया गया।

शिक्षा के साथ-साथ उसकी अभिरुचि राजनीति और सामा-  
 जिक उत्थान में भागीदार बनने की ओर आकृष्ट होती गई। काप-

अमरत्व को प्राप्त



चौधरी सज्जन कुमार



क्षेत्र का विस्तार हा गया और वह अपना समय छात्रों की भलाई और गरीबों की सहायता में अधिक देने लगा था ।

बिहार के बाढ़ पीड़ितों का प्रसंग ही अथवा अकाल से मुकाबला वह प्रभावित लोगों का योगदान करने में जुट गया करता । भा क पा क साथ जुड़कर चुनाव संचालन में अगुवा रहता था । स्कूल व महाविद्यालय के अध्यापक की संख्या बढ़ती रहती । कालेज शिक्षा पूर्ण करने पर भी उसे रोजगार नहीं मिला । बेरोजगारी का सामना करना पड़ा । भगन का सच्चा, इरादों का पक्का सज्जन कुमार बेकार बैठना पसंद नहीं करता । उसने बी एड करना उचित समझा । प्रशिक्षण प्राप्त कर अध्यापन के क्षेत्र में आ गया । अध्यापन क्षेत्र में उसकी रुचि ग्रामीण क्षेत्रों में रही । ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापक बनने में उसकी रुचि एक विशेष प्रयोजन में थी । वह यह कि ग्रामीणों में प्रौढ़ शिक्षा का प्रसार कर देश के साक्षरता अभियान में अपना अधिक योगदान प्रदान कर सके । आज भी बहुत से प्रौढ़ स्त्री-पुरुष गावों में मिल जाते हैं जो कहते कि वे सज्जन कुमार की प्रेरणा से साक्षर बन सके ।

प्रकृति के क्रूर व्यवहार ने उसके मिशन का पूरा नहीं होने दिया और सज्जन कुमार को अल्पायु में ही हमसे छिन लिया उसकी कमठठा का कारण अपनी पूरी मजिल तक नहीं पहुंच सका ।

पैनपुरा

असलमेर



मोहनलाल पुरोहित

वरिष्ठ अध्यापक



## अमरत्व को प्राप्त बेटा सज्जन

वह छ फुटा जवान बटा सज्जन नीराग हृष्ट पुष्ट कैसे विदा ही गया । उछड़ता बूढ़ता, कसरती जवान कैसे चला गया। मदाचारी सेक्स का सच्चा बस्ती द्वारा, पडाम द्वारा प्रशना प्राप्त आदश रहस्यमय ढंग से कैसे चला गया । अग्नी मा की गोठ में सिर टक कर उसने क्यों घासू वहाये थे । विदाई की पहली शाम को उसने स्नान क्यों किया था । उसने पन्द्रह दिन से स्नान करना, दाढी बनाना, कुल्ला दातन करना क्यों बंद कर दिया था । उसकी सब तरह की रुधिया सब तरह के इन्टरेस्ट क्या खतम हो गए थे । उसकी दुखार दुखत्व अपने आप क्यों मिट गए थे ।

बस उसमें एक ही विचित्र अनोखी रहस्यमय बात थी, रहस्यमय फिनोमेनन PHENOMENON था । वह था उसके दिमाग की मस्तिष्क की, सिर की गूँथता बढ़ते जाना । रोगी अपनी बीमारी के बारे में कोई गिफायत नहीं करता था । हम दोनों उमरों

मा, बाप रोज़ देघने रखने थे, सोचते थे या ही है। घ्राप ठीक हो जाएगा। काई राग नहीं है। घ्राप ठीक हो जाएगा। और देघने ही देखत, सज्जन न, अपनी मा की गोद में सिर रख कर आपो का आमुघा में डबाख़ भर कर आमुघा की बटी-बडी बू दे बरसाता हुआ, नाक की सड़े से भरता हुआ, चत बसा।

घ्राज दिसम्बर 1991 के महीने में, हम दिन में कई बार आखो को आमुगा से छला छन भर लेने थे हैं।

बेटा सज्जन बहुमुखी प्रतिभाघ्रा का घनी या वास्तव में बड़े प्रतिभाशाली नव जवान था।

जब तक मेरी लिखाई चलेगी ।

सज्जन तेरी बडाई चलेगी ॥

घी० मानसिंह

चन्द्र टले, सूरज टले, चले जगत व्यवहार ।  
पर बेटे सज्जन को टले न यादगार ॥

सज्जन ने अपने छात्र जीवन में सदा सामाजिक कामों में और छात्र संगठनों में सक्रिय भाग लिया । समाज में भ्रष्टाचार का प्राण होकर विरोध किया नमाखोरी के विरुद्ध छापे भारने का नतृत्व किया । छात्र फेडरेशन का नेता रहा । उस समय उसके साथी थे मनोहर मिस्त्री, शेखर मेहता, वीरेन्द्र शर्मा आदि । उस समय के मैगजिन यूथ लाइफ में Youth life में सज्जन के सामाजिक और छात्र हित के कामों का वर्णन छपता था । सज्जन चौधरी छात्र फेडरेशन के उपाध्यक्ष थे ।

सज्जन का जन्म करवरी 1953 में हुआ था । उसका दर्शन-सान 2 जून 1991 में हुआ था । उस दिन तीनवार संडे था । अठतीस वर्ष की गरी जयानी में बेटा सज्जन अपनी मां को जोर से रोती छोड़कर चला गया ।

सेक्स की बातों में सज्जन एक आदर्श नौजवान था । पर

पड़ोस को उसके सदाचार पर और सेवा भाव पर गौरव था ।

सन्जन की मा, मेरी पत्नी नारायणी देवी ऊमर सत्तर वर्ष  
मामूली बम्ब्र, मामूली खान पान, सादा, सरल, एक सा स्वभाव एक  
आदम पत्नी, आदम दादी, आदम पड़ोसिन बस्ती की माननीय  
महिला । सन्जन के लिए आंसु बहाती रहती है ।

चौ० मालसिंह





## सज्जन की स्मृति

यह कब की बात है ? सज्जन की स्मृति चालू रखने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है । सज्जन हमारा सबसे छोटा बेटा था । इसलिये हमने उसे पौष्टिक भोजन दिया । कसरत के लिये, खेलने के लिये उत्साहित करते थे हमारा परिवार ऊँचाई में कुछ छोटा है । पर सज्जन छ फुट का हो गया था । हमारे परिवार का पहरेदार था । बस्ती का सजग रखवाला था । सिर में गाँठ हो जाने से और समय पर ओप रेशन न हाने से सज्जन का अतकाल 2 जून, 1991 को होगया हम प्रयत्नशील हैं कि सज्जन की स्मृति स्थिर रहे ।

सूखद, सुन्दर सुडौल सुपात्र, सुयोग्य, सुपठित, सुपुत्र, सुशील ममज्ञदार, सदाचारी सत्यवाशी बस्ती की पढीस की प्रशंसा का पात्र बेटा सज्जन सदायाद रहेगा ।

चन्द्र चले सूरज टले टले जगत व्यवहार ।  
पर बेटे सज्जन की टले न यादगार ॥

( म )

जब तक मेरी लिखाई चलेगी ।  
बेटे सज्जन की बडाई चलेगी ॥

सज्जन की मा कहती है कि बेटे सज्जन का गुण गाने के लिये, वह जीवित और स्वस्थ रहना चाहती है मैं भी यही कहता हूँ कि सज्जन की विशेषताओं को और परिवार के प्रति उसकी लगन को देखते हुए मैं भी गुणगान करूँगा ।

### सर्व गुण सम्पन्न बेटा सज्जन

यह सच है समय घाव भरता है । मन के घाव भी भरता है । पर दो जून 1991 से आज सात महीने हो गये, हमारे घाव भरे नहीं ।

सेक्स के सम्बन्ध में, यानी लडकियों के साथ अपने सम्बन्ध वह बड़े भाई के समान रखता था । परिवार पीपिका सज्जन की मा श्रीमती नारायणी देवी परिवार के पहलवान को खोकर कितनी दुखी है आप कल्पना करें ।

अडोलेस वय की उमर तक वह लगभग अकेला रहा, पर वह सेक्स में दूर रहा । वह साधन सम्पन्न था, फिर भी सेक्स से दूर रहा । ऐसे बेटे को खोकर हम कितने दुखी हैं ।

## मेरे परिवार के सदस्य

- 1 डा विजय कुमार—रीडर पैथोलोजी, मेडिकल कालेज बीकानेर (पुत्र)
- 2 डा सतोष कुमार—रीडर पैथोलोजी, मेडिकल कालेज जोधपुर (पुत्र)
- 3 प्रभात कुमार—टोचर, सरकारी नौकरी मे (पुत्र)
- 4 चौथे बेटे सज्जन का देहावसान हो गया ।
- 5 डा शारदा—विजय की पत्नी ।
- 6 डा कमला—सतोष की पत्नी ।
- 7 अध्यापिका अमृत कौर—प्रभात की पत्नी ।
- 8 नारायणी देवी—मेरी पत्नी ।

मेरे दुख सुख मे शामिल होने वाले व्यक्ति

- 1 डा हनुमानसिंह कस्वा
- 2 परमानन्दजी चौधरी
- 3 चौ पेमारामजी डा कस्वा के पिताजी
- 4 चौ रिक्तारामजी भूत पूर्व प्रधान पचायत समिति नोखा

## मेरे पौत्र एवं पौत्रिया

अजय	पुत्र	डा विजय कुमार
श्वेता	पुत्री	डा विजय कुमार
श्राणीप	पुत्र	डा सताप कुमार
अश्रिता	पुत्री	डा मतोप कुमार
तम्पण	पुत्र	प्रभात कुमार
विक्तांग	पुत्र	प्रभात कुमार

## मेरे सम्बन्धी चौ श्री बलदेवसिंह का परिवार

श्री बलदेवसिंहजी	डा विजय के सुसुर
श्रीमती मोहनीदेवी	धर्मपत्नि बलदेवसिंहजी
श्री राजेद्रसिंह	पुत्र                    "
श्री सुरेद्रसिंह	पुत्र                    "
गोपालसिंह	पुत्र                    "
डा शारदा	धर्मपत्नि डा विजयकुमार
सजीव	पुत्र राजेद्रसिंह
राजीव	पुत्र राजेद्रसिंह
मोहित	पुत्र गोपालसिंह
शिल्पा	पुत्री सुरेद्रसिंह

## मेरे सम्बन्धी कर्नल श्री द्वारकाप्रसाद जी का परिवार

कर्नल श्री द्वारकाप्रसाद जी

श्रीमती चन्द्रकला जी

धर्मपत्नि श्री द्वारकाप्रसाद जी

कैप्टन सुधीर

पुत्र द्वारकाप्रसाद जी

सुशील

पुत्र द्वारकाप्रसाद जी

सुमित

पुत्र द्वारकाप्रसाद जी

श्रीमती गुलोचना

पुत्री द्वारकाप्रसाद जी

श्रीमती सुनीता

पुत्री द्वारकाप्रसाद जी

श्रीमती कमला

धर्मपत्नि डा सतोपकुमार

## मेरे सम्बन्धी श्री सेवासिंह जी का परिवार

श्री सेवासिंहजी

श्रीमती तेजबंदर

धर्मपत्नि सेवासिंहजी

वरणजीतसिंह

पुत्र सेवासिंहजी

जसमीतसिंह

पुत्र सेवासिंहजी

श्रीमती अमतरौर

धर्मपत्नि श्री प्रभात कुमार



## मेरे साढ़ू श्रीकालीरामजी का परिवार

श्री कालीरामजी

रिटावर मेलगाड

श्रीमती गौरीदेवी

घमपलिन कालीरामजी

### पुत्रिया

श्रीमती इन्दु

घर्मपलिन रामचन्द्रजी

श्रीमती सरोज

„ नथमलजी

श्रीमती रानी

„ मलिव' साहब

श्रीमती रजनी

„ डा भागीरथ

### मेरे परिवार के डॉक्टर

डाक्टर प्रकाश ओझा हैं। इनके पिता का नाम है श्री हरि किशनजी ओझा। श्री हरिकिशनजी ओझा प्रगतिशील विचारों के नामपक्षी विचारक हैं।

विद्यार्थी जीवन में जिनके घर पर मैं छुट्टियों में ठहरा करता था। जीवनराम पूनियां, पिता मोहरसिंह पूनिया, गांव जंतपुर मिला चूरु।

रामभूति नथ्यर, बहुत लोकप्रिय व्यक्ति है। पहले मध्यापक थे। उमर 68 वर्ष, पिता का नाम कर्मचन्दजी, बेटे का नाम चन्द्रप्रकाश।

## मेरे पडोसी

सत्यदेवजी सूद	मुनश सूद
वेद प्रकाशजी धीर	भीष्म देव खाना
वाई विमना व मदन मा और बेटा	वचनजी
मुरारी पूनिया बेटा गोपीचन्द्रजी पूनिया का	
हरिरामजी कश्यप	अमरनाथजी कश्यप
शिवलालजी व्यास	अरूण भसीन
राजरानी भसीन	सूरजमलजी शर्मा
मगतमलजी शर्मा	ललित धीर

श्री व शीघर बजाज (एडवोकेट)— किसान राजनीति के करणधार, किसानों के हितों के लिये कानूनों लड़ाई के प्रमुख सनानायक सागरनाथ, रिकनाराम गिरधारीलाल व चुनीलाल इन्दनिया आदि के प्रमुख सहयोगी। आपके तक अकात्य, कानून के जानकार, जाट राजनतिक के प्रमुख स्तम्भ मेवाभावी स्वभाव, बात के घनी मित्रों को तन, मन व धन से मदद करने वाले सफल व्यवसायी है।

शिवरतन डाबा— प्रकाशक एवं मुद्रक सरल स्वभाव सेवा भावी लाभ का लालच गौण अच्छे और सच्चे मित्र, मित्रता निभाने वाले। दूसरों की पीडा को अपनी पीडा समझने वाले है।

श्री अनारामजी मुण्डाम— राजस्थानी साहित्यकार हैं कई पुस्तकों के लेखक व अच्छे अध्यापक रहे हैं इनका पुत्र श्री मेघराज प्रोफेसर है। दूसरे पुत्र का नाम द्वारकाप्रसाद तीसरा श्रीमप्रकाश है।

श्री नवल बीकानेरी—अच्छे कवि एवं विचारक हैं उद्गू गायत्री भी करत हैं। शेर अच्छे कहते हैं।

## सज्जन कुमार के मित्र

विक्रम पुरी

अश्विनो कुमार

करणसिंह

सिरोलिया

विजयकुमार

सीतराम

मोहनजी

सुरेशचन्द भसीन

डा श्री आनन्दप्रकाश दधीच सुयोग एव सुशील  
स्वभाव के धनी ।

डा श्री ब्रह्माराम चौधरी, पशुचिकित्सा एव पशु  
विज्ञान विशेषज्ञ ।

पडौसी— मदन की बहन शारदा

उदरी चौधरी दूधवाला

अशोककुमार पुत्र चुन्नीलालजी माली

श्रीमौतीलालजी दम्माणी— सरलभावे एव अमजीवी इ सान  
अपनी मेहनत एव लगन से बनवने पर मजिल प्राप्त करके अपन  
सडने वित्तोद दम्माणी का सी ए तक पढाकर समाज के शिखर  
तक पहुचकर भी घमण्ड से दूर हैं ।

श्री महद्वबभली— पूर्वे नगर विधायक, राजस्थान मन्त्रिमण्डल  
मे रहकर बीकानेर का प्रतिनिधित्व किया । समाजवादी विचारक,  
प्रगतिशील पुष्प नेता जो सही अर्थो म सक्पूरवादी है । सरल इतने  
कि हरेक मे मित्रवत ध्यवहार । इमानदार और सच्चे समाजवादी  
इ सान । घमण्ड मे दूर ।



श्री लक्ष्मीनारायण नागर-प्रगतिशील विचारों के मेहनत कर  
इमान मजदूरों के हितैषी, पक्के कांग्रेसी इंदरा गांधी के प्रसन्न  
राजनैतिक रुचि रखते हुए व्यवसाय में लगे हैं।

श्री दीपाराम चौधरी-जसरासर गांव से पठना शुरू किया  
आज जलदायक विभाग में जूनियर इंजीनियर हैं गले स्वभाव के  
साथ साथ किसानों के हितैषी है। अभावों को देखा और सहा है।  
दूसरों की भलाई में तत्पर रहने वाले।

जर्नादन कल्ला--शीघ्र स्थान प्राप्त युवा नेता है। पर  
प्रचार से दूर रहते हुए राजनैतिक व सामाजिक अभियान के  
संचालन की अद्भुत शैली का धनी है। बेदाग व बेबाक होकर अपने  
पास आने वाले हर छोटे बड़े व्यक्ति के काम में मददगार बनने का  
शौक रखता है। उदारमना जर्नादन कल्ला ने छात्र जीवन के बाद  
न्यायपालिका में राजनीति में प्रवेश किया। परंतु आगे चल स्वयं  
का किसी पद प्राप्त करने से दूर रह कर राजनैतिक व सामाजिक  
व्यक्तित्व को उभारने में सहयोगी (किंग मेकर) बनने तक स्वयं को  
सीमित रखा।

मजदूरों व्यापारियों व अन्य सभी वर्ग के लोगों के साथ  
मित्रवत मेल मिलाप रखने में अधिक विश्वास रखते हैं। वर्तमान क  
युवा नेताओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं।

श्री भवरलाल व्यास-सामाजिक, राजनैतिक कार्यों में रुचि।  
सहयोग की भावना से भ्रष्ट प्रोत्, सरकारी सेवा में रहते हुए सहयोग  
की प्रबल इच्छा रखते हैं। सच्चे धर्मों में कायशील मानव।

# यह कब की बात है

( भाग पहला )

डॉ सतोष कुमार को प्रेरणा से यह  
पुस्तक तैयार की गई

परिवार पौष्टिका

श्रीमती नारायणीदेवी धर्मपत्नी चौ० मालसिंह  
किताब मालकिन

यह कब की बात है

इतिहास के क्षेत्र में

कब से कम बनता है ।

कम से कम बढ़ता बनती है ।

कम बढ़ता से स्मरण सुधरता है ।

स्मरण सुधार से जीवन सुगम बनता है ।

जीवन सुमता ही सभ्यता और सस्कृति है ।

राजनीति क्षेत्र में

प्राचीनकाल के अशोक महान

मध्यकाल के अकबर महान

वर्तमान काल के नेहरू महान

धार्मिक क्षेत्र में

प्राचीन काल के बुद्ध महान

मध्यकाल के तुलसी महान

वर्तमान काल के गांधी महान

## विद्यालय की खोज में

चुरू जिले की चुरू तहसील में दुधवा धारा रेलवे स्टेशन है। इस स्टेशन से सात किलोमीटर दूर दक्षिण में लोसा गाव है। वहां में 1910 में जमा था। 1918 में थली माहम्मद जी जकात विभाग के धानदार हीकर आये। लोक हितकारी स माजिक आदमी थे। गांव के बच्चा को पढ़ते थे। उनमें से एन में भी था। वर्ष माना सीखनी। बारहपडी मीननी।। एन वती और पहाटे मीन गिये। एकावनी बीस तक में टरजी न सिखाई। मैं स्वय ही सा तक सीख गया। बारहपडी व और स भी माम्टर जी न मिया। आगे की सारी में सीव गया। ऐसा हमारे लड़के नहीं कर पाते थे। नाम लिखना, किनी का पत्र लिखना पत्र पढ़ देना सब करना लगा गाव में मरी बडाई होन लगी। ठाकुरा के ब्राह्मणा के राउत थे। जाटा का बडका में एन ही था। सब जगह मरी बडाई होन लगी। ठाकुर बारह गाव का, मालिक था। उनका घर गढ़ कहलाता था। श्री बच्चे जिस भाग में रहते थे, उस रावला कहते थे। पढ़ ई

म मेरी हागियारी री बाने रावना म पट्टी । ठाकुर व पात्रों पर मरा अच्छा प्रभ व था । वभी-वभी मुचे जीमने क लिये दुहावा जाता था ।

परिस्थिति ऐसी बदनी कि मुझे हा पर हाथ रखना पडा । फिर घाम काटना फिर बानरे की निटिया ताडना फिर कपडा काटना फिर टापी कुतर करना । मरी उमर का बच्चा, खेती क काम भारी काम नती करता था । भोजन का जहा तर सब घ है । पोष्टिक आहार ता दूर रहा पेट भी नया भरता था । भूखे देर मनी जा न म कोई भी तही करता । मुचे करना पडता था ।

मेरे दुग का इमने भी घटा कारण था । पढा म हागियार क कारण मरी जा बढाई होती थी माथिया म, बटा म ठाकुर के गढ और रावने म व म भी व हो गई । एर बात और थी। मास्टर जी जवानी सवाल पूछन रे । म सबका उत्तर देन था । दूसरे लटा चूफ जाने व । मास्टरजी कहा इनकी पीठ पर थप्पड मारो । मैं थप्पड मारता था । थपड पाने बाना म ठाकुर के पोते भी होते । पटाई म हागियार हाना ठाकुर के दच्चो के थप्पड मारना ब्राह्मण प्रणिषा के बच्चा के थप्पड म रना ऐसी बात थी जो गाव म प्रच-रित थी ।

खेती का बान नार पढाई और बडाई दाना का चना जाना, मरे लिए अनहनीय हा गये रे । घी दूध तो दूर की बात थी, छाछ भी नती मिलता थी । मैं भाग कर चुम्बू चना गया । एर बहुत बड़ मेठ के सहा रहा नगा । आनन्द हा गया भर पट भाजन मिलन नगा, घाम और अमरस भी मिलन लगे, काम बहुत आमान था ।

घर की सफाई, झाड़ू निगानना, बाजार से सामान लाना प्रदि  
 आनन्द दायन काम थे। तेठानी शरीर ने भारी थी वह पीठ और  
 पर टागे आदि दबवाती थी। मैं पीठ और परा पर चढ़ जाता  
 था और हिनता चलता था तेठानी गुदा थी।

यह देशावरी सेठ था। कुछ दिन गद पूरा परिवार तनवत  
 चना गया। मुझे बहुत बड़ा कि मैं उनका साथ चला जाऊ। पर  
 मुझे फिर वही पढाई की बात याद आना लगी। पढत समय प्रशमा  
 और बढ ई होगी। पढाई के ब द नौकरी मिलेगी, नौकरी और  
 अपसारी हम लोग एर ही बात मानने थ जानकार लाग मेरा हाथ  
 देसते थे और कहने थे कि यह लडका पिढान बनेगा और अफसर  
 बनगा। जिन-जिन परिवारों म म रहा, उह कहता था कि मैं  
 अफसर बनकर आपसे मिलू गा। अनी माहम्मद जी की बातें,  
 ठानर के रावले की बातें, मरी हथेनी देखने घाना की बतें मेरी  
 अनी कल्पनाए मुझे बहुत प्रेरित करती थी। मरी आगाए आवा-  
 दान बहुत ऊ ती डर गई थी।

मैं निक्ता विद्यालय की खोज म। मया नहीं साधन नहीं,  
 रोटी नहीं पैरा मे पगरखी नहीं, बस पट्टी सी घाती, पटा सा  
 कगीज, राटी क दो सहारे व हनवाई की दुगान पर मकी गढाद  
 साफ करना, शाम का गाय बच्छी का काम करना आदि। चुरु  
 गटान पर मुसाफिरो का सामान डोगा।

राटी कपडा और मकान,  
 सग मे हो विद्या का दान।

मैं निक्ता विद्यालय की खोज म। रतनगढ म विद्यालय थ,

पुनः मध्य पुत्रागण्ट धीर सरदारगण्ट म भी ५, में विद्यालय  
 प्राप्ति व बगिया व निग ध । मुने जयाव मित्रता जाट ता नहीं  
 पत्ता हा तनी है उम पदा की जयरा भी नहीं है गेगी व काम  
 म पदाद की कही जयरा तनी पदवी, जाट व लिए नोतरी करत  
 वा गियाज हा नहा है धीतानर गण्ट म कही भी जाट नहा है ।  
 पान म पुनिग म मित्रित म एर नी जाट तनी है 1941 म  
 सिन्द मुद्र त ममय पत्ता जाट फीज ग भरनी हुआ था वह था  
 महाराम 1922 म मान विम ग ग पत्ता जाट भरती हुआ था वह  
 था मुपराम जी डी रडान त म र धयज त मुपरामजी वा भरती  
 गया ।

मान वप तज विद्यालय की खोज म रह 1926 म सगरिया  
 पट्टा । स्कूल की पीठ पत्र निगा था जाट धयरा गम्बुत वनकिरू-  
 नर मिडिल स्कूल । बानचीन स मालूम हुआ कि धीतानर व रवम्भ  
 मिनिस्टर जी डी रडान की सन्तानुभूति स्कूल के माय है । उमन  
 सरकारी महायत भी अभी मजूर की है । बनीपा वरन व लिए  
 में भी रडान साहब म मिया उहोने घाठ रपया मासिक मरा  
 वजीफ कर गया । परतु 1928 म में जाट स्कूल सगरिया छोड  
 गया । छाडा का काई करण नहीं था । अकम्बे की बात थी रि  
 पगइ छोड । रागे छापी और छाडा छात्रावास जिमम मरे बहत स  
 मित्र हा गए । वस इतना मा कारण था कि कम्पटी ने धी दना बद  
 कर गया था मू ग की दाव, रया मूखा फेलना तग था सयोग का  
 बात थी कि कुछ महीने बाद 1928 म रडान साहब भी बीकानर  
 छाडकर चले गए थे ।

में फिर निबला विद्या और छात्रावास की तलाश मे । हिसार  
 और रोहतक धुनदगहर लखावटी छादि म काम बना नहीं में

राजगड-मादुलपुर पहुँचा सादुलपुर में छोटा सा सरकारी स्कूल था वहाँ पता चला कि मादुलपुर के छात्र दसवीं पास करने के लिए पिनानी जाते हैं। बस, पिनानी ही मेरा घगलाघार तम्बू ठिकाना बना वहाँ लोखनवा नाम का एक बहुत ही सुपेदेय छात्रावास था नाम तो लोखनवा छात्रावास था पर वहाँ के छात्र सब जाट थे। उन भाषा में इस जाट बोर्डिंग कहते थे, उस समय पिनानी में 12वीं वनाम तक का स्कूल था। यहाँ से मैं 1936 में बारह वनाम पास करली।

फिर बीकानेर पहुँचा बीकानेर के छात्र सरकारी महायज्ञ पर छात्रवृत्ति पर, बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में पढ़ने जाते थे। मैं भी वजीफे के लिए सरकार में पहुँचा वजीफा नहीं हुआ।

उस समय रामचन्द्र जी चौधरी मुनसिफ बन गये थे। जाट स्कूल सगरिया के पहले छात्र थे जो सरकारी नौकरी में गए। मैं रामचन्द्र जी के घर बीकानेर में रहने लगा। पर अक्टूबर 1936 में फिर धुन सवार हुई बीए पास करनेकी पढाई की डिग्री नाम के साथ लिली और प्रोली जाएगी। मैं पढ़ा लिखा आदमी बहनाऊंगा मार्गसिंह बीए ऐसा बोला जाएगा। जब मुझे स्कूल मिला गया तो मैं कहने लगा

रोटी कपडा और मकान,  
सग में हो विद्या का दान,  
देख डाला देश तमाम,  
बना न कहीं मेरा काम,



## बहादुरसिंह का कर गुणगान, सचमुच था वह मनुष्य महान

वीर बहादुर भागिया न सन 1917 में सगरिया में जा  
स्नून की स्थापना की। नारा में यह पढ़ना जाट विद्यालय था।  
जून एन 1924 को उनकी मृत्यु हो गई।

### ग्रेजुएट बनने की धुन सवार

मार्तसिंह वी ए ऐसा नाम चाहता हू। नाम मुक्त ही नम  
पढ़ने ही जानकारी मिल जाय कि आठवीं पद वाला स्टटस वाला  
है। स्टटस देन वाली विद्या ही थी। अक्टूबर के महीने में धुन सवार  
हुई। राजस्थान आदि सब जगह विद्यालय भर्ती का काम जुलाई  
में बढ़ हो जाता था। सब कहने लग भर्ती असम्भव है। वी ए  
बनने के लिए निकल भारत भ्रमण के लिए। दि 11 का रमजस  
कालज भरती करने के लिए रागी हो गया। प्रारम्भिक फीस कहा  
स आये। फिर मासिक फीस कहा स आये। छात्रावास की मासिक  
फीस रसाई का भोजन सब असम्भव लग रहा था। पर सब  
बटन धिया पार करली।

रामजस कॉलेज से वी ए बन गया। मज स आनंद हो गया।  
वीकानर के छात्र एन एल वी करने के लिए सरकारी सहायता से  
बनारस लाया करते थे। म भी सरकार में वर्जीफे के लिए पहुंचा  
जवाब मिला जाट के लिए एल एन वी बेकार है। मैं कहा चौधरी  
रामचन्द्रजी एल एल वी की है। जवाब मिला नियम का अपवाद  
है। राजनीतिक दबाव बहुत पडा था सब जटिलता, जाट एम  
एन ए आदि सबन को गिना की थी।

## शिक्षा निदेशक एक अंग्रेज थे

बी ए इग्लिश नाम के एक अंग्रेज शिक्षा निदेशक थे। अंग्रेज माधारणतया उदार मानव होते हैं। कठिनाईयां मुनत ह और सहायता करते हैं उस समय में अंग्रेजी ने ही हमें बताना था बी ए इग्लिश मेरी अंग्रेजी गनी से और व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। बीकानेर के वाल्टर नाबल्स स्कूल WALTER NOBLES SCHOOL में मुझे टीचर बना दिया। 'मालसिंह' नाम मुनकर सब ठाकुर लोग और ठाकुर छात्र मान कर चले कि यह व्यक्ति राजपूत है। यह बात 12 अगस्त 1938 की है।

अक्टूबर के दशहरे पर बीकानेर राज्य के सब ठाकुर भेजे हुए महाराजा गंगासिंह हमेशा और हर साल के समान उनके बीच में आये और बोला सरदारो कोई कठिनाई है। एक सवे में गृजती आवाज आई "अनदाता, पाठा में गधा मिला गया घोड़ो के लात मारता है।" नाबल स्कूल गधा स्कूल बन गई। जाट मास्टर हैं सरदारो के सपूता के थप्पड़ मारता है, लात मारता है। महाराजा गंगासिंह सब सरदारो के नामन घोषणा की कि इग्लिश सहाय आज ही बीकानेर से चले जायेंगे।

जनोखी घटना अमूल्य घटना। एक माना जाना विद्वान अंग्रेज राजकुमार करणीभद्र का टीचर, सीधा रिटन में बुनाया हुआ एक विशेषज्ञ राजपूताना के बीम रजवाडा पर एक ऐजेंट था अबू म रहता था उस समय की व्यस्तता थी प्रत्येक देशी राज्य में प्रधान मंत्री अंग्रेज था। जहाँ प्रधान मंत्री भारतीय था, वहाँ एक अंग्रेज रेजिडेंट रहता था।

मेरे लिए भी हुकम हुआ गया कि बीकानेर राज छोड़ूँ।

समयवात जागा । महाराज को गजाह दी कि यह घटना जार्ज म  
 फन जायगी कि मार राज म एव पा दो जाट ही ता पड लिख है  
 ए ह भी महार ज निरागतता है । मुझे ता रस लिखा । इ गिन साहब  
 का ग मजान का समम दिया, ग महिन य द इ गिन साहब सज्जित  
 शार विनायन मजन दग चल गये ।

पर कठिनाई यह आई कि ऐसा स्कूल देना जाये जहां ठ कुरो  
 प नडके थे छुगरगठ एमा स्कूल था पर कुछ समय बाद टाबुरा वे लडके  
 आ गये । फिर साच विचार क बाद पाया बीकानेर राज की सीमाओं  
 पर जाट ही जमीन के मालिक है सीमाओं पर टाबुर नहीं है । मुझ  
 वहादरा भेज दिया गया जहा मैं छानद स आठ बरस रहा । रडवन  
 साहब का खोला जाट होस्टल भी वहा था । उस समय मिन्नि  
 स्कूला म ग्रेजुएट नहीं थे वही-वही थे, वे हैडमास्टर थ । पर मैं  
 हटमा टर नहीं था । दसवीं, बारह पास हैडमास्टर थ । मैं हैडमा-  
 स्टर बनता तो ओफिस म कुसी पर बठता ठाबुर कोई आता तो वह  
 खडा रहता । उस समय मुखरामजी नाम क एव जाट तहसीलदार  
 म जी डी रडवन न उहे तहसीलदार बनाया था । उह हमेशा  
 ब्रिटिश भारत क बांडर पर रखा ।

ताराच दजी पुनिस अफसर बने, उन्हे बांडर पर डकुआ से  
 भिडाया । मारे गये अनादि काल से लेकर 15 वी गताब्दी तक  
 बाकानेर और हि सार तक के क्षेत्र पर किशा बादशाह ने राज नहा  
 किया । यहा ज ट लोग ग्राम्य गणतंत्रो म रहने थे किसी का किसी  
 पर राज नहीं था । 1465 के आस पास राव बीका ने इस प्रदेश  
 पर राजपूती शासन स्थापन किया ।

### 18 फरवरी 1952

जा खेत किसान ने 1452 म खोया वह खेत किसान को 18

फरवरी 1952 का उस वापिस मिना । इम दिन जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ । जाटो की जा स्थिति बीकानेर म थी यही स्थिति जोधपुर और जयपुर मे थी । 18 फरवरी 1952 को जाट न माचे पर बठना शुरू किया । राजपूत क सामन ज ट जमीन पर बठता था । 1926 म भेरा नाम मालसिंह हुआ पर राजपूत ो सामने मे मरा नाम माना या मालाराम या मानिया बताया करता था 'इया' लगान म या ला लगाने स नाम नघुता वाचक बन जात। हैं । जो स्थिति जाटो की वही अथ परिस्थितियो की थी । हा ब्राह्मणो पर कृपा थी । उनके नाम अग राम नगाया जाना था । यह भी बूढ ब्राह्मणो की बात थी ।

राजपूतो राज्यो क ज टो न सुग की साम ली 18 फरवरी 1952 म आशा बधी 1949 म जब मरदार पटल न जागीर उन्मूलन की घोषणा की । जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा और पटेल द्वारा की कारवाई न राज थानी जिस न का नारकीय जीवन से अपमानित और गरीबी के जीवन स निकाना ।

सन 1500 तक जिस प्रदेश मे जाटो के ग्राम-गणराज्य थे, उस प्रदेश मे 1952 तक यह स्थिति थी । बीकानेर राज्य म 1940 तक कोई जाट सेना में नहीं था । द्वितीय महायुद्ध के 1940 पहला जाट सेना म भरती किया गया 1935 स पहले काइ ज ट पुलिस मे नहीं था, 1927 तक कोई जाट रेवे यू विभाग मे नहीं था । 1934 तक कोई जाट जुडिशियल विभाग मे नहीं था फरवरी 18, 1952 मे शुरू हुआ जाट जीवन, जो स्थिति बीकानेर के जाटो की थी, वैसे ही जयपुर स्टेट और जोधपुर स्टेट के जाटो की थी । जोधपुर स्टेट मे अ प्रेजे प्राइम मिनिस्टर था इसलिए उसने फौज पुलिस म जाटो का पहले विश्व युद्ध म भरती किया । मातहती और अफमरी के

प्रश्न की गुंतागुंती के निर्वहण में अंग्रेज सरकार ने राजाओं की सहायता के बिना प्रयत्न किया था। जंगल का व्यापारिक जापान और जर्मनी द्वारा किया गया था। जपान राज्य में अंग्रेज सरकार को अंग्रेजों के विरुद्ध प्रयत्न करने में जाया था। बहूत भरती किया। महाराजा मनमोहन बाग्यवादी का पढ़ने के लिए अंग्रेजों ने इंग्लैंड भेजा किया। जयपुर भी यह अंग्रेजों की तरह उदारवादी बना रहा। पर, बीरानर का महाराजा गंगासिंह दाहरी नीति पर चलता था। राज्य स्तर पर उदारवादी स्थानीय स्तर पर पूरा, पुराना सामन्तवादी जातिवादी, परानागाही प्रवृत्ति का हानि के कारण, राजपूत भी महाराजा से चले गये।

यहां जातियों की बात आई है। उन समय में साक्षरता का बुद्धि के विनाश के साथ पान के प्रचार, प्रचार रणियों टेलीविजन के साथ, जातियों और स्थानीयता क्षीयता के बंधन डील पड़ने नमाना हा ज ए ग। पर ऐसा हुआ नहीं हो भी नहीं रहा है। गंगासिंहों तक हाग भी नहीं, समाज्य के की स्थापना पर सावा गुणा था कि मोबियत सभ में जतिया भिंट जाएगी, पर ऐसा हुआ नहीं। स्टेन्निक कान के अनुभव सन और प्रमाणन के कारण सोवियत सभ में जातिया दबी रही। ग र्वाचोव की उदारता के और लोकतंत्र के कारण नहा जातीयता और क्षत्रीयता उठ खड़ी हुई हैं। सावियत सभ में एक सौ स ऊपर जतिया हैं। दोना दसों में जातिया के बनने के कारण भिन्न-भिन्न हैं। सावियत सभ में जतिया स्थानीयता और क्षत्रीयता के कारण दनी हैं। भारत में जातिया विजयी और विजित के आधार पर बनी, प्रारम्भिक तायों के आधार पर बनी हैं संस्कार बनवाने हाते हैं। संस्कार और स्वभाव धर्म इतने गहर हो गए हैं कि, छुटकारा पाना कई दशान्दिया की बात बन गई है।

## जातिया और काम घधे

काम घधे भी जातियो से बध गए । वणिया सठ तो व्यापार ही करेगा । सेठ शब्द बना है श्रेष्ठ से । राजपूत न राज बिया है और अब भी पुरानी बातें आशिक रूप से चालू हैं । राजपूत को साम्प्रतीय भाषा में क्षत्रिय कहते हैं । क्षत्र का म लिव । ब्राह्मण तो ब्रह्म की सतान । भगवान की स्वयम्न का स्थान । ब्राह्मण का पडित और महाराज भी कहते हैं । शेष सारे शुद्र हैं अर्थात् क्षुद्र हैं । अर्थात् छोटे हैं, मामूली हैं । महत्वहीन हैं । एक पाचवा वण भी हैं । वह है जाट । यह पाचवा वण है पुराना चार वर्णों म ज ट फिन् नही बठता इससे पाच वण है । ब्रिटिश शासन के कारण और आधुनिकता के कारण घधा का बधन तो ढीला पड गया है पर कारीगर जातिया अब भी घधों स बधी हुई है । कहीं—कहीं अतर्जातीय विवाह हाते हैं पर बहू उस जाति की हो जाती है जिस जाति का पति है बच्चे भी उसी जाति के जिसका पिता है ।

सो जातिया हैं और रहेगी ।

यह है मेरी कहानी और मेरा चिंतन ।





## विश्व इतिहास की रूप रेखा

ई पूव 6000 वर्ष सिंध नदी की घाटी में मनुष्य बसने लग। कच्ची ईंटे बनने लगी थी। भेड़ बकरी का पालन शुरू हुआ। गह और जो की खेती शुरू हुई तांग को पिघला कर बतन बनाने का काम शुरू हुआ।

ई पूव 5000 वर्ष फल के पेड़ उगाए लगे। रुई उगाने लग। मिट्टी के बर्तन, पशुपालन, कहीं-कहीं खेती करने लगे। मिश्र में बस्तिया बसने लगी।

ई पूव 4000 वर्ष कुम्हार के चाक का आविष्कार हुआ सिंधु की घाटी में मनुष्य घाण का आविष्कार हुआ। मिट्टी के बर्तन बनाने की मट्टी बनी तांगे को पिघलाने का काम शुरू हुआ। खेती का काम आगे बढ़ा।

3500 ई वर्ष पूव लिखाई शुरू हुई। कुम्हार का चाक और सुधरा।



3000 ई वर्ष पूर्व वाशा करने लग। पहिये की गाडी बतन  
लगी ।

2850 ई वर्ष पूर्व चीन में सम्य जीवन शुरू हुआ ।

2650 ई वर्ष पूर्व मिश्र में पिरामिड बन ।

2500 ई वर्ष पूर्व मिश्र में गिनती शुरू हुई । चाद से हिमाचल  
रखने का क्लेण्डर बना । गोल चक्कर में 300 डिग्री हाती है, यह  
जानकारी मिली । 60 मिनट का घटा बनाया गया । एक मिनट  
में 60 सेकंड बनाए गए । एक वर्ष में 365 दिन बन मिश्र में कागज  
का प्रयोग होने लगा । चीन में यह निश्चित किया गया कि दिन  
रात कब बराबर होत हैं ।

2000 ई वर्ष पूर्व ग्रीस में सभ्यता का विकास हुआ । भारत  
में धाय लोग बसने लगे वदिक सभ्यता का प्रचार शुरू हुआ रिगवे  
बना ।

1580 ई वर्ष पूर्व क्रीट की सभ्यता गिब्रल्टर पर पहुंची ।

1500 " " ग्रीस की सभ्यता फली फूली ।

1400 " " क्रीट की सभ्यता का पतन हुआ ।

1362 " " मिश्र में विद्रोह हुआ ।

1345 " " मिश्र में अपनी खादे सत्ता फिर प्राप्त की

1027 " " चाऊ वश चायना में शुरू हुआ ।

1013 " " फिलिस्तीन में इजरायल का उदय ।

1000 " " भारत में रामायण महाभारत का समय ।

753 " " रोम की स्थापना

490 " " मग्योन का युद्ध खान ने फारिस को

हरामा यह सत्तार का पहला युद्ध था

483 ई वर्ष पूर्व बुद्ध महाराज की मृत्यु

- 425 ई वर्ष पूर्व इतिहासकार हीरो डोटस की मृत्यु  
 399 " " मुकरात की मृत्यु दंड दिया गया  
 347 " " पलेटो की मृत्यु  
 336 " " अलेक्जेंडर ग्रीस का बादशाह बना  
 334 " " अलेक्जेंडर ने फारिस को जीता  
 332 " " अलेक्जेंडर ने फारिस को फिर हराया  
 326 " " अलेक्जेंडर ने भारत के पुरुष को हराया  
 323 " " अलेक्जेंडर की मृत्यु  
 321 " " भारत में मौखिक आक्रमण की शुरुआत  
 321 " " विद्वान और इतिहासकार एरिस्टोटल की

मृत्यु

10926

- 274 ई वर्ष पूर्व अशोक भारत का सम्राट बना  
 214 " " विश्व प्रसिद्ध चीन की दिवार बनी  
 213 " " चीन का प्राचीन ग्रन्थ जल गय  
 196 " " रोम ने ग्रीस को जीता  
 124 " " नागरिक सेवा की प्रशिक्षण के लिए चीन

में कालिज खुला

55 ई वर्ष पूर्व सीजर ने ब्रिटेन को जीता

46 ई वर्ष पूर्व सीजर ने रोम के बादशाह के, कैलण्डर में अन्तिम सुधार किये क्लेण्डर का नाम क्लियन कैलण्डर है। इस सुधार को पसंद नहीं किया गया।

44 ई वर्ष पूर्व में सीजर को कतल कर दिया।

4 ई वर्ष पूर्व में जीजस काइस्ट का जन्म हुआ।

जानने की बात है कि इसी सन का इससे संबंध नहीं है। इसी पूर्व 4 का दिनांक विवादास्पद है।

इसी सन जनवरी 1 से प्रारम्भ हुआ माना जाता है। उस

दिन रोम नगर की स्थापना हुई थी। राम नगर 1991 वष पुराना है। औद्योगिक क्रान्ति इंग्लैण्ड में शुरू हुई जब पहला मशीन से चलने वाला कारखाना खुला। यह कारखाना 1760 में खुला।

अमरीका में यानि यू एम ए न अंग्रेजा से मुक्ति की घोषणा 1776 में की।

जुलाई 14 1789 में फ्रांस में क्रान्ति हुई।

10 अगस्त 1792 में फ्रांस में वादशाहत हटा दी गई। और दो वष तक अधिनायकवाद रहा।

फ्रांस के लियोन नगर में 1831 में मजदूरों ने हड़ताल की। संसार के इतिहास में पहली कम्यूनिस्ट लीग 1847 से 1852 तक रही।

कम्यूनिस्ट पार्टी का मनीफेस्टा ओबदी कम्यूनिस्ट पार्टी 1848 में प्रकाशित हुआ।

1848 में फ्रांस में फिर क्रान्ति हुई। पेरिस में मजदूरों ने क्रान्ति की। आस्ट्रिया की राजधानी विरना में और जर्मनी की राजधानी बर्लिन में क्रान्तियां हुईं।

1859 में डार्विन की पुस्तक 'आरिजिन ऑफ स्पीसीज' प्रकाशित हुई।

1867 में कैपीटल नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। यह पुस्तक मार्क्स द्वारा लिखी गई। इसी पुस्तक में साम्यवाद नामक विचारधारा का वर्णन है।

### धर्मों की सट्या 1986 में

1	इसाई	—	एक अरब
2	इस्लाम	—	साठ करोड़
3	हिंदु धर्म	—	पचास करोड़
4	बौद्ध	—	छब्बीस करोड़

## ईस्वी 1 से

6 ई सभार में पहली बार चीन ने सिबिल मधिम की परीक्षा शुरू की ।

29 ई क्राइस्ट को ईसा मसी को मृत्यु दंड दिया गया ।

64 ई राम नगर पूरा जल गया ।

70 ई रोम के मन्नाट न यहूदी बस्ती जर्मलम का नष्ट कर डाला । इतिहास में यह पहली घटना है जब धर्म के कारण इतने बड़े नगर को नष्ट किया गया ।

97 ई चीनी सना न फारिस की छाटी व देश को लूटा यह इतनी लम्बी दूरी का पहला हमला है । चीन और फारिस के बीच सैकड़ों किलोमीटर की दूरी है ।

220 ई चीन में गृह युद्ध छिड़ गया ।

320 ई भारत में गुप्तवप का प्रारम्भ । यह दिनांक याद रखना चाहिए । हिन्दुओं का ज्ञान दश में कबल यही गुप्तकाल ही हिन्दुओं का राज हुआ है, अर्थात् महान बौद्ध धर्म । 712 स मुगल-माना हमले शुरू हो गए ।

570 ई मुहम्मद न हजरा जन्म, मुहम्मद साहब न 622 स इसनाम का प्रचार शुरू हुआ ।

बौद्ध धर्म ईस्वी पूर्व में चौथी सदी में शुरू हुआ ईसाई

4 ई पूर्व में क्राइस्ट का जन्म हुआ ।

622 ईस्वी से मुसलमानों में शुरु हुआ । अब चौहथी सदी चल रही है ।

632 ई मोहम्मद साहब की मृत्यु । उनके बाद अजुबकर पहला खलीफा हुआ । मोहम्मद साहब का पहला उत्तराधिकारी हुआ

636 ई मुसलमानों ने इसाई बस्ती जर्मलम ले लिया इति-

गम में घम क कारण हान वाला यह पहला हमला था घम क नाम  
ने हमने मुमनमाना न ही शुरू किए ।

641 ई मुमनमाना ने फारिस ले लिया ।

643 ई मुमनमानों न सिक्न्दरिया ले लिया ।

718 ई मुमनम नो का योरप के निमी देश पर पहला हमला  
यह हमला कोस्टटी नाल पर था, हमला असफन हुआ ।

732 ई मुसलमानो न योरप के देश स्पेन पर हमला किया ।  
इतिहास क अनाये हमला में यह हमला है । सैंबडो फ़िलामीटर का  
समुद्र समसागर को पार करके स्पेन पर हमला बहुत ही अनासी बात  
है । स्पेन एक सनित्र ताकत थी और हमलावर ताकत थी, स्पेन ने  
दक्षिणी पर कब्जा किया, स्पेनी साम्राज्य कायम किया ।

800 ई इतिहास प्रसिद्ध सम्राट चार्ले मेन रोम का सम्राट  
बना यह सम्राट होनी रोमन सम्राट कहलाता था । पवित्र रोमन  
सम्राट ।

814 ई चल मन की मृत्यु ।

827 ई मुमनमाना न इटली के एक राज्य सिसिनी पर  
हमला कर दिया ।

840 ई मुमनमाना ने दक्षिणी इटली पर कब्जा कर लिया ।

868 = विश्व की पहली छठी हुई किताब यह चीन में छपी

982 ई ग्रीनलड नामक नये देश का पता लगा ।

1066 ई फ्रांस के नॉरमंडी का इंग्लड का पर कब्जा यह  
पहली और अंतिम घटना जब इंग्लड पर विदेशी सैन्य कायम  
रहा । हमलो की उ ट फेर में इंग्लड हमेशा मुक्त रहा है ।

1161 ई चीन में पहली बार धातु का प्रयोग हुआ ।

1206 ई चंगेज खा मंगोल लोगो का बादशाह बना, पहला  
बार मध्य एशिया की राधा, भारत में आया था ।

1215 ई. इंग्लैंड की जनता न बादशाह से अधिकार लेलिय पर बादशाह कायम रहा। लोकत्रय 1215 से ही चालू माना जाता है। सारे वैधानिक अधिकार एक सत्ता के पास ही, पर उनका प्रयोग समय-समय पर चुनी गई मरकट द्वारा किया जाय। एसी प्रणाली हमारे यहाँ भी है।

1260 चीन में कुबलेखा का राज कायम हुआ।

1291 स्वीजरलण्ड में सघात्मक शासन कायम हुआ। गामन की सघात्मक प्रणाली यही से चलू हुई। भारत में सघात्मक प्रणाली है।

1338 इंग्लैंड और फ्रांस के बीच में नौ वर्षों युद्ध आरम्भ।

1348 यारप में बाली विमारी अर्थात् विमारिया में काली बामारी पहली है जो दूर दूर के देशों में फैली थी।

1362 अंग्रेजी भाषा पहली बार सारे इंग्लैंड की भाषा मानी गई। आज यह विश्व भाषा है।

1363 तैमूर ने एशिया का जीतन के हमले शुरू किये।

1381 इंग्लैंड में किसानों का विद्रोह। इतिहास में किसानों द्वारा किया गया यह पहला विद्रोह है। मजदूर वर्ग तो अस्तित्व में 1760 में आने लगा। तो कहना चाहिए किसानों का यह विद्रोह समाज का पहला विद्रोह है जो किसी सत्ता विशेष के विरुद्ध किया गया है।

1398 तैमूर ने भारत पर हमला किया। मुसलमानों द्वारा किया जान वाला यह दूसरा हमला था।

1431 जोन ओफब्रॉक नामक महिला को जादूगरनी मानकर समाज के गण्य भाग्य व्यक्तियों के आदेश से मार डाली गयी।

1453 तुर्क लोगों ने पहली बार यारप के नगर बोस्टेटीनोपल पर हमला रोम साम्राज्य के पूर्वी भाग पर तुर्कों का बरक़ा हुआ।

1453 योरप वा सी वर्षीय युद्ध ममाप्त हुआ ।

1455 इंग्लंड म गुलाबी फूरो वा युद्ध ममाप्त हुआ ।

1468 आधुनिक स्पेन की स्थापना हुई ।

1485 इंग्लंड म टूरर काल की स्थापना ।

1492 कानम्बस ने अमेरीका ढुडा छुपी हुई आधी दुनिया  
को लाजा ।

1497 यू फण्ड नाम के देश का पता लगा ।

1498 वास्को डी गामा नामक पट्टा योरप निदासा भारत  
आया ।

1517 मार्टिन लूथर ने इसाई धर्म को सुधारन का मादावत  
शुरू किया । इसाईया की दो शाखाएँ हुई । रोमन कथोलिक और  
मुसलम लोग रिकॉमेशन ।

1521 तुर्क लोग मध्य योरप म भी पहुँचे । उहान मध्य  
योरप म बल ग्रेक नामक प्रसिद्ध नगर पर कब्जा किया ।

1526 भारत की प्रसिद्ध ऐतिहासिक लडाई पाणीपत की  
लडाई जा घ बर न जीती और भारत म मुसलिम राज की नीकाडा

1542 पूर्तगाती लोग जापान पहुँचे आधी पृथ्वी को पार  
किया । 13 हजार किलोमीटर का समुद्री मग पार किया ।

1556 अकबर मुगल सम्राट बन । भारत का दूसरा स्वयं  
मुग शुरू हुआ ।

1558 एनिजावग प्रथम इंग्लैंड की महारानी बनी ।

1577 इतिहास मे पहली बार बिना पीछे मुड़े सीधा चल  
कर अपना स्थान पर आने वाला पहला व्यक्ति था डार्व । तीन वर्ष  
लग । 1577 से 1580 तक तीन वर्ष लगे । राजकन समुद्र से

तीन सप्ताह तक है हवाई जहाज में टहर-ठहर उड़ने में तीन दिन लगते हैं। लगातार उड़ने से कुछ घंटे तक रहने हैं। यह चार सौ घण्टी बर्माई है।

1552 वर्तमान कलेंडर बना। कैलेंडर का पूरा होना में एक सौ वर्ष लग।

1558 सबटा समुद्री जहाजों द्वारा किया गया स्पेनी आक्रमण को डगलस ने हराया। इंग्लैंड का देश है जो विदेशी राज से हमेशा बचा रहा।

1600 ईस्ट इंडिया कम्पनी बनी जिसने भारत पर राज कायम किया और भारत पर स्वर्ण युग होने की नींव पड़ी। भारत एक हुआ और शांति के युग में आगे बढ़ा।

1602 ईस्ट इंडिया कम्पनी की सफलता का देख कर डच लोगों ने भी एक कम्पनी बनाई।

1603 इंग्लैंड और स्काटलैंड दोनों मिलकर एक देश बन गये।

1628 अंग्रेज लॉर्ड ने अपने बादशाह को एक निवेदन पत्र दिया जिसमें उन्होंने अपने राजनीतिक अधिकारों का उल्लेख किया ये अधिकार बादशाह ने स्वीकार कर लिए। ब्रिटिश शासन की शुरुआत में यह बड़ा बदलाव था।

1642 इंग्लैंड में गृह युद्ध शुरू हुआ जो सात वर्षों चला।

1649 में बादशाह को फांसी दी गई और बादशाही हटा दी गई। क्रोमवेल नाम का व्यक्ति पहली बार बादशाह की जगह काम करने लगा। धार्मिक सन्नत बना। असली राज स्पार्लमैंट का था।

1660 ब्रिटेन में ग्यारह वर्षों के बाद बादशाही फिर बनी।



1665 लंदन में महा ज्वर फैली

1666 लंदन का अग्निनांद

1688 इंग्लैंड में महाप्राति गलारियस रिग बृगन जिममें लम्बे सघर्ष के बाद जनता की जीत हुई। अन्तिम डंग न सस ए प्रशासन कायम हुआ।

1696 पीटर दी ग्रेट रुम का जार बना

1721 रोबर्ट व लपोल इंग्लैंड का प्रथम प्रधानमंत्री हुआ

1739 फारिस के नादिरशाह ने दिल्ली का रोघ डाला

1740 फ्रेडरिक दी ग्रेट प्रशा का बादशाह बना

1751 भारत में क्लाइव ने अकटि नामक जिले का लक्षण

1756 योरोप का सप्त वर्षीय युद्ध शुरू हुआ

1757 भारत में अंग्रेजी राज की म्थ पना की नींव पडी। क्लाइव ने बंगाल के नबब को हराया और कम्पनी का प्रशासन कायम किया। रेवेन्यू लेन लगा

1760 भारत में अंग्रेजी कम्पनी ने फ्रांसीसी कम्पनी को हरा दिया।

1776 यू एस ए यानि अमरीका ने अंग्रजा से मुक्त होन की घोषणा की।

1789 फ्रांस में पहली बार फ्रांस में शांतिपूर्ण क्रांति हुई बादशाह हटा, संसदीय सरकार बनी।

1792 फ्रांस एक गणतंत्र बना। पहली बार एक बड़ा देश गणतंत्र बना, ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ही लोकतंत्र हैं। नेपिन ब्रिटन राजतंत्रीय लोकतंत्र है और फ्रांस गणतंत्रीय लोकतंत्र है राजा बिना का राज रिपब्लिक गणतंत्र कहलाता है ब्रिटन गणतंत्र रिपब्लिक नहीं है फ्रांस रिपब्लिक है।

1807 नेपोलियन सारे यारप का शासक बना

1812 नेपोलियन पहली बार हारा, मास्को में।

1815 वाटरलू की लड़ाई में नेपोलियन हारा, पकड़ लिया गया और यारप से बहुत दूर एक हजार किलोमीटर दूर भेज दिया गया। नेपोलियन वाटरलू की हार एक बहावत बन गई है, उसकी वाटरलू का सम्मान करना पड़ सकता है। उसका वाटरलू ही गया।

1833 मजदूरी के हित में पहला कानून बना। यह ब्रिटेन में बना। नाम है फवटरी एक्ट 1833

1837 महारानी विक्टोरिया ब्रिटेन की महारानी बनी, बहुत उम्र में राज किया।

1848 मार्क्स और एंगेल्स ने कम्युनिस्ट मनीफेस्टो नामक डाकूमन्त प्रकाशित किया। यह फ्रंटो ही साम्यवादी दर्शन का आधार ग्रन्थ बन गया।

1851 आस्ट्रेलिया में मान भंडार मिले।

1862 विसमार्क जर्मनी का चांसलर बना।

1865 में दामप्रथा बढ़ गई।

1869 पृथ्वी में अन्न के लिए यारप निवासियों को सैकड़ों किलोमीटर की ऊंची हुई, इससे पहले अफ्रीका के दक्षिणी किनारे के पास में अन्न पड़ता था।

1870 रूसीयाने न मिनकर यह निणय किया कि पोप कभी शक्ति नहीं करता।

1871 दुनिया में पहली बार लड़ा हुआ कि मजदूरों का यह हक है कि वे ट्रेड यूनियन बनाएँ, कानून भी बन गया।

1886 अफ्रीका के ट्रांसवाल में सोना मिला।

1906 रूस में सपद स्थापित हुआ।

1911 चीन में प्रजाति हुई गणतंत्र बना, गणतंत्र बना।

1914 दुनिया के इतिहास में पहली बार विश्व युद्ध हुआ।

1917 रूस में साम्यवाद की स्थापना हुई जावा भारत का  
दार्शनिक शास्त्र लागू हुआ।

1919 फसिस्टव द की इटली में स्थापना।

1920 विद्वत् में पहली बार विश्व संस्था बनी, नाम था ली  
ओफ नेशंस।

1922 इटली में फसिस्टवाद की सरकार बनी।

1923 टर्की में बादशाह हटा, गणतंत्र बना, किसी मुस्लिम  
देश में यह पहला गणतंत्र था, कम तापाना गणतंत्र का नेता था।

1924 दुनिया में पहली बार मजदूर सरकार बनी, यह था  
ब्रिटेन में। इसीलिए ब्रिटेन लोकतंत्र का आदर्श माना जाता है।  
भारतीय नेताओं ने ब्रिटेन से प्रेरणा ली और लोकतंत्र के लिये संघ  
छेडा। भारतीय छात्र ब्रिटेन पढ़ने जाते थे। भारतीय स्कूलों में  
ब्रिटेन का इतिहास पढ़ाया जाता था। ब्रिटेन में हमने आधुनिकता  
सीखी और लोकतंत्र सीखा।

1924 जनवरी 21, 1924 में लेनिन की मृत्यु।

1927 दुनिया में पहली बार योरोप से अमरीका तक हवाई  
जहाज की उड़ान हुई।

1933 हिटलर जर्मनी में प्रथम नमंत्रा बना। दूसरे विश्व युद्ध  
की नींव पड़ी। दूसरा विश्व युद्ध सितम्बर 1939 से 1945 तक  
होता रहा।

1938 दूसरे विश्व युद्ध की तयारी में और सावियत संघ के  
साम्यवाद को जड़ से उखाड़ने के लिए युनिक समझौता किया गया।

इंग्लैंड फ्रांस, जर्मनी और इटली, ये चार देग मिले । ध्यान देने की बात है रूस को नष्ट करने के लिए ब्रिटेन और फ्रांस का लोकतन्त्र मिला इटली और जर्मनी के फासिस्टवाद से । फिर भी साम्यवाद कायम है ।

1939 सितम्बर 3, विद्व युद्ध छिटा दूसरा विश्व युद्ध ध्यान देने की बात है, तीसरा विद्व युद्ध नहीं होगा ।

1941 हिटलर ने समझौता तोड़कर स्टलिन पर हमला किया

1945 अप्रैल 12 को राष्ट्रपति रूज वेट मरान रूज वे ट चार बार राष्ट्रपति बना ।

1945 मुसोलिनी और उसकी मिस्टरस को जनता ने मार डाला । यह 28 अप्रैल की बात है ।

1945 अप्रैल 30, को हिटलर ने अपनी मिस्टरस के साथ रसोई घर में छुपकर आत्म हत्या की ।

1945 मई 8 को जर्मन सेना ने हथियार डाल दिए ।

1945 जून 26 को राष्ट्र सभ के चार्टर पर हस्ताक्षर हुये ।

1946 राष्ट्र सभ की जनरल ससम्बली की मिटिंग यूरोप में अक्टूबर 23 को हुई । ध्यान देने की बात है कि इस पहली मिटिंग का दिनांक कई जगह 24 अक्टूबर भी है । पूर्वी देशों में जैसे चीन जापान में 24 अक्टूबर है और पश्चिमी योरप और अमरीका में 23 अक्टूबर है, पूर्वी देशों में सूरज पहले निकलता है । भारत में आसाम में सूरज बीकानेर की तुलना में एक घंटा पहले निकलता है ।

1947 अगस्त 15 को भारत को आजादी मिली ।

1949 चीन आजाद हुआ ।

1953 74 वर्ष की उमर में स्टलिन मरा । मरने का दिनांक 5 मार्च है ।

- 1953 माघ 29 को एयरस्ट्रक पहलू पर पड़ने न सफल ।  
 1955 अप्रैल 18, आइसलैंड की मृत्यु ।  
 1956 पाकिस्तान न इस्लामिक देश होने की घोषणा की ।  
 1956 कायानगर मित्र का राष्ट्रपति बना ।  
 1956 नामर न स्वयं का राष्ट्रीयकरण किया ।  
 1957 पोलैंड न कम्युनिस्ट सरकार बनी ।  
 1957 भू उपग्रह मावियन मप न छोटा ।  
 1958 अमरीका न भू उपग्रह छोटा ।  
 1959 पिटन न टरो क्यूबा का राष्ट्रपति बना ।  
 1961 भारत न गांधी टामन और हू पूनपाल स छुड़ाए ।  
 1963 प्रेजीडेंट कॅनडी की हत्या ।  
 1964 प्रधानमंत्री नहर की मृत्यु मई 27  
 1964 लुश्चेव हटा ।  
 1964 जनवरी 24, चनिल की मृत्यु ।  
 1968 मच 5 माटिन लूथर किंग की हत्या, प्रति क्रिश्चियानिया ने हत्या की ।  
 1969 जुलाई 21 अमरीकी निव सिधों ने चांद पर पर रये  
 1969 सितम्बर 4 राष्ट्रपति हागीमन की मृत्यु, 79 वष की आयु म ।  
 1970 बरटरह रमन 97 वर्ष के होकर मरे फरवरी 3  
 1970 प्रेजीडेंट नामर 52 वष की आयु म सितम्बर 29 का मर ।  
 1970 फ्रांस का राष्ट्रपति चारलस डिगोल 79 वष की आयु मे मरे ।  
 1971 26 मार्च को शेख मुजीबुर रहमान ने बंगलादेश की आजादी की घोषणा की ।

- 1971 चीन गणद्वसभ का सदस्य बना ।
- 1971 पाकिस्तान न पश्चिम से भारत पर हमला किया ।
- 1971 भारत न बंगला देश को मायता दी ।
- 1973 अफगानिस्तान मे बादशाही खतम हुई । वह गणतन्त्र बना ।
- 1973 इजराइल और मिश्र मे युद्ध छिटा ।
- 1975 आठ बपे के बाद सुएज नहर फिर खुली ।
- 1976 भारत और सोवियत सभ ने मित्रता दोहराई इरान के भूकम्प मे 1000 आदमी मरे भाओ की मृत्यु हुई ।
- 1979 इरान को इस्लामिक गणतन्त्र धापित किया गया ।
- 1980 मई 4 को मार्शल टीटो की मृत्यु-युगोस्लाविया राष्ट्रपति ।

भास्कर-1 नवीं सदी का भारतीय खगोल शास्त्री

भास्कर-2 बारहवीं सदी का गणितज्ञ और खगोल शास्त्री

कोलम्बस-1446-1506 अमरीका ढूँढी 1492 मे फ्रान्स-पूतस-551-449 ई' पूर्व-चीनी सत और दार्शनिक कनफूगसवाद

का सस्थापक दाते-1265-1321 इटली का महान कवि डारविन चारलस 1802-1882 प्राकृतिक छटाई का खोजकर्ता 'दी आरिजिन ओफ स्पेसीज' नामक पुस्तक का लेखक ।

फाहीया-चीन का पहला भारत आन वाली चीनी यात्री ।

चन्द्रगुप्त विजयनादित्य के समय मे आया था ।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल उपनाम "हाथ मे लेंप रखन वाली महिला

अप्रज नस जिसन क्रिमिडान युद्ध मे 1857 मे रात दिन सेवा की ।

गैलिलियो 1564-1642, टेलिस्कोप का आविष्कारक

हुवान साग चीनी तीर्थ यात्री जा मानवी सती म भारत प्राण  
 राजा २ म माहन राय 1828 मे 1835 तक और बा म  
 भी मती प्रथा के विरुद्ध घोषणा किया । वह समाज का सत्य एवं  
 मुमुक्षु-चौहूँवी सदी का भारतीय सर्जन ।

जोत याफ अ क-1442-1431, प्रासीसी वीरगना जिसे  
 मना का प्रेरित किया और फास स अग्रजो को निकाला उम न दुष्-  
 रणो समचा गया और जीती को जला दिया गया ।

कबीर-हिन्दु और मुसलमानों का एक समझने वाला और भक्त  
 कराने वाला कवि ।

कलहन-ग्यारवी सती का इतिहासकार और कवि । 'राज  
 रगिनी' नामक पुस्तक का एक लेखक ।

कौटिल्य-कूटनीति और राजनीति का, और चंद्रगुप्त मौर्य  
 का सन हकार था ।

कुमारिल भेट-आठवी सदी का हिन्दु धर्म का प्रचारक ।  
 कुण्णदेव राय- 1509-1529, दक्षिण भारत में 'विजय नगर'  
 का राजा । दक्षिण भारत का यह अंतिम बड़ा हिन्दू राजा था ।

कमाल अटाटक 1923-1928 आधुनिक तुर्की का निर्माता,  
 1912 म उसने अग्रजो को निकाल दिया । 1922 में ग्रीक लोगों  
 को तुर्की से निकाल दिया 1923 स 1928 तक टर्की का प्रेजिडेंट  
 रहा ।

कक लड जाहन-1167-1216 मगना कर्टा नामक सब-  
 धानिक दस्तावेज उसी के हाथों मजूर हुआ था । कमजोर राजा था  
 ससद के दबाव म अ गया ।

कबीरवेली-इतनी क सोलहवी सदी के अरम्भ का कृतना  
 तिज 'प्रिस' नामक पुस्तक का लेखक 'प्रिस नामक पुस्तक सत्तर म  
 पहली पुस्तक है जो कूटनीति पर लिखी गई ।

मंगोलन-उम पहनी टोली का नेता था जिसने 1519 में पृथ्वी का पहनी बार चक्र लगाया। अटलांटिक महासागर में पैसिफिक महासागर में घान का रास्ता ढूँढा।

मनु-मनु स्मृति का लेखक मनु स्मृति च 4वीं सदी में लिखी गई।  
मार्शल लूथर-1483-1546, ईसाई धर्म की कुरीतियों को दूर करने के प्रयत्न में रिफॉर्मेशन यानी प्राटेस्टेंट धर्म चलाया।

कार्ल मार्क्स-1818-1883, साम्यवाद का संस्थापक  
मैक्समूलर-संस्कृत भाषा की खोज की।

महात्मा गांधी-1869-1948, बृहद् महाराज के बाद महात्मा गांधी नवंबर क्षेत्र में आद्वितीय हुए हैं 30 जनवरी 1948 में उनकी हत्या कर दी गई। किसी कट्टर हिंदुओं ने की, पाकिस्तान को कुछ रुपया देने की बात थी। गांधीजी न बहा रुपया देना चाहिए अरन धर्म का गन प्रतिशत पालन कर्त्ता, अरन धर्मों का शत प्रतिशत अ दर कर्त्ता होने का यह एक और उदाहरण है।

गुरुनानक-1469-1538 सिख धर्म के संस्थापक।

पाणिनी-प्राचीन क. संस्कृत का व्यवस्थापक।

पुत्रकेसिन द्वितीय-1608-1642, दक्षिण में च लूक्य वश सब से शक्तिशाली सम्राट।

रूसो-1512-1678 दो किताबों लिखी जिनकी प्रेरणा से फ्रांस में 1789 की क्रांति और पहले दूसरी क्रांतियां हुईं।

शेक्सपियर-1564-1616, इंग्लैंड का 'सबसे बड़ा' कवि और नाटककार।

शिवाजी-1627 में जन्मे, औरंगजेब बादशाह से लड़ते रहे।

सनयन सेन-1911-12 में चीनी गणराज्य के संस्थापक।



टाडरमन—अक्बर का मानमन्त्री श्रीर नवरत्ना मे से एक नवरत्न ।

तुलसीदास—अक्बर के ममकालीन ।

वगमिहिर—505 587 बटा खगाल शास्त्री विप्रमादित्य के नवरत्ना म से एक ।

राजेश शर्मा—अंतरिक्ष म जाने वाला पहला भारतीय अप्रैल 3 1984 ।

1923 जमैनी मे मजदूरों की पहली हड़ताल ।

1923 ग्रीस मे मजदूरों की पहली हड़ताल ।

1923 बलगैरिया म फैंसि ट विरोधी विद्रोह ।

1923 टर्की को गणतंत्र घोषित किया गया ।

1923 नोर्वे म कम्युनिस्ट पार्टी बनी ।

1924 कानपुर मे कम्युनिस्टो पर बैस चला यह पहली बार का बैस है ।

1924 अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन की स्थापना ।

1920 21, कम्युनिस्ट अध्ययन मंडल भारत मे पहली बार बना ।

1919 प्रगतिशील बादशाह अमीर अमानुल्ला अफगानिस्तान का बादशाह बना ।

1928 सूती कपड़ों के कारखानों म बम्बई मे हड़ताल ।

1928 सोवियत यमन सधि व्यापार और मित्रता की ।

1928 मजदूरों और किसानों की भारत में पहली कानफैरेंस

1939 सितम्बर 3, जमनी ने पोलंड पर हमला विश्व युद्ध छिटा ।

अगस्त 14 1941, अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर हुए ।

सितम्बर 24, 1941, सात्रियत सघ घटलाटिक चाटर म  
गामिल ।

अप्रेल 20, 1942, मास्गे युड ।

दिसम्बर 7, 1941, जागान न USA पर हमला क्रिया ।

जनवरी 1, 1942, Signing of United Nations  
declaration

स्टलिन ग्राड का युड जुलाई 17, 1942, फरवरी 1943

जून 6, 1944, मिय सेना फ्रांस में उतरी ।

दूरदगान भारत में सितम्बर 1959 मे भाया ।

रेडियो भारत में 1927 म आया । 1957 मे रेडियो नाम  
बदल कर आवाशवाणी कर लिया गया ।

सम्पता और संचार की प्रगति-बड़े बड़े स्टेगन ।

35,000 ई पूर्व में मनुष्य आपस म बालन लग ।

22,000 ,, गुफामो म चित्रकारी शुरू हुई ।

4 000 ,, मिट्टी की तस्तरियों पर लिखाई शुरू हुई ।

3,000 ,, मिश्र देश म पूर्वजो के नाम कायम रखने की  
प्रथा शुरू ।

2,000 ,, भारत मे सिंध नदी की घाटी मे लिखाई  
और मोहर ।

18,000 ,, मिथ मे वर्णमाला शुरू हुई ।

1000 ,, ग्रीस म लिखाई शुरू ।

450 ई पूर्व ग्रीस के लोग बहूतर से सदेश भेजने लगे ।

130 ई पूर्व मिश्र के अलेक्जंडरिया मे ससार का पहला  
पुस्तकालय बना ।

## ईस्वी सन्

350 ई तम्बतियों की अगह कितायों म निलार् गुरु ।

600 सबसे पहले चीन म शिठाव छपाई गुरु हुई ।

नाट हाथ की छपाई गुरु हुई । मशीन का प्रग्न ही नही है ।

676 अरब योगा न और फारसी लागान कागज घोरस्वाही  
का प्रयाग शुरु निमा ।

1200 कागज और म्याही योरप पहुँचे ।

1562 इटली मे पहला समाचार पत्र गुरु ।

1594 जमनी मे पहला मगजिन पत्रिका छना ।

1639 यू एस ए धमरीका मे छपन की मगान बनी ।

1642 जोडने की मशीन बनी ।

1835 टेलीग्राफ-तार गुरु हुआ ।

1866 समुद्र पार तार जान लगा ।

1876 टेलीफोन का आविष्कार ।

1947 ट्रांजीस्टर का आविष्कार ।

1957 अक्टूबर 3, पृथ्वी के चारो ओर घूमन वाला उपग्रह  
बना और घूमने लगा । उही नियमा के अनुसार जिन नियमा से  
अंतरिक्ष के अय ग्रह उपग्रह सुरज, चांद, तारे घूमते है ।



# सतयुगी लेखक

## कलासीकल लेखक

- 1 दसप- कथाकार 620-560 ई पूव । इसकी उपदेगात्मक कथायें प्रसिद्ध हैं ।
- 2 अरिस्टोटल- 384-322, यूनानी दार्शनिक
- 3 प्रश्व घोष-प्रथम सदी ईस्वी, बुद्ध चरित का लेखक मरुत का कवि
- 4 वाण-सातवी सदी ईस्वी सस्कृत का लेखक ह्य चरित, कादम्बरी आदि का लेखक ।
- 5 मद्र बाहु-ईस्वी पूर्व चौथी शताब्दी, कल्प सूत्र का लेखक रीति रिवाजों पर एक पुस्तक लिखी ॥
- 6 भैरवी-छठी सदी ईस्वी, स कृत कवि ।।।
- 7 भट्टी-सातवी सदी, स कृत कवि रामकथा लेखक ॥-
- 8 भर्तरी हरी-न तवी सदी, सस्कृत कवि भक्ति शतक ।
- 9 भास-पांचवी सती, मरुत उपमासकार ।

- 10 भवभूति—घाटवी सती, मसृत्त नाटकार ।
- 11 विनहण—बारटवी सदी मसृत्त कवि ।
- 12 एपी क्यूरस—342-270 ई पू, ग्रीक द दर्शनिक ।
- 13 हीरोटाटस—485-425 ईस्वी पू, ग्रीक इतिहासकार दिग्गज पटना इतिहासकार जिसने इतिहास को एक विषय मानकर घटनायें लिखी ।
- 14 होमर—700 ई पू यूनानी कवि और इतिहासकार ।
- 15 जयदेव—12वीं सदी "गीत गोविन्दा का" लेखक ।
- 16 कलहण—12वीं सदी काश्मीर के राजाओं की कथा लिखी ।
- 17 कावीशस—पाचवीं सदी समृत्त का कवि उपय,सगर रघुवंश मेघदूत का लेखक ।
- 18 कौटिल्य—चौथी सदी ई पू चंद्रगुप्त मौर्य का मुख्यमंत्री, राजनीति के दाव पेचो का पहला विद्वान ।
- 19 कुमारदास—छठी सदी जानकी हरण का लेखक ।
- 20 माघ—सातवीं सदी मसृत्त कवि ।
- 21 मनु—2000 दो हजार ई पू मनुस्मृति का लेखक याय शास्त्री ।
- 22 नारायण—12वीं सदी मसृत्त म कथा वाचक, हितोपदेश और पंचतन्त्र का लेखक ।
- 23 पायचन्द्र—14वीं सदी मसृत्त कवि, हमीर महाकाव्य का रचयिता ।
- 24 पाणिनी—चौथी सदी ई पू समृत्त व्याकरण का विद्वान ।
- 25 पानजाल—ई पू दूसरी सदी मसृत्त व्याकरण का विद्वान ।
- 26 पलटो—427-347 ई पू ग्रीक दर्शनिक ।
- 27 सोक्रेटीज—ग्रीक याय शास्त्री ।
- 28 राजशेखर—दसवीं सदी ई पू मसृत्त मजरी का लेखक ।
- 29 सध्याकर—12वीं सदी रामचरित का लेखक ।
- 30 सोमदेव—11वीं सदी मसृत्त कवि ।

- 31 सुबबु—सातवीं सदी संस्कृत कवि ।
- 32 वाङ्मति—प्राचीन सदी संस्कृत कवि ।
- 33 वालमीकि—छठी सदी ई पू रामायण के लेखक ।
- 34 वात्स यायन—पाँचवीं सदी काम सूत्र का लेखक ।
- 35 विद्यापति—1350-1460 एक बड़ा कवि ।
- 36 विष्णुशर्मा—11वीं सदी संस्कृत लेखक ।
- 37 विशाखदत्त—छठी सदी संस्कृत नाटककार ।
- 38 विष्णु शर्मा—संस्कृत लेखक ।
- 37 व्यास— छठी सदी ई पू महाभारत के लेखक ।
- प्रेमचन्द—1880-1937 उपन्यासकार, कहानीकार ।
- पुश्पमित्र— एक मौर्य राजा का ब्राह्मण सेनापति उसने जपन सम्राट को मार दिया और अपनी सुग जाति का राज कायम किया ।
- पाइथागोरस—582-500 ई पू यूनानी दार्शनिक ।
- रामानुज आचार्य—हिन्दू धर्म का उद्धार किया रामभक्ति का प्रचार किया ।
- रामानुजन—1887-1920 बहुत बड़ा गणितज्ञ ।
- रजिया बगम—दिल्ली की एक रानी ।
- रुजवेल्ट चार बार अमरीका का राष्ट्रपति बना समय था 1932-1945
- रूसो—1712-1778 फ्रांस का राजनैतिक दार्शनिक सातल कटरवट विद्वान चलाया जिसकी प्रेरणा से 1789 की क्रांति हुई । मसार के दण गणतंत्र बनने लग ।
- राजा राममोहन राय—का विशेष विचार यह था कि अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में भारत का सब तरह का लाभ होगा देश एक होगा । आधुनिक विद्याभ्यास का प्रचार होगा ।
- समुद्रगुप्त—330-380 इन्होंने म म पहली बार उत्तरी और मध्य भारत एक शासन के नीचे रखा ।

मेवाणियर-1564-1616 कवि घोर नाटककार ।

राजराजाय-जन्म 788 ई.वी. सगर के बड़े विद्वाना घोर शर्मिता  
म । दाही विनेप यात यह थी कि इन्होंने हिंदु धर्म प्रचार क  
बोद्ध धर्म घोर जैन धर्म का विराध किया ।

गिवाजी-1627-1680 मरहटा जन्म जो घोरगजेय क गान्त  
नडता रहा । उसन दगिणी भारत म हिंदु राज्य कायम किया ।

गुरुगावि दसिह-सिराँ का दगवा घोर अतिम गुरुँ जो मुगलोन  
लडता रहा ।

गुवरात-469-399 ई पू घुरीतिपो घोर अ घविस्वासों के विरु  
प्रचार किया । उन जहर देकर मार दिया गया कि वह झूठ सितात है

स्टलिन-1879-1953 स्टेतिन की मृत्यु 5 मार्च 1953 म हुई ।  
स्टीफेनसन-उसन स्टीम से, भाप से चलने वाला इजन बनाया ।  
ब्रिटेन मे पहली म डी 1825 म चली ।

सतमत सेन-1911 मे राजा को हटाकर गणतन्त्र बनाया ।

तानसेन-1506-1589 अकबर के दरवार का गायक एक नवरत्न  
घेरशाह-ग्राड टरक सडक बनायी पहला ब्राण्डाई जिसन भारत म  
सडक बनाई ।

तैमूर-एक कट्टर मुसलमान जो मध्य एशिया से आकर उत्तर भारत  
के बहूत से नगरो को नष्ट किया दिल्ली को नष्ट किया ।

टीटो-युगोस्लाविया का कम्युनिस्ट शासक । मई 4, 1970 मे 87  
वय को उमर मे मरा ।

टोलस्टोप-1828-1910 रूस का बडा नाटककार ।

टोडर मल अकबर का एक नवरत्न पहला प्रशासक जिसन भूमि  
नपवाकर भूमि कर लगाया ।

# भारतीय इतिहास की वर्षावली

## ईस्वी पूर्व

3000-1500, सिंधु घाटी की सभ्यता । यह सभ्यता डेढ़ हजार वर्ष चली ।

567 बुद्ध महाराज का जन्म

483 बुद्ध महाराज का मरण

599 जन धर्म के संस्थापक महावीर का जन्म

483 जन धर्म के संस्थापक महावीर का मरण

327-326 यूनान के यादगाह अलेक्जेंडर का भारत पर हमला । सूतेर निवासी का भारत में जमीन में आने का यह पहला मोका था ।

273-239 अशोक का राज्यकाल

261 अशोक ने युद्ध किया । खेतपात हुआ । अशोक का धर्म

( 45 ) यह सब की बात है/जी० मालसिंह



भारत दृश्य विषय, पश्चात्तर क्रिया । अहिमा परमो धर्म व परम नियम को स्वीकार किया और निभाया इतिहास में यह पहला प्रस-सर था जब किसी बादशाह ने ऐसा प्रण किया हो ।

58 ईस्वी पूर्व में विजयी सयत चालू हूमा सार भारत नई स्वीकार किया ।

## ईस्वी सन्

78 कनिष्क राजा बना

320 गुप्त वंश का राज चालू हूमा भारत का स्वर्णयुग गुरु हूमा ।

405-411 चीनी यात्री फाहीएन भारत में आया । किसी व्यक्ति की इतनी लम्बी यात्रा तब यह पहला मौका था ।

**भारतीय इतिहास की निर्णायक दिनांक**

606-647 हर्षवर्धन का राज

629-645 ह्वेन त्सांग चीनी यात्री की भारत यात्रा

712 किसी मुसलमान का भारत पर पहला हमला ।

1001-1026, महमूद गजनी का गुजरात में सोमनाथ के मंदिर पर हमला । मंदिर तोड़ डाला किसी मुसलमान द्वारा मंदिर तोड़ने का यह पहला मौका था ।

1191 तराई का युद्ध । दिल्ली का सम्राट पृथ्वीराज ने मुहम्मद गौरी को हराया ।

1191 में दिल्ली पहली बार भारत की राजधानी बनी ।

1192 मुहम्मद गौरी अधिक सना लेकर फिर आया । इस बार पृथ्वीराज हार गया ।

1336 इतिहास में पहली बार दक्षिणी भारत में एक साम्राज्य कायम हुआ जिसका नाम था विजय नगर का साम्राज्य

- 1347 दक्षिणी भारत में फिर इस्लामी राज कायम हो गया
- 1398 तमूर लंग ने दिल्ली को साठ पाठ दिया
- 1469 गुरून नर का जन्म हुआ
- 1498 वास्को डी गामा समुद्री मार्ग से भारत आया अफ्रीका का चक्कर किया । मुगल नहर उस समय थी नहीं ।
- 1526 बाबर दिल्ली का बादशाह बना
- 1576 हल्दी घाटी की प्रसिद्ध लड़ाई
- 1600 ईस्ट इंडिया कंपनी बनी । भारत के आधुनिक स्वर्ण युग की और भारत के आधुनिकरण की नींव पड़ी ।
- 1605 अकबर बादशाह की मृत्यु । अकबर 1556 में गद्दी-गार बन था 49 वर्षों तक अकबर ने राज किया । अकबर महान के बाद अकबर महान हुआ ।
- 1627 शिवाजी का जन्म
- 1680 शिवाजी की मृत्यु
- 1707 औरंगजेब की मृत्यु बड़ा भारत फिर छोटा हुआ ।
- 1739 नादिरशाह का हमला, मुगलों की मयूर गद्दी ईरान चली गई ।
- 1757 बंगाल में पलासी का युद्ध स्वर्ण युग की नींव पड़ी
- 1764 बक्सर की लड़ाई, नींव और पक्की हुई ।
- 1793 बंगाल में बिसानो को भूमि स्याई रूप से दी गई । भूमिकर स्थायी कर दिया गया । हर वष जो भूमिकर बदलता था, वह स्थायी हो गया । यह बहुत अच्छा हुआ किसान की देनदारी मुनिश्चित हुई ।
- 1799 टीपू सुल्तान की मृत्यु
- 1799 रणजीतसिंह पंजाब का महाराज बना, लाहौर पहली बार पंजाब की राजधानी बनी ।

1818 चौथी बडाई म मरहटा लोग भाबिरी बार हारे।

1833 राजा राम मोहन राय की मृत्यु

1835 भारत की एकता पक्की और स्थायी हुई। अंग्रेजों का शिक्षा का माध्यम बना दिया गया। अंग्रेजी पढ़ना अनिवार्य हो गया। दूसरे विषयों की पुस्तकें भी अंग्रेजी में हो गईं।

1757 और 1835 स्मरणी है।

1853 भारत में रेल शुरू हुई। भारत का एकीकरण भी पक्का हो गया, तार देने का काम भी शुरू हुआ।

1858 कम्पनी राज खतम हुआ। लॉन की ब्रिटिश सरकार ही भारत सरकार बनी। महारानी विक्टोरिया ने रानी बन ली। यह घोषणा की। विक्टोरिया ने 1858 से 1904 तक राज किया।

1869 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी का जन्म। जनवरी 30 1948 में उन्हें गोली से मारा।

1885 कांग्रेस की स्थापना हुई।

1889 नवम्बर 14 नेहरूजी का जन्म।

1906 मुस्लिम लीग बनी।

1911 दिल्ली राजधानी बनी।

1914-18 पहला सार्वभूमिक युद्ध।

1929 लाहौर के अधिवेशन में, कांग्रेस ने पूरी स्वतंत्रता की घोषणा की। नेहरूजी अध्यक्ष थे।

1942 भारत छोड़ो आंदोलन 9 अगस्त को चालू हुआ।

1947 भारत आजाद हुआ, 15 अगस्त

1948 जनवरी 30, गांधीजी की हत्या हुई।

1950 जनवरी 26, भारत गणतंत्र हुआ।

भारत आजाद हुआ 15 अगस्त, 1947 में।

भारत गणतंत्र हुआ 26 जनवरी, 1950 में।

नाट-पाठक लोग दानों में पत्र सोचें।

( 48 ) यह सब की बात है/ची० मातसिंह

1961 गोम्हा आजाद हुआ ।

नोट - पाठक बतायें किससे आजाद हुआ ।

1962 चीन ने साम्यवादी चीन नहरूजी के भारत पर हमला किया । अक्टूबर 20 को

1965 पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया । पंजाब की तरफ से ।

1966 में ताशकंद सोवियत संघ में मेल हुआ ।

1971 भारत सोवियत संधि अगस्त 9,

1971 भारत-पाक की दूसरी लड़ाई दिसम्बर 3 से 17 तक चीन पाकिस्तान हारा ।

1971 बंगला देने आजाद हुआ । ध्यान रखने की बात है कि यह दूसरी लड़ाई बंगला देश का पाकिस्तान से आजाद कराने के लिए ही थी । 1971 तक बंगला देने पाकिस्तान का भाग था और पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था ।

1974 भारत ने परमाणु परीक्षण किया । भारत एक सु-बलीयर राज्य बन गया ।

1975 भारत ने धार्यभट नामक भू-उपग्रह छोड़ा और इस प्रकार भारत अंतरिक्ष युग में प्रविष्ट हुआ ।

1977 श्रीमती गांधी चुनाव हारी । मुरारजी देसाई प्रधान मंत्री बने मार्च 24 को शपथ ली । नीलम संजीव रेड्डी राष्ट्रपति बने । जुलाई 25 को

नोट - श्रीमती गांधी चुनाव हार गई । जो कांग्रेसी चुनाव जीते उन्होंने मुरारजी देसाई को नेता चुना । मुरारजी देसाई इस प्रकार प्रधान मंत्री बन । इंदिरा गांधी बहुत उदास हुई । इस उदास और हार को देखकर बहुत से कांग्रेसी और भारतीय जनता इंदिरा गांधी

को सहानुभूति दिवाने गये। आखिर वह नहुँजी की लडकी था।  
 और स्त्री थी, 'योगी की जनता की हमदर्दी से इंदिरा गांधी को  
 हिम्मत बधी। उसन नई कांग्रेस बना डाली। तो इस प्रकार से  
 राप्रस हो गई। इंदिरा गांधी न अपनी कांग्रेस का नाम इन्दिरा  
 कांग्रेस रख दिया। नाम हुआ कांग्रेस इंदिरा, कांग्रेस आई। इस  
 प्रकार कांग्रेस बनी।

1984 31, अक्टूबर को श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या।  
 राजीव गांधी प्रधान मंत्री बन, 31 अक्टूबर 1984

1986 श्रीमती इंदिरा गांधी के कातिल को मृत्यु दण्ड मिला

1986 नवम्बर 25 से 28 तक चार दिन सोवियत राष्ट्रपति  
 गार्बाचोव भारत आये।

1987 नवम्बर 20 से 25 तक सोवियत प्रधान मंत्री दिन्ती  
 म ठहरे।

1965 भारत पाक का पहला युद्ध

1969 कांग्रेस दो भागों में बटी

1971 अगस्त 9 को भारत सोवियत संघ के बीच पहली संधि

1971 भारत-पाक दूसरा युद्ध पाकिस्तान हारा

1971 बंगला देश पाकिस्तान से अलग हुआ

1974 भारत ने परमाणु परीक्षण किया

1975 आर्यभट्ट नाम का अंतरिक्ष यान पहली बार भारत ने  
 आकाश में छोड़ा

1977 इंदिरा गांधी पहली बार चुनाव हारी

1977 मुरारजी देसाई प्रधानमंत्री

1978 इंदिरा कांग्रेस-कांग्रेस आई बनी

1980 इंदिरा गांधी फिर सत्ता में आई

1986 नवम्बर 20 से 25 तक सोवियत प्रधानमंत्री भारत  
 में आये।

4 ई वी पूव मे जीजस प्राइस्ट का जन्म हुआ

570 मुहम्मद साहब का जन्म

601 से इस्लाम का उदय शुरू हुआ

622 से मुसलमानी सन शुरू हुआ

1215 म सत्तार मे चौकनत्र यानी ससदीय प्रणाली शुरू हुई

मगना कार्टा नामक कागज पर, दस्तावेज पर अंग्रेज बादशाह न दस्तावर किये ।

1348 योरप म बाली मृत्यु नामक बीमारी फैली

1492 कोलम्बस ने अमरीका ढूँढी

1498 भारत म धान के त्रिए यारप के लागू ने समुद्री मार्ग

ढूँढा ।

1649 अंग्रेजो न पहली और आखिरी बार अवैधानिक कार्य

किया । अपने सम्राट को कत्ल किया ।

1649-1660 पहली और आखिरी बार ब्रिटन एक गणतंत्र

राज्य रहा । राजा की जगह राष्ट्रपति रहा ।

1688-1689 स्वतन्त्रता के त्रिएन म अवैधानिक बाद-

शाहत कायम हुई + आज तक उसी रूप मे कायम है ।

1776 आज का अमरीका यानि यू एस ए अस्तित्व म

आया जुलाई 4 की बात है जुलाई 4 आज भी अमरीका म आजादी का दिवस के नाम से मनाया जाता है ।

1789 अगस्त 27, फ्रांसीसी क्रांति हुई, गणतंत्र कायम हुआ

अर्थात् बादशाह की जगह राष्ट्रपति होगा । समय-समय पर चुनाव से होगा ।

1815 वाटरलू का युद्ध नपोलियन अंतिम रूप से हारा और

यारप के बाहर भेज दिया गया ।

1950 जनवरी 26 को बहुत ही घूमघास से गणतंत्र विना मनाया जाता है। कहना चाहिये भारतमाय जनता 26 जनवरी को मनाया करती है। खुशिया मनाती है, देश में छुट्टी रखी जाती है 80 करोड़ जनता काम काज बंद कर देती है। सरकारी छुट्टी बनानो में छुट्टी।

वस्तु स्थिति यह है कि जनता यह नहीं जानती कि गणतंत्र क्या होता है। गणतंत्र क्या लाभ पहुँचाता है। 14 अगस्त 1947 को क्या हानिया हुई जो 15 अगस्त को दूर हुई।

यह मात्र औपचारिकता का दिवस है जिससे अरबों रूपयों की हानि होती है। 80 करोड़ आदमी उस दिन बेकार हा जाते हैं। काम ठप रहता है इतना ही नहीं, उत्सव मनाए जाते हैं। अरबों पर करोड़ों रूपये खर्च होते हैं।

15 अगस्त मनाओ

26 जनवरी का मनाया जाना बंद करा। अगर मनाया जाता है तो पूछना गणतंत्र होता क्या है।

उस दिन कोई प्रतिबंध हटे थे क्या।

14 अगस्त 1947 को भारतीय के कार्य कलाओं पर कोई प्रतिबंध थे क्या ?

1947 15 अगस्त को भारत आजाद हुआ दिल्ली में भारतीय सरकार बनी।

15 अगस्त का दिन हम आजादी के रूप में हर वर्ष मनाते हैं।

1948 जनवरी 30 के दिन महात्माजी की हत्या की गई। भारत विभाजन के समय किसी हिसाब में निर्णय हुआ था कि पश्चिमि स्थानों को रूपया दिया जायेगा। कुछ भारतीय बहते लगे कि रूपया न दिया जाय। महात्माजी का कहना था कि जो निर्णय हुआ उतना

पानन हो । कम इमी बात पर महात्माजी को बतल कर दिया गया  
 इतन बडे महापुरुष को इन प्रकार और इन मुगमता से मारा गया  
 जसा कि वह देग ट्राही हा । महात्माजी ने देश को स्वतय कराया  
 और महात्माजी को देश ट्रोही मान कर मर डाना । यह तक उन  
 नागा का जिनकी बुद्धि साम्प्रदायिकता से दम जाती है ।

साम्प्रदायिकता से मुक्ति या एक ही माग है, यह है सभभूल-  
 रवाद धर्म निरपेक्षता ।

धर्म को अंधविश्वास मानो । मंदिर जाना छोडो । मस्जिद  
 जाना छोडो । धर्म मानना ही बंद करो ।

धर्म मानना और धर्म निरपेक्ष होना सभव नहो है । मानव  
 महात्मा नही हो सकता । मानव महात्मा गांधी नभी नही बन  
 पाएगा । जहां धर्म होगा वहां कट्टरता हागी । धर्म अंधविश्वास है  
 और अंधविश्वास कट्टरता से मुक्त नही हो सकता । यह जीवन की  
 वास्तविकता है । यह उपदेश काम नही करेगा ।

1526 म मुगल राज कायम हुआ

1556 म अकबर महान बादशाह बना

1600 अंग्रेज कम्पनी बनी जिसने 1757 मे भारत म राज  
 स्थापित किया । स्वर्ण युग शुरू हुआ, भारत एक हुआ ।

1627 शिवाजी का जन्म

1707 औरंगजेब की मृत्यु

1757 पलासी का युद्ध अंग्रेजो ने जीता और अंग्रेज राज  
 गुरु हुआ, भारत एकता का आरम्भ हुआ ।

1835 मे अंग्रेजी भाषा अनिवार्य हुई भारत एकता का अगला  
 बड़ा कदम रखा गया ।

1853 पहली रेल भारत में चली



1869 अक्टूबर 2, महात्माजी जन्मे

1885 काँग्रेस बनी

1889 नेहरूजी जन्मे 14 नवम्बर को

1929 जवाहरलालजी की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ। इस अधिवेशन में यह तय किया गया भारत का पूर्ण रूप से अलग होगा। अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्य से काँटे अलग नहीं रखेगा। अर्थात् वह गणतंत्र बनगा।

गणतंत्र ऐसी राज्य प्रणाली होती है जहाँ राजा नहीं होता राज की जगह अध्यक्ष होता है।

## भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण तिथियाँ

भारत में सभ्यता सिंधु नदी की घाटी में शुरू हुई। उत्तरी भारत या दक्षिणी भारत में नहीं हुई। यह सभ्यता रही 3000 ई पूव से 1500 ई पूव तक।

बुद्ध महाराज का जन्म 567 ई पूव

बुद्ध की मृत्यु 483 ई पूव

महावीर का जन्म 599 ई पूव

महावीर की मृत्यु 487 ई पूव

किसी विदेशी का भारत पर हमला 327 ई पूव में हुआ था यह हमला एक ग्रीक निवासी ने किया था। ग्रीक योरप में है। उन प्राचीन काल में भारत की बातें और भारत की चर्चा योरप में चलती थी। जैसी कि कहावत है कि भारत एक मोने की चिट्ठी है। धन बहुत है सोना बहुत है आक्रमणकारी का नाम था अलेक्जेंडर महान वह भारत में बसने नहीं आया था। सोना देखने आया था। उत्सुकता वश आया था।

इसके बाद सन 1600 में अंग्रेजी व्यापारी कंपनी भारत आई परन्तु इस बीच मध्य पूर्व में यानी पश्चिमी एशिया में छठी सदी में इस्लाम का उदय हुआ। इस्लामी लोगो में घम प्रवार का जाग था। मुसलमानों का पहला हमला 712 में हुआ। दूसरा 1099 में तमूर न किया और गुजरात में सोमनाथ का मंदिर तोड़ा और सोना ले गया नवे समय के बाद 1526 में बाबर न मुगल साम्राज्य की नींव डाली जिसका अरब महान हुआ। 712 के बाद 1026 में सोमनाथ का मंदिर तोड़ा।

1347 में बहमनी राज्य बना।

1398 में दिल्ली को नष्ट किया गया।

## दवाई कब शुरू हुई

आज हम जो कुछ भी देखते हैं वह सदा से नहीं है। मनुष्य सदा से नहीं है, जीव सदा से नहीं है। हरा मादा से नहीं है। पानी सदा से नहीं है। यहाँ तक कि धरती माना भी सदा से नहीं है। ता दवा तो बहुत ही नई है।

तीन हजार वर्ष पहले, दवायें मिश्र देना म बनन लगी।

### सबसे पुराना ग्रथ

दुनिया म सबसे पुराना ग्रथ रिगवेद है। दूसरा पुराना ग्रथ अथर्ववेद है। इन दोनों ग्रथा म दवाइया का जिकर आना है। य बातें दो हजार वर्ष ईस्वी पूर्व की हैं।

दूसरा नवर चीन का है। 450 ई पूर्व म चीन म दवाइया बनने लग गई थी। 450 वर्ष ई पूर्व मे मिश्र म प्याज का बहुत महत्व था। लोग खाते थे और दवा के लिए काम म लेते थे।

( 56 ) यह सब की बात है/डॉ० मोलसिंह

## हिपो क्रेटस

स्वाइयो का ज म दाता हिपा क्रेटस भी इसी समय म था ।

### पदार्थ और दिमाग और जीव

पदार्थ सदा से है । पदार्थ बनाया नहीं गया । जीव सदा स नहीं है । पदार्थ मे से जीव निकला । जीवा का विकास हुआ ।

### द्वन्द्वात्मकता

दो घटनाओ का आपस मे सघर्ष हाता है । इस सघर्ष से गति उत्पन्न होती हैं । गति से विकास होता है ।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और इतिहासिक भौतिकवाद इनका अंतर

द्वन्द्वात्मकता-प्रकृति, समाज और विचार, ये तीनों विकास करते हैं । आगे बढने हैं । प्रकृति विकास करती है । पड-पौधा म एन्ता है और सघर्ष है, प्रतिस्पर्धा है । धूप म सूरज क सामने आन के लिए पड की डालिया आपस म प्रतिस्पर्धा करती है मनुष्य भा आगे प्रगति के लिए होड रखत हैं । द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ग्राम है । समाज प्रकृति दोनों पर लागू है ।

परतु इतिहासिक भौतिकवाद केवल समाज पर लागू है । इतिहास ना यह अर्थ है समाज का इतिहास ।

इन दोनों का अध्ययन और उनका अंतर, मार्क्स और एंगल्स न किया । विज्ञान और विवेक एक तरफ और आदम और प्र ध-विश्वास दूसरी तरफ, सघर्ष आज भी है ।

समान वेतन, मोबियत सघ लनिन और स्टेलिन के समय म 1917 से 1953 तक कायें ती मात्रा और गुण पर ध्यान न देकर

मजदूरा को लाभमग समान या मजदूरी दी जाती थी। तबारा  
 ता प्रारम्भिक जोग या प्रगामनि अनुगामन मा था। पर व  
 म धीरे-धीरे दिनाई आन लगी।

1 याद रखना चाहिए हगारा वैतानिक नान, क्रम बद्ध गुरू हुमा।  
 1859 म चारउस टापिन न पुस्तक 'दी घोराजन आरुत्तानाई'  
 प्रगामित हुई।

2 घाने की मवारी गुरू हुमा म 4350 ई पूव म

3 भेड पानन गुरू हुमा 7200 ई पूव म

4 मुन्नर पालन गुरू हुमा 7000 ई पूव म

5 कुत्ता पानन गुरू हुमा 7700 ई पूव म

6 भेड पानन गुरू हुमा 8050 ई पूव म

7 सेतो चालू हुई 11000 ग्यारह हजार वष पहन

8 चीन म समाजवाद कायम हुमा एव अक्टूबर 1949 म 1958  
 म माओ न समाजवादी स्थापना गुरू की। माओ न 1966  
 म सांस्कृतिक क्रांति गुरू की। भूमि बराउर बाट कर कृषि कर्ता  
 भूमि का समाजीकरण करके, गावो म समाजवाद स्थापित करन  
 की कोशिश की। माओ का समाजवाद और सांस्कृतिक क्रांति  
 1978 तक चली। कहना चाहिए घादेशों द्वारा, जोर जरूरतों  
 द्वारा चलाई गई।

याद रखने की बात है कि निजी सम्पत्ति, निजी व्यापार निजी  
 घर निजी परिवार हमेंगा रहेगे। मनुष्य का पशु का सामूहिक-  
 वरण कभी नहीं होगा।

जन संख्या का वृद्धिकरण हमेंगा चतता रहेगा रोकथाम की  
 कोशिश चलती रहेगी। पुत्र-पुत्रियों की लालसा बनी रहेगी।

अम चितन हो बढाता है । चितन भी चितन को बढाता है ।

6000 छ हजार वर्षे पढ़न योग बने ।

विश्व असीम है सदब है । जीवन बाद कर ह । “मनुष्य दस हजार वर्षों का है”

पहली पुस्तक छपाई शुरू हुई 1471 म

सबसे पहले कपडा बना 4500 वर्षे पढ़ने

मिनाई की मशीन बनी 1882 म

पहले अजार और हथियार बन हथिया से और पत्थरो से

दिसम्बर 17, 1903 म पहली उडान हुई

ऊन और रेशम से कपडे बनन लग

भौतिकवाद का बिगार फ्रांस म अठारवी सदी म चला

- 1 अटम बम्ब अमरीका म 1945 म बनाया
- 2 स्टेलिन ने आदेश दिया कि साबियन रुष का दूसरा स्थान जरूर मिले । हुकम का पालन हुआ । अग व 29, 1949 म रुस न परीक्षण किया ।
- 3 ब्रिटेन न अक्टूबर 2, 1952 म परीक्षण किया
- 4 फ्रांस ने अक्टूबर 13, 1960 म परीक्षण किया
- 5 चीन ने अक्टूबर 16, 1964 मे परीक्षण किया

अमरीका मे राष्ट्रपति को भारत से प्रयत्न किए जाते हैं जिनका सफलता मिली ये हैं ।

- 1 अब्राहम लिंकन 1865 मे मारा गया, राष्ट्रपति का पद चही से शुरू हुआ ।
- 2 जेम्स गारफील्ड 1881 में
- 3 विलियम किन्गली 1901

- 5 प्रतिभागिता भार महयोग एगे इ-इ स्मरना बहन है ।
- 6 यद्म जीव नरी जा मरन, मुड रही होने चाणिए जेनवा म नर  
म्यर 21, 1985 म तय दृषा ।
- 7 पिछटी जातिया के लिए नी-रिया क मग्धण का आणे ताता  
अगस्त 16, 1990 म पिछटी जातिया म महीर है । माग्धण  
बहनान है यादव म्गीर हो जार उगाव है ।

### आधुनिकरण जरूरी

- 1 मध्यकालीन जीवन नली छोटा
- 2 सिर पर चोटी की जगह छोटी सी धोती सी टोपी मर राा
- 3 बुर्का पहनना बन् बगे
- 4 ढाढा मूछ की कटाई हाठा पर क वाला की कटाई
- 5 कुन जातिया 3743
- 6 Classical French Materialist of 18th Century<sup>s</sup>  
Theidological source of Hornas
- 7 रिगवेद सबसे पुराना ग्रन्थ है दुनिया म
- 8 Forced labour is less productar than  
1 Full labour
- 2 Prece of the article to the detimmed of leg  
पश्चिमी एशिया की तरफ देखने वाल मुसलमाना की निगानी है।  
(क) उमर मिर पर पतली सी टोपी होगी जो सिर क बीच  
में उस जगह को घेरगी जहा चोटी होती है । हिन्दु लोग चांगी  
रखत हैं । टापी सफ़द हाती है ।

(ख) अधिकांश मुसलमान बाना को लाल रंग लेते हैं।

(ग) दाढ़ी रखने अपनी दाढ़ी को होठा के नीचे बटा लेते ह।  
चेहर पर पतनी मी रेखा म काट लेते है।

दुनिया के मन्निमडल का नाम है सुरक्षा परिषद। इसमें 15 सदस्य हैं। इनमें पांच देश स्थायी सदस्य है और 10 सदस्य हर दूमर वष चुने जाते है, स्थायी सदस्य है, चीन, फ्रांस, सोवियत मध ब्रिटन और अमरीका यानी सयुक्त राज्य अमरीका।

Social progress is predetermwed Spoulaut on

समाज की प्रगति स्वाभाविक है

रानीबाजार का पहला जनरल स्टोर, रानी बाजार 1968 म खुला था 23 वष हुय।

मार्च, १९९१ मे भारत की जन सख्या

टोटल 843930861

पुरुष 437597929

स्त्रिया 406332932

प्रतिशत वृद्धि 24

स्त्री-पुरुष कितने कितन एक हजार पुरुषा के लिए 929

स्त्रिया हैं। एक हजार लोगों में 71 इकेहतर पुरुष कु आरे रहत ह।  
71 पुरुष के खाली रहन से ही सेक्स अपराध होते हैं विभिन्न प्रकार  
की बिमारिया फैलती हैं जिनमें एक है एड्स Aids स्त्री पुरुष की  
सख्याआ का यह अंतर मे हमेशा से हैं 1981 मे एक हजार स्त्रिया  
के लिए 934 पुरुष थे। ससार की कुल जनसख्या 5 अरब है।

( 61 ) यह कब की बात है/चो० मालसिंह



भारत जनसंख्या 85 करोड़ है पाचवें हिस्से के लगभग भारत में रहते हैं।

## दवाई

तीन हजार वर्ष पहले दवाई मिश्रण बननी शुरू हुई।

## ऋग्वेद

दुनिया में सबसे पुराना ग्रंथ ऋग्वेद है।

दूसरा पुराना ग्रंथ अथर्ववेद है। इन दोनों ग्रंथों में भी दवा-  
का जिक्र आता है इसकी संज्ञा से दो हजार वर्ष पहले के है।

दवाई बनने में दूसरा नम्र चीन का है 450 ई पूव चीन में  
दवाइया बनने लगी थी।

## प्याज

प्याज का प्रयोग मिश्रण में 450 ई पूव में शुरू हुआ। प्याज  
को खाते थे और दवा की तरह काम में लेते थे।

## हिपोक्रैटस

दवाइया का जनक हिपोक्रैटस था जो इसी समय हुआ  
450 ई पू में।

पदार्थ सदा से हैं। पदार्थ बनाया रही गया पदार्थ से जीव  
निम्नता। जीवों का विकास हुआ और हो रहा है। मनुष्य विचार  
कर रहा है और करता रहेगा।

## पश्चिम एशिया और मुसलमान

भारत का मुसलमान हर प्रकार की प्रेरणा और आदेश के

लिए पश्चिम की तरफ ही दखता रहेगा। मक्का, मदीना आदि इनके तीर्थ स्थान हैं। ये अरब देश में हैं।

पश्चिम की तरफ देखने वाले मुसलमानों की पहचान है

- 1 उनके सिर पर छोटी सी, पतली सी टोपी होगी। यह टोपी सारे सिर को नहीं ढकेगी। सिर के ऊपरी और बीच के हिस्से को ढकेगी।
- 2 अधिकांश दाढ़ी रखेंगे और यह दाढ़ी होठों के पास से और चेहरा के दोनों तरफ एक पतली सी थोड़ी सी चौड़ाई वाली रेखा के बाल कटे हुये होंगे।

### विश्व का मंत्री मण्डल

दुनिया के मंत्रीमण्डल को सुरक्षा-परिषद कहते हैं। उसमें 15 सदस्य हैं इनमें पांच सदस्य स्थाई हैं। ये सदस्य ही वास्तविकता घर्ता है ये पांच हैं। साविमत सघ, अमेरीका यानी संयुक्त राज्य अमेरीका, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस। इन पांच में दो महा शक्तियां कहलाती हैं। अंग्रेजी में सुपर पावर। सोवियत सघ और अमेरीका है महा शक्तियां।

### भारत-सोवियत मंत्री संधि

नेहरू ने मित्रता युग की ओर गहरी की। आजादी के बहुत पहले 1927 में नेहरू जी ने पहला दौरा किया। प्रधान मंत्री बनने के बाद जून 7 से 23 तक का 16 दिन का अम्बा दौरा किया जो एक प्रधान मंत्री के लिये निराली चीज थी और है 1971 में 20 वर्ष

की मनी मधि हूट । 1991 म ममता मरीकरण हूटा है । म  
माहता मिन का मीरा 1955 म हूटा या ।

मसार की ५ अरब की जन सरया मे वटे-बड धर्म  
का प्रतिशत है-

1	इगार्ड	33	प्रतिशत
2	मुमलमात	18	'
3	सेक्यूतर वागी	17	'
4	हिंदु	14	'
5	मौड	7	"
6	अनीश्वरवादी	5	"
7	यहूदी जू	04	"
8	सिख	03	"
9	जो	01	'

विश्व समाज की मुख-समृद्धि अनीश्वर वाद पर निर्भर करती  
है । मटिरियलिजम पर भौतिकवाद पर ही ससार की मुख समृद्धि  
शांति निर्भर करती है ।

असतियत पदाथ ह वा तविक्ता पदाथ है । सच्चा दान  
पदाथवाद है ।

पदाथ की पहचान है - पदाथ म वाक्ल भार हाता ह । पदाथ  
जगह घेरता ह । ये वा गुण वा प्रापटी जहा नही पाई जाय त  
समशी बह ह ही नही । ईश्वर में देवताधा में ये गुण नहा पाय  
जाते ह । उनमें मोक्ष भार नही ह । व जगह नही घरने ह ।

अथवा न अभी कम्युनिजम नही छोडा ह । बसूबा वा नेला  
क्यूबा कम्युनिष्ट बना 1962 में फिल्लिपिन्सो ।

## व्यक्तियों के नाम

मुरारजी देसाई 1991 में पचासवें 95 वर्षों के हुए स्वस्थ हैं, बहुत फिरत हैं। कभी डिमर नहीं हुए 1979 में वे प्रतिमान मन्त्रीत्व में हुए थे।

पहला मार्क्सवादी पत्रिकावाच था। उमर पहली कम्युनिस्ट पार्टी स्थापित की, 25 सितम्बर 1883 में, उमर दो दिनांक दिगी। वह पहला मार्क्सवादी लेखक था सत्रार में 3000 तोर हेमर भाषाये हैं 300 वर्षें मायाए हैं।

कुम्हार का काम बना 4000 से पूर्व में

1962 में क्रिदियन समूह में एंट्रान्शन बनी

सात घटे—1 USA, 2 दमलड 3 जर्मनी, 4 फ्रांस, 5 ब्रिटेन, 6 एटनी, 7 कनाडा

नहरू ने राज किया 15 अगस्त, 1947-1964 तक

सोवियत संघ का मध्य एशिया सोवियत संघ के 15 गणतंत्रों में एक गणतंत्र मध्य एशिया है। इसकी अधिकांश आबादी मुसलिम है सोवियत संघ में बहुत योगिता की जि इन मुसलमानों को सज़हर में हटा कर कम्युनिस्ट बनाया जाय। पर तु, आज तक केवल 20 प्रतिशत अनीश्वरवादी ब्रा हैं। 80 प्रतिशत मकरा मदीना जान लग गए हैं। जानन की बात यह है कि कम्युनिज्म के विराध में शिया मुनी एक हा गए हैं। यहाँ तक कि सीमा के क्षणों बढ़ कर रखे हैं।

यह है इस्लाम की बहुतरा और एमता। चाद और तारे का सारा पहराना है जगह-जगह।

हथियारों और सेनाओं की भण्डार हात हुए भा विश्व शांति

टिकाऊ बनी हुई हैं। वही शकामा या वातावरण नहीं है। इस कारण क्या है? इसका रहस्य क्या है? इसका कारण है शीत युद्ध का समाप्त होना। युद्ध समाप्त हुआ 1944 में। शीत युद्ध वर्ष 4 मार्च 1946 में। उस दिन ब्रिटेन के नेता चर्चिल ने प्रस्ताव के फ्रु टोन नामक नगर में भाषण दिया कि युद्ध तो समाप्त हो चुका पर कम्युनिज्म को अभी योरोप में पूर्ण को धकेलना है। मानी पश्चिम योरोप में उसका प्रभाव समाप्त करना है। युद्ध यह शीत युद्ध बर्ष पकड़ता गया। युद्ध की तैयारी में दोनों महाशक्तियों ने सतत का बढ़ाना शुरू किया। अमरीका और पश्चिम योरोप समझते थे कि उनके पास अटम बम्ब है और वे सोवियत संघ को घुटने टिका देंगे। इधर स्टैलिन ने अपने वैज्ञानिकों को हुक्म दिया कि एक महीने के भीतर अटम बम्ब बन जाना चाहिए। और अटम बम्ब बन गया। 1950 से 1958 तक बहुत हथियार बने। पर अमरीका समझता था कि उसके हथियार ज्यादा हैं और गुण में, मार करने में ज्यादा विनाशक है।

समरत व सीमाभ्य से अप्रैल 1985 में गोबर्चिव सोवियत संघ का राष्ट्रपति बन गया। तभी से शांति प्रयत्न चलू हुए।

1962 में हाट लाइन बनी, विश्व युद्ध टालने में HOT LINE हाट लाइन ने बहुत मदद मिली है।

पश्चिम एशिया से प्रेरणा लेने वाले

### मुसलमानों की पहचान

- 1 इनके सिर पर पतली सी हल्की सी, छाटी सी टोपी होगा। यह टोपी सिर के ऊपरी भाग को ढकती है। कान से बहुत ऊपर होती है। सफेद रंग की होती है। कोई कोई दूसरे रंग की होती है।

मधिरांश दाही रखते हैं। हाठा के पास से, बनपट्टी के पतले से भाग पर यह दाही कटी हुई होगी।

राजस्थान में जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ 18 फरवरी 1952 में। भूमिहीन और अधिकार च्युत जातियों को उस दिन काम जिक्र अधिकार मिले।

मसारा के इतिहास में पहली बार सवधानिक अधिकार प्राप्त हुए 15 जून 1215 में। दश था ग्रिटेन।

योरप में जन जागृति पश्चिम एशिया से 1453 में गई। जस नगर से गई उमका नाम था कास्टेटी नोपत। मुसलमानों ने उस पर अधिकार कर लिया। ईसाई वहाँ से भाग कर इटली, यूनान आदि देशों में चले गए।

आज का अमेरिका यानी संयुक्त राज्य अमेरिका अस्तित्व में आया 1783 में।

भारत ने ब्रिटिश सम्राट से सबंध तोड़ने 26 जनवरी 1950 में भारत गणतंत्र बना 26 जनवरी 1950 में

भारत स्वतंत्र हुआ 15 अगस्त, 1947 में

नाट—भारत आजाद होने में और ब्रिटिश सम्राट से सबंध तोड़ने में क्या फर्क है। दोनों घटनाओं में तीन वर्षों का अंतर है।

भारत ने आजाद होने की घोषणा की 1885 में। भारत ने गणतंत्र होने की घोषणा की 1929 में जब नहरू कांग्रेस के अध्यक्ष बन।

स्टैलिन की मृत्यु हुई 5 मार्च 1953 में

पहला भू-उपग्रह पृथ्वी का चक्कर लगाने लगा 4 अक्टूबर 1957 में।

नहरजी ता शीतात हजा 27 मई 1964 में  
 शरित मरे 1965 म । ये पुर विजेता थ ।  
 अफगाणितात गणतंत्र बना 1973 म  
 अमरीका त नागर छुट बी लपारी गुरू जी 1981 म  
 गीन न माशा त विद्वान ताडे 1982 म  
 आतकवादी स्त्रण मन्दि म घुत 1984 में  
 दो दशा व बीच की विद्वत की पहरी लडाई 490 ई पू  
 फारिस और ग्रीस व बीच में हुई ।

मबग पुराना कुरा डेनमाक का है जो 1219 म बना । दू  
 शडा स्वीजर लड का है जा 1339 म बना । मास्टरो द्वारा व से  
 की पढाई गुरू हुई 250 ईस्वी में यूनान म । भाषाये सौगर्द जा  
 थी । भाषा सिगाने के नियम भी अनन लप । पुस्तकानम भी यी  
 बनन लभे ।

बूट जूत बनने गुरू हुए 1629 अमरीका म  
 घूमपान, बीडी, सिगरेट गुरू 1556 मे प्राप्त म । 1558  
 म पूर्नगल के लोग घूमपान करन लगे । 1559 म स्पेन मे जाया ।  
 1565 इ गलड म आया । तम्बाकू ता पौधा कुंठरती तीर स मम  
 रीका म उगता था । 1492 म जेठ अमरीका दूढा गया त  
 अमरीकी तम्बाकू स्वात थे । पीने का, घूम्र के रूप म रिवाज गुरू  
 1550 अमरीका म ।

इतिहास म पहला किसान सघष जमनी म 1526 म गुरुहुण  
 मजदूरा द्वारा पन्ना आंदोलन 1831 मे हुआ यह फ्रास में  
 हुआ । मजदूर सगठन नहीं बना था मजदूरों का पहला सगठन स्था  
 पित 18 मार्च 1871 म फ्रास में । इसका नाम था फरिस कम्यून।

कम्यून से कम्युनिस्ट शब्द बना देरिन कम्यून ने फ्रान में 72 दिन  
बहतर दिन राज किया ।

सत्तार का पहला युद्ध 490 ई. पूर्व में हुआ । यह युद्ध फारिस  
शौर यूनान के बीच हुआ । पहलर की बुन्हाडी मनुष्य का पहला  
मानव निर्मित हथियार था घाब से छ हजार बप गहने मिट्टी के  
चवन बो ।

## पिछड़ी जातिया

कुल पिछड़ी जातियां 1051 हैं । नार्द, घाबी, तेली आदि  
मस्तकारी करने वाली जातियां पिछड़ी जातियां कहलाती हैं । अतीर  
यानी य दव पिछड़ी जातियो म है । यह दूध का घसा वरन चाली  
गणुपानक जाति हैं । यादव लाम ही इन जातियों के नेता है, नीक-  
रिया में स्थान सुरक्षित हैं ।

अनुसूचित जातिया 443 हैं ।

अनुसूचित जन जातियां 426 हैं ।

पिछड़ी जातिया 1051 हैं ।

ये आंकडे 1988 के हैं ।

पहली छपी हुई पुस्तक चीन में सन् 1445 मे प्रकाशित हुई

सोवियत सघ के विघटन से अमरीका को भय दोना म्हाश-  
कितिया में 1946 के माच से 1985 के अप्रैल तक ईष्याँ देता रहा ।  
हथियारो की होड बनी रही । रोकथाम सधिया होने पर भी द्वेष  
बना रग । सोवियत सघ में पद्रह गणराज्यो मे से किसी को भी  
अलग होने की छूट हो गई । बटिक सागर व लीन रिबलिव टन  
गए और राष्ट्र सघ के सदस्य ही गए । अब सोवियत सघ के मध्य



एशिया के 5 मुगनिम गणतन्त्र टलन की बह रह हैं । इतज प्रनयता  
ना चिता है, क्या ? अध्ययन करे ।

## गोर्वाचिव की विजय का रहस्य

समवी नीति —

गोपनीयता त्रम का गढाती ह,

साष्टता त्रम का मिटाती है ।

1985 के नवम्बर में 1990 के नवम्बर तक वह हार का  
अमरीकी राष्ट्रपति से मिला । सिमी बप दो बार भी मिला। स्वागत  
किया और स्वागत कराया । सावजनिक भाषण दिए । जनता का  
प्रभावित किया ।

जैम समाज का विकास हुआ है, और हो रहा है, बस हा  
प्रकृति का विकास हुआ है और हा रहा है ।

दुनिया की 5 अरब की आबादी में 1936 में इसाई व एक  
अरब और 62 करोड़ ।

मनुष्य तो क्या छाटे से छोटा जीव भी सग से नश है । त्रम  
का आरम्भ 6 करोड़ 90 लाख बप पहले हुआ ।



## सम्पर्क सूत्रों का विकास

### ईस्वी पूर्व

35000 भाषा टूटी-फूटी अवस्था में चालू हुई थी ।

22000 रंग करने की प्रथा शुरू हुई ।

2000 सिंधु नदी की घाटी में लागू लिखाई करना, माहुर छाप लगाने का काम जान गए थे । क्षेत्र का नाम है मोहनजोदड़ो और हड़प्पा ।

1800 फारिस में पहली वर्षमाला चालू हुई ।

1000 ग्रीक में वर्षमाला चालू हुई ।

600 लैटिन वर्षमाला चालू हुई ।

450 ग्रीस के लोग सम्देश वाहक के रूप में कबूतर का प्रयोग करने लगे ।

130 संसार की पहली लायब्रेरी बनी । मिश्र देश व अलेक्जेंडरिया नगर में यह पुस्तकालय बना था ।

## ईस्वी

- 350 रिताये चालू हुई, प्लेटों पर दिग्गा वं हुआ ।  
 600 चीन में रिताया की छलाई गुरु हुई ।  
 676 अरब और फारिस व लाग कागज, स्प ही बनन ता ।  
 1200 कागज और स्याही मारण पहुँचे ।  
 1562 टटली म पटा मासिक पत्र छाया ।  
 1594 जमनी म पहना पत्रिका छी ।  
 1639 यू एस ए म यागी अमरीका म छलाई का पहली  
 मशीन बनी ।  
 1835 टेली ग्राफ चालू हुआ ।  
 1866 अमरीका की तार जान लग ।  
 1876 टेलीफोन का आविष्कार हुआ ।  
 1947 ट्राजिस्टर का आविष्कार हुआ ।  
 1951 रगिन फि म बनी ।  
 1957 4 प्रकट्टर पहना भू उपग्रह सीकियुत तथ न छोडा ।  
 1927 भारत न रेडियो चालू किया ।  
 1219 पहला झडा टेनमाक न चालू किया ।  
 1219 स्वीजरलड न भी झडा बागाया  
 1339 प्रतिरक्षा व गिए चीन न पहली दिवार बनाई यह  
 दिवार आज भी कायम है ।  
 1789 विश्व की पहली राज्य प्राति फ़ान में हुई ।  
 1471 छलाई गुरु हुई, विलियम बशटन पहला टापा र  
 नवम्बर 19-21, 1985 शीत युद्ध समाप्त हुआ ।

### शीत युद्ध समाप्त

नवम्बर 19-21 1985, जेनेव म पहली शिखर वार्ता

Wars control he now, Wars must not be fought  
शापनीयता से देह बढ़ाती है,  
स्पष्टता से मदह मिटाती है ।

शापनीयता मन में क्लानो है,

स्पष्टता मन का म्युड बनाती है।

नन टकन का रिवाज 4500 ई पूव में चला ।

मिनादर घस्त और झारिष् वग भारतीय जनता पार्टी को बायें  
पारिणी के मद्रम्य है ।

वैरिम चाटर 19 नवम्बर 1990 दानो महानवितयो न दोस्त  
युद्ध की समाप्ति की घोषणा की ।

प्रयल युष् हुए 21 नवम्बर, 1985 बनवा म सफलता मिनी  
19 नवम्बर, 1990 म ।

तुनमीदास की रामायण, तुनमीदास द्वारा 1557 लिखी में  
यद् । श्रावर बादशाह व समय म

## पदार्थ-मैटर

जो पदार्थ नहीं है वह मिथ्या है। भ्रम है अघविज्ञान है  
पदार्थ की पहचान है -

- 1 पदार्थ जगह घेरता है ।
- 2 उसमें वजन हाता है ।
- 3 पदार्थ की फोटो ली जा सकती है ।
- 4 पदार्थ की नकल डतारी जा सकती है।
- 5 पदार्थ से भावना पैदा होती है ।
- 6 भावना से पदार्थ पैदा नहीं होता पदार्थ को प्रमुख स्थान देना पदार्थवाद कहलाता है । पदार्थवाद की प्रग्रेजी में मटीरियलिज्म कहते हैं ।

सीखो -माक्सवाद के दो भाग हैं सामाजिक व्यवस्था-  
जिनकी अन्तिम व्यवस्था है साम्यवाद-राज्यविहीन समाज यह  
भाग तो सच नहीं निकला । दूसरा भाग है भौतिकवाद यह भी  
निकला अनीश्वर सही हैं ।

( 74 ) यह वचन की बात है/चो० मास्तसिंह

## प्राचीन इतिहास की तिथियां

6000 ई पूव में सिंधु की घाटी में और बलूची स्थान में सब पाषाण युग की वस्तियां मिलीं गीं । पच्छी ईंटी के मकान बनने लग । भेड़, बकरी पालन शुरू हुआ । गहूँ और जौ की खेती होती थी ।

### अन्य चीजों का प्रयोग

1	ताव्रा खनिजा में सबसे पहले ताम्रामिला—इतिहास पूर्व	
2	मोना	इतिहास पूर्व
3	नेहा	”
4	लेड	”
5	हाइड्रोजन	1766
6	नाट्रोन	1772
7	फोस्फोरस	1774
8	सल्फर	इतिहास पूर्व
9	हीन	

- 10 गिर " 1765
- 11 भाप वा दजा वा ग 1892
- 12 डिजन द जन 1937
- 13 जेट द जन 1835
- 14 टनीप्राप 1876
- 15 टेनीफोन 1877
- 16 ग्रामोफोन 1895
- 17 मिनेमा 1952
- 18 रेडियो 1899
- 19 टेपरिकार्डर 1926
- 20 टेलीविजन 1954
- 21 टेलीविजन रणित 1903
- 22 पहली उद्यान 1825
- 23 पहली रेलगाड़ी इ गलेड म चनी 1812
- 24 स्टीम द जन 1885
- 25 पेट्रोल की पहली माटर 1826
- 26 कंमरा 1878
- 27 याहं-गज
- 28 माक्ष की मृत्यु 14 मार्च, 1883 विमार रहने लगे । 65 वर की उमर म ही चले गये ।
- 29 अगस्त ज मे 28 नवम्बर, 1820 म । वे मरे 5 अगस्त, 1892 म । 1884 म उहाने एक पुस्तक प्रकाशित की जिमा नाम है—*Drigin of the family the private property and the State*
- कम्युनिस्ट भनीफस्टो नाम की पुस्तक मावम और अगस्त ने दोनों ने मिलकर लिखी ।

घरती माता की हवा यदि अंतरिक्ष में चली जाय तो हम मर जाए, पर घरती माता इसे बाधे रखती है ।

पिछले 5500, साढ़े पाच हजार वर्षों में कुल युद्ध हुए 14500 जिनमें कुल आदमी मरे 36 अरब 50 करोड़ पिछले दस वर्षों के इतिहास में 292 वर्षों शांति के निकले ।

नोट—मनुष्य पहला हथियार माला था जो लकड़ी का बना था यह माना दो लाख और दो हजार वर्ष पुराना है ।

प्राचीन इतिहास में पाषाण युग और प्राचीन युग अभिव्यक्तियाँ आती हैं जिनकी परिभाषायें हैं—

पाषाण युग—आज से दस लाख वर्ष पहले था ।

प्राचीन युग—46 ईस्वी से लेकर 453 ई तक का था ।

रेडियो प्रसारण भारत में 1927 में शुरू हुआ । 1957 से इस रेडियो का नाम है आकाशवाणी ।

युद्ध न करने की प्रतिज्ञा—1975 में । योरप में 20 देश फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में मिले । उन्होंने युद्ध न करने की प्रतिज्ञा की । यह प्रतिज्ञा फ इनलैक्ट कहलाता है FINAL ACT शांति स्थापना के प्रयत्न 1975 में शुरू हुए । दस वर्षों तक ढीले रहे । 1985 में गोबर्चोव के आगमन के बाद प्रयत्न तेज हुए । नवम्बर 1990 में सफलता मिली । उस वर्ष वह वैदिक मंत्र सफल हुआ जो मोम शांति से शुरू होता है ।

हिंदु लोग हवन करते हैं जिसे वे मोम शांति के मन्त्राचरण से समाप्त करते हैं ।

**इतिहास कब से और कहां से**

इतिहास की जन्म स्थली पश्चिम एशिया और चीन हैं ।

( 77 ) यह सब की बात है/ची० मालसिंह



दूमरी बात यह है कि य स्थान नदिया व मदान है । पानी के स्थान पर बरती नही बस सकती । नील नदी का मदान यानी मिथ देश इतिहास की दृष्टि से पश्चिम एशिया म माना जाता है । दक्षिण फगन और नील ये तीन नदिया इतिहास की ज म स्थलिया है । चीन की हवाग ही नदी है जिसका मदान इतिहास की ज म स्थली है।

सभ्यता की तीसरी ज म स्थली यूनान है । यूनान पश्चिम एशिया का पडोसी है । अग्रेजी म यूनान को ग्रीस कहत है । पलटो और सुक्रात यूनान निवासी थ । ये दोना व्यक्ति विद्याओं के ज म ता मान जात है । खेल का प्रारम्भ यूनान म हुआ। ओलिम्पिया नामक नगर म 776 ई पूर्व से थोडा रेकाड मिलता है। परतु इनका प्रारम्भ 1370 ई पूर्व का है । 393 ईस्वी व बाद का रेकाड नही मिलता है । योग्य व्यवस्था के न होने व कारण खेल बढ हा गय । प्राचीन काल म सभ्यताका का पतन हाता रहना था ।

ये खेल ग्रीस की राजधानी एथस म 1896 म फिर गुरू हुए।

पानो-घुड सवारा का खेल है । थोटा प्रशिक्षित और सवार प्रशिक्षित हान पर ही ये खेल होता है । 525 ईस्वी व खेलो का रेकाड मिलता है ।

इतिहास की पहली लढाई 490 ई पूर्व म लढी गई । ग्रीस फारिस नामक दो देश के बीच लढी गई ।

राजस्थान बना 17 मई 1949 म । उनीस राज्यों को मिला सरकार पटल ने राजस्थान बनाया । सामकवाद से जनता को उस दिन मुक्ति मिली ।

सोत युद्ध गुरू हुआ 4 मार्च 1946 म । इसी दिन महावरण छादरन बटन नामक गन्दावनी का प्रारम्भ हुआ सबसे प्राचीन पुस्तक 704 ईस्वी पूर्व की है । दक्षिण कारिया के एक मंदिर म ये पुस्तक

( 78 ) यह कव की बात है/चौ० मातामिह

मिली। गोरिया चीन में है। पूर्वी चीन में महासागर के किनारे परहे

बुद्ध पूर्णिमा—एक बहुत ही महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व इति-  
हासिक और सांस्कृतिक दानों महत्व रखता है। बुद्ध महाराज  
इतिहास का व्यक्ति है जो 400 ई. पूर्व के अक्स-पास था।

रामनवमी—यह पर्व केवल सांस्कृतिक है। राम का जन्म उस  
दिन का माना जाता है। पर वह वर्ष कौनसा था पता नहीं। साथ  
ही राम का जन्म—मरण का कौनसा था पता नहीं। कोई इतिहा-  
सिक आधार नहीं है।

आर्यों का आगमन 1500 ई. पूर्व में हुआ। वे पंजाब में वन  
रिग्वेद की रचना 1500 ई. पूर्व के बाद किसी समय हुई। पंजाब  
में हुई। 1000 ई. पूर्व तक आर्य लोग गंगा की घाटी में पहुँच गए  
थे। ब्राह्मण ग्रंथों की रचना गंगा की घाटी में हुई। 900 ई. पूर्व  
में महाभारत युद्ध हुआ 800 ई. पूर्व में आर्य लोग बंगाल पहुँचे।  
महाभारत ग्रंथों की रचना 800 ई. पूर्व के आस पास हुई। रामायण  
नाल भी यानी वाँ मकी कान भी यही शुरू हैं। 350 ई. पूर्व में  
उपनिषद् ग्रंथ बने।

544 ई. पूर्व में बुद्ध महाराज की मृत्यु हुई।

सेक्युलरवाद एक मुस्लिम देश में शुरू हुआ। टर्की के प्रशासक  
कमालपाशा ने 1923 में शुरू किया। इसके बाद मिश्र देशों के  
प्रशासक नानिर ने सेक्युलरवादी की घोषणा की 1984 में।

केवल सात किलोमीटर की ऊँचाई तक हवा है। तो हवा  
सीमित है। सात किलोमीटर से अधिक ऊँचाई तक हवा चली गई  
तो जीवन समाप्त हो जाएगा। पर ऐसा होगा नहीं, क्या नहीं होगा  
इसी किताब में कहीं दूसरे पृष्ठ पर उत्तर दूँगे।

शांति के प्रयत्न शुरू हुए जेनेवा में 19-21 नवम्बर 1985

में। तन ढरने ता रिवाज शुरू हुआ 4500 ई पूव म।

प्रकृति और समाज को समझने की विद्या ढूँढी गई 1859 म। डारविन न यह साज की। प्रकृति का विकास हान स बीन बन। जीवों का विकास होन स मनुष्य बना। मनुष्य का विकास होन से विचारों का विकास हुआ। विद्या के विकास से आवा-गमन के विकास से मनुष्य एक मानव समान बना रह है।

विश्व विजयी होने की अभिजापा रखन वाले हिटलर ने फ्रां रसाई घर म अपनी प्रेमिका के साथ आत्महत्या की 9 मई 1945 म। यह इसलिए हुआ कि उसने स्टेलिन को धोखा दार, सोवियत सघ पर हमला कर दिया।

दुनिया म 165 देश हैं। राष्ट्र सघ के सदस्य 160 देश हैं।

### दुनिया के सात बड़े देश हैं

- 1 मध्यत राज्य अमरीका
- 2 जापन
- 3 जर्मनी
- 4 फ्रांस
- 5 इंगनी
- 6 कनाडा
- 7 ब्रिटेन

इह घनी देशों का क्लब कहने हैं। ये औद्योगिक देश हैं। ऊँची कारीगरी-टेक्नोलोजी इनक पास है। सोवियत सघ बड़ा देश है। सब तरह का जलवायु है। सब तरह की वनस्पति है। बहुत बार वर्षा की कमी हो जाती है। तीन युद्ध की समाप्ती पर सारियत सघ का यह लाभ हुआ है कि पश्चिमी योरप और अमरीका उसी मदद कर दत हैं।

5500 वर्षों म कुल युद्ध हुए। 4500 पाँच हजार पास ती वर्षों मे कुल युद्ध हुए चौदह हजार और पाँच ती। इनम मनुष्य 36 अरब 50 करोड 10 हजार दस हजार वर्षों के इतिहास में 292 वर्ष शांति क निकले। सबसे पहने ढकड़ी का माला या यह माला दा सास दो हजार वर्ष पुराना है।

## युग

पाषाण युग आज तक दस साल तक पहले था। धातु युग, कांस्य, लोहा युग 46 ई.पू. से 453 ई. तक था।

## समाज का प्रारम्भ

- 1 जनजातिवाद—ट्राइबलिज्म
- 2 सामंतवाद प्यूब्लिज्म
- 3 पूजावाद—कैपिटलिज्म
- 4 मदानतावाद—इंग्लीटरियनिज्म
- 5 राज्यधित्वात्मक समाज

रामायण एक कथानी है। इतिहास नहीं है। उमर मन सबत नहीं है। राम एक कथा का नायक है। नीलडरो होरा है।

महाभारत एक कथा है। अर्जुन, भीम आदि कथा के नायक हैं। लाला लाजपत राम की मृत्यु पुलिस की गोली से 1929 में हुई थी।

भारत में जातियाँ 3743 हैं।

भौतिकवादों विचार—मटेरियलिज्म कासीसी विचारको न प्रसारणी सदी में मानव के सामने रखा।

किसी वस्तु की कीमत बाजार में ही तय हो सकती है समाज का प्रगति स्वाभाविक है। प्रकृति का भी विकास हुआ है। निर्जीव प्रकृति में से सजीव प्रकृति निकली। सजीव प्रकृति में से मनुष्य बना

दुनिया का मध्यम इल सन नाम सुरक्षा परिषद है। इसके 15 सदस्य हैं।

विश्व समाज तो तीन भागों में बाँट रखा है। दोनो महाशक्तिशाली पहली दुनिया है।

सात औद्योगिक देश दुमरी दुनिया है जबकी 150 देश तीसरी दुनिया है।

मटकों पर चलते मुगलमानों को धान दता मसन है कि र  
मुगलमान है। क्या पहचान उमरी।

मेल चालू हुए इरान देश मे 776 ई पूव मे। स्थान प्र-  
भिया था। 394 ईस्वी तक चालू रह।

राजस्थान नहर का उदघाटन हुआ अक्टूबर 1927 में।  
मनार में भ पाये हैं 3500 तीन हजार पांच ती। गति का का  
क्रम गोवर्धिन 7 शुरू किया 15 जनवरी 1986 में।

भारत में छापाखाना शुरू हुआ 1556 में।

स्टीम इंजन बना 1712 में।

1986 में ईसाई धर्म को मानने वालों की संख्या थी। एक  
अरब आसठ करोड़।

जीवन का आरम्भ हुआ 6 करोड़ 93 लाख वर्ष पहले।

सबसे पहला विश्व विद्यालय 859 ईस्वी में मास्को में,  
अमरीका में खुला।

सबसे पुरानी सभ्यता इराक नाम के देश में शुरू। इराक  
पश्चिम एशिया में है। आज कल पश्चिम एशिया इस्लामी धर्म है।  
मक्का मदीना पश्चिम में है। ये बातें 3500 वर्ष ई पूव के अरब-  
पास की है। उस समय नगर राज्य होते थे। एक दूसरे पर हमला  
करना उनका साधारण काम माना जाता था। राज्य नदियों के  
किनारे हात थे। पश्चिम एशिया की नदिया हैं दजल फरात और  
नील सभ्यता का आरम्भ इही नदिया के मैदान थे। दूसरा नहर  
चीन का हैं। हवांग ही नदी के किनारे बस्तियां बसी। पहिए की  
गाड़ी यही बनी। पहिया ही कारीगरी टेक्नोलोजी का आरम्भ है।  
घोड़े की सवारी यही शुरू हुई। लोहे का प्रयोग, तांबे का प्रयोग  
मही से और इसी समय से शुरू हुआ।

मिट्टी की पत्तियों पर बिगड़े हुए छुई मिट्टी के बनन भाग में  
पत्तों के बनाने से ।

## विश्व इतिहास में शांति का भावना पदा हुई

गौतम बुद्ध के समय के 567 ई पूव में जब गौतम जन्मे थे ।  
गौतम बुद्ध ने शांति का प्रचार सामान्य स्तर किया । बिहार को  
प्रथम किया । राज्य स्तर पर अशोक महान ने शांति की नीति प्रप-  
नार्द । प्रचार किया । उन्होंने एक युद्ध रखा । मनुष्यों की मृत्यु से  
प्रथम वित्त हुए । दया भावना जाग उठी । हृदय विघल गया दुःख दुःखा  
सहाई पर पदच ताप किया । प्रथम किया कि अन्न लहू गा नहीं इतना  
ही, उन्होंने शांति का प्रचार किया । सम्राज स्तर पर महाराज गौतम  
बुद्ध और राज्य स्तर पर सम्राट अशोक भारत भूमि के अमर व्यक्ति  
हैं ।

## हिन्दुओं का पहला और अंतिम साम्राज्य

भारत के इतिहास का एक छोटा सा काल रहा है । यह गुप्त  
काल है । सातवीं सदी के पूर्व पांच दशक । हर्षवर्धन उम काल  
का सबसे बड़ा प्रतापशाली सम्राट रहा है । वह बौद्ध था । उमर का  
समय था 606 ई से 647 ईस्वी तक ।

## 712 ईस्वी

मुसलमानों का पहला आक्रमण 712 ईस्वी में तुर्क आक्रमण  
कारी जीता थापिस बना गया ।

भारत की राजधानी बहना चाहिए आधुनिक भारत की राज  
धानी दिल्ली, 1911 स्थापित हुई । ब्रिटिश शासन के स्थापना सान  
से 1757 से 1911 तक कलकत्ता राजधानी रहा । 1911 में  
दिल्ली राजधानी हुई ।

एक बार पहले भी मध्य युग म 1119 म त्तिना राजधानी बनी । पृथ्वीराज चौहान दिल्ली का पहला बाग्याह बना ।

## दक्षिणी भारत पहली बार

भारत के इतिहास म दक्षिणी भारत पहली बार भारत का भाग बना । विजय नगर साम्राज्य मे दक्षिणी भारत को 13०6 म मिलाया गया ।

परन्तु ग्यारह वष बाद ही 1347 म वहा इस्लामी गज कायम हुआ । दिल्ली पर पहला इस्लामी हमला 1398 मे हुआ । तमूर न किया था 1469 म गुरु नानक का जन्म हुआ ।

पहला योरप निवासी यानी पहला ईसाई भारत मे 1498 म आया । समुद्र से आन वाला वह पहला व्यक्ति था ।

मई 1886 म मजदूर दिवस पहली बार मनाया गया 1469 गुरु नानक का जन्म । सिक्ख धर्म का आरम्भ पद्मवी मदी के धर्म से शुरू हुआ । यानी 1500 से आग पीछे । सबसे नया धर्म यही है ।

## गोर्बाचिव से पहले शांति के प्रयत्न

1971 म फिनलंड की राजधानी हेलसिंकी में योरप व देशों की पहली सभा हुई । इसी नगर म 1975 मे दूसरी सभा हुई ।

## अप्रैल 1985

यहा से शांति प्रयत्न—शुरू होते हैं । इतिहास म पहला बार 21 नवम्बर 1985 मे शिखर सम्मेलन हुआ । 21 नवम्बर का यह 1985 का यह प्रथम सम्मेलन जेनेवा मे हुआ । उसके बाद गोर्बाचिव की कोशिगा से शिखर सम्मेलन हर वष होता ह । यही कारण है कि आणविक हथियार तिलमिला कर रह जाते ह । डेर बढ़ता जाता है पर उनके निकलन की हिम्मत नहीं ।

1526 मे 1707 इस्लामी शासन

1757 स 15 अगस्त 1947 तक ब्रिटिश शासन

प्राचीन काल का अशोक महान

मध्यकाल का अकबर महान

आधुनिक काल का नेहरू महान

अध्यात्मवाद और जगतवाद का सवमाय शिरोमणि गांधी महान

मध्यकाल का सेवयूलरवादी अकबर महान उनजन मे पडा कि वह कौनसा धम मान । सोच विचार के बाद अकबर न नमाज पढनी बद कर गी । यह हिम्मत की बात थी । नहरू क लिए सेवयू वादी कोई कठिनाई नही थी । नहरू तो अनीश्वरवादी था । पर अकबर के समय उस ढग का अनीश्वरवादी होन क प्रश्न ही कहा था । आज विान का, विद्या का, नान और जानकारी का युग ह पर उस समय विान कहा था, भौतिकवाद कहा था सगी अस्तिक ये । अस्ता छोडन की बात ही रहा थी । एसा था अकबर महान । कुदरती सेवयूलरवादी, परिस्थिति बदा सेवयूलरवादी ।

1835 में अंग्रेजी भाषा का प्रवेश, भारत की एकता का प्रवेश राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक का प्रवेश । आधुनिक विद्याओं का केंद्र, समस्त भारतीयों के एक स्थान पर मिलने का केंद्र कल-कत्ता हो गया । राजस्थान के व्यापारी हजारों किलोमीटर कलकत्ते बसने लगे । वहा से धन कमाकर राजस्थानी लोग सेट श्रेष्ठ बन गए हुए, तालाब खुदवाने लगे, धमशालाएँ बनी, स्कूल बने । पहली बार सेना को जन सेना बनाया गया । सब जातियों के लोग सेना में भर्ती होने लगे, पुलिस बनी, प्रबंध हुआ, पुलिस नाम की कोई सस्या नही थी ।

1985 के अंत में गोर्बाचेव कहना शुरू किया ।

( 85 ) यह कब की बात है/चौ० भालसिंह



'आप कहते हैं कि आप छात्रमणवारी को कुचल देंगे। आपसे पास हथियार बहुत है। तो फिर हथियार दिखाते क्यों नहीं यह पाखण्ड है, विरोधभाष है। शेली मारना, गोरब कत्तार उक्तव्य देना कि हमारे पास हथियार हैं, कुचल देंगे। तो फिर दिखा दो। हम मान लेंगे कि आप हम कुचल देंगे तो आओ, हम गिखन हैं आओ देनी। यह आमंत्रण गोरबचिव म 21 नवम्बर 1983 को पहले गिखर सम्मेलन में जेनवा में दिया।

वस, इस स्पष्टता की जरूरत थी और शक्ति बाते गिखर सम्मेलनों में शुरू हुई।

यह मात्र दैनिक जीवन के लिए भी है। सब कुछ सामने कर और सामने कहा। मार्टिन लूथर किंग 1483-1546 घन सुधार का बेकन 1561-1626 प्रकृति विज्ञानी, इतिहासकार भौतिक वातावरण का जन्मदाता।

तुलसीदास ने रामायण नाम के महाकाव्य की रचना का अन्तर्गत के समय में सोलहवीं सदी में।

### भारत के वैज्ञानिक

भाषकर प्रथम— ज्योतिष शास्त्री नवीं सदी ईस्वी में।

भाषकर द्वितीय—खगोल शास्त्री और गणितज्ञ 12वीं सदी में।

चीनी दार्शनिक कतपयसस 551-449 ईपू में

दाते— 1265-1321 इटली का महान कवि

चार्लस डार्विन 1802-1882 सबसे बड़ा वैज्ञानिक जितने विकासवाद के सिद्धान्त की खोज करके स्पष्ट किया कि प्रकृति और समाज स्वयं रचित और स्वयं संचालित हैं। ईश्वरवाद जस अंध-विश्वास मिटे और सेक्यूलर विद्याएं आगे बढ़ी। प्रयोगशालाओं बनने लगी।

1760 में इंग्लैंड में पहला कारखाना खुला था। औद्योगिक क्रांति का प्रारंभिक काल था।

14 जुलाई, 1789 में पहली राज्य सभा हुई। फ्रांस इतिहास में पहला गणतंत्र बना।

1831 में फ्रांस में मजदूरों का इतिहास की पहली हड़ताल की इतिहास में पहली कम्युनिस्ट पार्टी 1847 से 1852 तक रही। कम्युनिस्ट पार्टी का मनीफेस्टो 1848 में प्रकाशित हुआ।

1859 में डार्विन की पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ दी स्पीसीज' प्रकाशित हुई।

1867 में 'कैपिटल' प्रकाशित हुई जो वर्तमान साम्यवाद की आधार पुस्तक है।

राजस्थान के किसान ने 1452 में अपना खेत खोला। वह क्षेत्र उसे 1952 में वापिस मिला। उस दिन जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ।

दस हजार वर्ष ईस्वी पूर्व में चीन में लिखित भाषा बनी पहली सदी ईस्वी में चीन में कामज बना।

सातवीं सदी ईस्वी पूर्व में यूनान की राजधानी अथेंस में पहला सिविल बना। इसी समय एथेंस में जमींदार और किसान दो वर्ग बन गए थे। बड़े और छोटे बन गए थे। इतिहास लेखन का पिता हिरो डोटस इसी समय हुआ था।

पांचवीं सदी ईस्वी पूर्व में हीमोफ्रेटस नामक विद्वान ने प्रचार किया कि आत्मा, परमात्मा जैसे देवता नहीं है। यह ससार इमक प्राणी इसी मिट्टी से बन हैं। इसी मिट्टी में पूरे के पूरे मिल जायेंगे।

ससार का पहला बादशाह अलेक्जेंडर महान था। ससार में पहला साम्राज्य भी उसी का था। यह 334 ई. पूर्व के फ्रांस-प्रांस की बात है।

यान-1561-1626 प्रथम अंग्रेज दार्शनिक प्रकृति-विज्ञान  
मीनिंगवाद का जन्मदाता ।

गास्वामी तुलसीदास ने रामायण लिखी 1575 म अक्टूबर के  
समय म ।

प्राचीन भारत की विचारों जो इतिहास म नहीं लिखी जाता

- 1 ईस्वी की आरहवीं सदी मे भास्कराचार्य ने "सिद्धान्त शिरोमणि"  
पुस्तक लिखी ।
- 2 ईस्वी की बारहवीं सदी मे "लिलावती" पुस्तक लिखी गई जो  
गणित और रेखा गणित पर विश्व की पहली पुस्तक में है ।
- 3 बीदामन ने पाइथोगोरस थिओरम लिखी ।
- 4 भास्कर द्वितीय ने रेखा गणित पर सिद्धान्त शिरोमणि लिखी ।
- 5 सुमुत्त भारत का पहला सज्जन था ।
- 6 आयुर्वेद का मस्थापक अत्रेय था ।
- 7 पावतरी ने 'चिकित्सा विज्ञान पुस्तक लिखी ।

## सभ्यता की प्रगति खेल

- 1 सबसे पुराना खेल ह तीर चराना, इससे शिकार भी की जाती थी। जीवन की यह मजिन 8000 ईस्वी पहले की है।
- 2 दूसरा खेल है कुम्ती 2750 ई पूव
- 3 घुड़ सवारी 3000
- 4 घतरज 200 ईस्वी
- 5 फुटबाल 1672
- 6 गार्फ 1457
- 7 ताश 1825
- 8 मुक्कवाजी 1743
- 9 बड मिटन 1876
- 10 जिमनास्टिङ 1776
- 11 नौका दौडे 1865
- 12 क्रिकेट 1774
- 13 ब्रेस कटरी 1798
- 14 साइक्लिङ 1868

युद्ध जीते नहीं जा सकते । इसलिए युद्ध नहीं जाना चाहिए ।  
सुनेपन से विश्वास बढ़ जाता है ।

ओलिम्पिया—यूनान में 776 ईस्वी पूर्व में 394 ई पूव तक  
ओलिम्पिया नाम का नगर था । इसमें खेल शुरू हुए । इन खेलों में  
आजकल ओलिम्पिया कहते हैं ।

नानने का काम मिग में शुरू	2000 ई पूर्व में
बासकेट बोल बनी	1891 में
वोक्सिंग	1867
क्रिकेट इंग्लैंड में पहला मैच	1719
मोशन पिक्चर	1905

नोट—ताश बहुत पुराना खेल है । वहाँ शुरू इस पर विकास है  
चीन मिथ्र, अरब और भारत—ये चार देश इसके शुरू करने के शक्ति  
दार हैं । इसके पत्तों की संख्या का धीरे धीरे विकास हुआ है । 27  
पत्ते फ्रांस में तरहवीं सदी में पूरे हुए ।

### चैस—शतरंज

दुनिया में पहला खेल शतरंज है । बड़ लोगो ने बादशाहों ने  
और उनके बज्जिरा ने यह खेल शुरू किया । वे ही इसे खेलते थे ।  
यह बात मान ली गई है कि शतरंज भारत में शुरू हुई ।  
स्टाम्प शुरू ब्रिटेन में 1840 में ।

## She can no more be ignored or wooed

Whichever way it ends the public and noholds-barred debate in the United States over sexual harassment of women by men is likely to affect social relations in this country, particularly in the relationship between the sexes. Reverberations of the battle—which took place centrestage on Friday in the hearings of Ms Anita Hill's charges of sexual harassment against Mr Clarence Thomas, President George Bush's nominee for the U S Supreme Court—are evident outside the senate arcua,

Last week, virtually nothing else was discussed wherever men and women met, on television or in real life. If one were heading for a dinner party, one

would have to be prepared either to engage in debate, often sharp, or nurse a drink alone in a quiet corner. If one were travelling in the subway, one could hear it all around. Is She lying or is he? No one really knew and no one perhaps can ever know, except the two involved parties themselves. It was clear that the division ran right through the United States, vertically along political lines and criss cross through sexual ones. But the issue raised was larger than the reputations of Judge Thomas and Prof Hill or who will be the next Judge in the U S supreme court.

Perhaps the single biggest feature to strike this outsider, even more than the breathtaking candour of the debate was the realisation that women had finally become a major political force in this most powerful of the world's democracies. No congressman or senator can survive politically for long in this country by ignoring women's issues. Ms Hill's accusation against Judge Thomas amounted to a charge of sexual harassment against a former boss. She could not really prove it nor could the judge ever hope to disprove it. But it was an issue involving the power relationship between the sexes in today's world an issue which women had often tried to highlight but hadn't really succeeded until last week.

How should men relate to women in the work place ? How should men behave in a changed work environment where rugby jokes and bathroom banter had once been perfectly normal for the boys ? Should women adopt the same behavioural traits that men had, now that they were competing with men in the same race ? Or should men become more sensitive and less aggressive in deference to the female presence

These were not questions that were raised or answered in Friday's extraordinary hearing of the senate judiciary committee. These were questions being debated around the country, No clear answers, really, to any of the major questions being raised. But they were important issues reflecting a changed society in which women's sensibilities were suddenly a major factor to reckon with.

Could a boss ask his female subordinate out for a dinner date? Could he at all suggest that she render him romantic favours ? If she said No once, could he insist again and again ? Would she be within her rights to refuse and yet expect to be treated like one of the boys when it came to her turn for promotions? If she complained against her boss officially -- and in this country sexual harassment is legally a crime since 1985 -- could she hope to find a job somewhere else



without having people ask her uncomfortable questions or turning her away as a potentially "troublesome" employee?

Ms Hill calmly and determinedly said that Mr Thomas had often suggested they go out for dinner and had also implied that she oblige him sexually. Judge Thomas in a passionate and moving rebuttal denied everyone of her accusations. No third party will perhaps ever be able to determine the truth. But supposing Mr Thomas had asked her out, was he at that time unmarried - doing something wrong? Or was he doing something that came naturally to men, which was wooing a woman for romance? Was he being unfair to his subordinate as a boss? Or was he being a thore man? If he cracked lewd jokes with her could he be expected to respect women's right in the supreme court? Or was such bawdiness normal?

Questions galore. The answers often depended on whether you were a man or a woman. Some of the argumentation in public and private cut across sexual lines but many men felt confused by the new and increasingly demanding expectations of their behaviour in office or outside while many women felt outraged or at least frustrated that even some otherwise sensitive men could not seem to understand the feminine

view of the controversy at all. It is not an issue to be resolved overnight. But after the past week few americans could claim ignorance of what sexual harassment was

Meanwhile, it would be useful for us indians democrats that we are, to see a video recording for the debate in the senate judiciary committee on friday. The frankness, the sheer openness of it all, the refined argumentation even when it was in anger or humiliation produce a fine lesson in democratic functioning. Even the prudence that crept in repeatedly particularly during the interrogation of Ms Hill, was handled Landlen with dignity. It must have been difficult for the senators to handle the embarrassing parts but they did it all with finesse, even when discussing an allegedly pornographic movie about oversized human attributes.

## महान रूसी व्यक्तियों के दिमाग सुरक्षित

वाशिंगटन प्रत्येक शनिवार का 'अमरीका में टेलेविजन पर सिक्सटी मिनट्स' अर्थात् 60 मिनट नाम का एक कार्यक्रम होता है। एक घंटे का यह कार्यक्रम गाम को सात बजे प्रारम्भ होता है। इसमें सी बी एस पेश करता है। सी बी सी, यहाँ की तीन बड़ी प्राइवेट टी वी कंपनियों में से हैं। दो अन्य ए बी सी और एन बी सी। '60 मिनट' एक टी वी परिवर्तन की तरह है। हर कार्यक्रम में तीन या चार घटनाएँ दिखाई जाती हैं जो अधिकतर ताज़े समाचारों में सम्बन्धित होती हैं। कार्यक्रम बहुत ही लोकप्रिय है और निम्न वर्ग वर्गों में इसे पढ़ा जा रहा है।

महान व्यक्तियों के दिमाग सुरक्षित आठ सितम्बर 60 मिनट का दर्शनक संकलन में आ गए। उह छाने पदों पर मास्को का एक प्रयोगशाला दिखाई गई जहाँ सावित्र संघ के प्रमुख कम्युनिस्ट कला गायी, कविता, लेखक और चित्रकारों के दिमाग रासायनिक कर्षण द्वारा सुरक्षित रहे हुए हैं। पिछले 67 वर्षों से यह प्रयोगशाला कार्य

पर रही है। इसका उद्देश्य है देश को अधिक महान व्यक्तियों के दिमाग का अध्ययन करके उनकी महानता के कारणों का पता लगाना आज तक किसी बाहरी व्यक्ति को इस प्रयोगशाला में परखन की इजाजत नहीं दी गई।

इस प्रयोगशाला की हर चीज एक राज थी। लेकिन पिछले महिने 74 वर्षों से सोवियत संघ में चली आ रही सामाम्यवादी तानाशाही के बाद कई राज खुले हैं। सबसे पहले इस गुप्त संस्थान में प्रवेश करने वाला रूसी पत्रकार है 'ग्राटिन बोरोविक'। आज-कल यह मास्को में सी बी एम के लिए काम करता है। वह कुछ वर्ष पहले अमेरिका में जहां पर उसका पिता सोवियत संघ टेलिविजन के प्रतिनिधि थे। अपने अमरीका प्रवास के दौरान बोरोविक अमरीकी टेलीविजन से बहुत प्रभावित हुआ।

वह अक्सर अपने पिता में कहा करता था कि वह अमरीकी पत्रकारों की तरह समानार सफल और प्रसारण क्यों नहीं करते वह सोवियत संघ में गोर्बाच्योव के सत्ताहट होने से पहले का जमाना था। वेचरे पिता बेटे को क्या बताते कि साम्यवादी व्यवस्था में विचारों और प्रेस की स्वतंत्रता के लिए स्थान नहीं है। कुछ दिन बाद बोरोविक अपने पिता के साथ मास्को लौट गया। अगस्त में जब कट्टरपथी कम्युनिस्टों ने गोर्बाच्योव का घर कानूनी ढंग से तहता प्लट कर सत्ता हथियान की काशिख की तो बोरोविक उन लोगों में से था जो मास्को की सड़क पर उमड़ पड़े और लोकतंत्र के विरोधी पदचक्र को ताकाम बना दिया।

अब वही बोरोविक 60 मिनट के लिए काम करता है। उसी

ने सबसे पहले वास्को की गुप्त प्रयोगशाला में कदम रखा वहाँ के शोध कर्मचारी और डाक्टर उससे खुलकर बात कर रहे थे और एक के बाद एक रहस्य का उदघाटन कर रहे थे। सबसे पहले लेनिन का दिमाग दिखाया गया लेनिन ने सन् 1917 की कम्युनिष्ट क्रांति की अगुवाई करके सोवियत संघ की स्थापना की थी। इसने बाबा लेनिन का उत्तराधिकारी स्तालिन का दिमाग दिखाई पड़ा। उसको हाथ में उठाकर बोरोविक ने ऊँची आवाज में कहा कि यह उस शतक का मस्तिष्क है जिसने अपने को बनाए रखने के लिए अपने लोगों को वासियों को मौत के घाट उतारा। फिर सभी लेखक, गीर्वा, काव बनादामीर माईकोवस्की और अणु वैज्ञानिक घाद्र सखाराव के मस्तिष्क दिखाये गए।

मरने के बाद लेनिन और स्तालिन का दिमाग निम्नान्न कर उनके बदन को रसायनिक तत्वों से सुरक्षित करके जनता के दृष्टांत मास्को के रेड स्वाव्यर में रख दिए गए। 1974 में जब पहली बार मास्को गया तो मन सिर्फ लेनिन के शव को वहाँ देखा। तब तक स्तालिन के शव को वहाँ से हटा दिया गया था। 1956 में मोस्को की सत्रारूढ कम्युनिष्ट पार्टी की 20वीं कांग्रेस [अर्थात् सम्मेलन] हुई जिसमें उस समय के पार्टी नेता खुशेव ने स्तालिन के जुल्मों का पर्दाफाश किया था। उसके बाद स्तालिन का शव दर्शनीय वस्तु नहीं रहा उसे वहाँ से हटाकर एक कब्र में दफना दिया गया।

स्तालिन की बेटी स्तानिन की एक बेटी बच गई थी। उसका नाम था उनने स्वेतलाना ने मास्को में बसे एक भारतीय कम्युनिष्ट सुरेसिंह से विवाह किया था। सुरेसिंह की मृत्यु के बाद स्वेतलाना अपने पति की अस्थियाँ लेकर भारत आई थी। वह 1967 की बात है अपने

भारत प्रवास के दौरान स्वेतलाना ने अमेरिका से मुक्त रूप से राजनितिक कारण मांग ली और उसने सोवियत सघ छोड़ दिया ।

इस घटना से भारत सरकार को काफी परेशानी उठानी पड़ी थी । इंदिरा गांधी उस समय प्रधान मंत्री थी और राजा दिनशासिंह उनकी सरकार में कैबिनेट स्तर के मंत्री थे । स्वेतलाना के पति सुरशासिंह दिनशासिंह के सगे चाचा थे । अपने भारत प्रयाग के दौरान स्वेतलाना अवैध के कालावाकर नामक स्थान में भी ठहरी थी । कालावाकर उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में है । राजा दिनशासिंह के पुरखे ताल्लुकेदार थे । स्वेतलाना न अमरीका आकर फिर विवाह कर लिया । अथ उन पर सोवियत सघ में कोई पाबंदी नहीं है । और वह अधिकतर वही रहती है । स्वेतलाना की मा अर्थात् स्तालिन की पत्नी की बहुत ही रहस्यमय ढंग से मृत्यु हुई थी । वह अपने पति से 20 वर्ष छोटी थी । उसकी मृत्यु का कारण स्तालिन को भी बताया गया ।

लेनिन की इच्छा—इधर सोवियत सरकार ने लेनिन के शव को भी हटा देने का फैसला किया है । उनकी अन्तिम इच्छा थी कि उन्हें मृत्यु के बाद लेनिनग्राद में उनकी माता की कब्र के पास ही दफनाया जाए । मृत्यु के 67 वर्ष बाद लेनिन की अन्तिम इच्छा पूरी की जा रही है । लेनिनग्राद का पुराना नाम सेंट पाट्रिकस था वह रूस के जाग शासकों की राजधानी रहा है । 1917 की क्रांति के बाद इस शहर का नाम बदलकर लेनिनग्राद रख दिया गया । सोवियत सघ की राजधानी वहां से हटाकर मास्को बना दी गई । लेनिनग्राद रूसी गणतंत्र का मास्को के बाद दूसरा बड़ा शहर है इसे आर शासक पीटर महल ने बनवाया था ।

सोवियत सघ म हर गली के माड पर और हर सरकारी दफतर म लेनिन का बुत रखा हुआ ह । सोवियत सघ मे एक कारखाना है जिसका काम लेनिन के बुत बनाना ह । अकल रियस शहर मे लेनिन के तीन सौ बुत है कियेन मुक्रेन गणतंत्र की राब धानी ह जिस । सोवियत सघ से अलग होने का ऐलान कर दिया ह शहर के बीचोबीच लेनिन की एक भीमकाय प्रतिमा ह जिसे हजारों पर आजकन विचार विमर्श हो रहा ह । सोवियत सघ क सभी सरकारी दफतरो से लेनिन की प्रतिभाएं हटाई जा रही ह ।

आजकल जो कुछ लेनिन की प्रतिमाया के साथ हा रहा ह सत्ता म आगे पर वही कुछ उहागे अपने पूवक शासक जार क साथ किया था । उनके पूरे परिवार का बच्चा सहित गोली मार दी गई थी । न कोई अदालत न फरियाद जो कुछ लेनिन कहे उने ही सच मानने का जमाना था । उस समय यह कहा गया कि जार घराने को अपने किए का फन मिला जार जाही काफी जालिम थी और उसने जोर जबरदस्ती से जनता पर राज किया उनके इन रवैये ने जनता म नफरत पदा कर दी और वह मजबूरन कम्युनिस्टो के साथ हो लिए ।

स्तालिन और ट्रुटस्को—कम्युनिस्टो ने ठीक वही किया जो जार किया करते थे और उनको भी वही सजा मिली । कम्युनिस्ट कइ मामला में जारशाही से भी क्रूरता म बाजी मार ले गए । मसन स्तालिन ने उन सब व्यक्तिओ का सफाया कराया जिहागे लेनिन को सत्ता में आगे मे सहायता दी थी । अंग्रेजी में एक कहावत ह कि प्राति सबसे पहले अपने बच्चों को खाती है । स्तालिन ने इस कहावत को चरिताप किया लेनिन के समकक्ष इसी प्राति के एक अन्य नेता थ

ट्राट्स्की वह कई मामलों में लेनिन से बढ़ कर थे। ट्राट्स्की ने क्रांति के बाद सोवियत सेना जिसे "लाल फौज" कहा गया। उसे गठित करने में महत्त्व दी थी।

लेनिन हमें ट्राट्स्की में जलने थे। उन्हें डर था कि वह अभी लेनिन के बाद सत्ता में न आ जाए। मई 1924 में जब लेनिन की मृत्यु हुई तो ट्राट्स्की मास्को के बाहर सरकारी दौरे पर थे। स्तालिन ने उस समय सारी जिम्मेदारी सम्भाल ली और ट्राट्स्की की मृत्यु तक की सूचना भी न भिजवाई। मास्को आकर ट्राट्स्की लेनिन का शव का सुरक्षित रखने के प्रस्ताव का विरोध किया। उनका कहना था कि इससे व्यक्ति पूजा बढ़ेगी। स्तालिन ने उनके सुझाव का ठुकरा दिया। ट्राट्स्की को पहले देश निकाला दिया गया और बाद में उनकी हत्या करवा दी गई।



## वैज्ञानिक समाजवाद के पूर्ववर्ती

- 1 हेनरी डी सेंट साइमन 1760-अंग्रेज
- 2 चार्लस फोरिये- 1772-1837 फ्रांसीसी
- 3 रोयट आवन 1771-1858

इस प्रकार समाजवाद की विचार धारा समाजवाद का जन्म शास्त्र 18वीं सदी में आरम्भ हुआ। यह यूरोपियन समाजवाद कहलाता है। यूरोपिया एक टापू था जहाँ यह विचार पैदा हुए। उन्नीसवीं सदी में मार्क्स ने वैज्ञानिक समाजवाद चलाया। समाज की प्रगति के नियम हैं जिन्हें मार्क्स और अंगल्स दूँगे।

रामायण की रचना तुलसीदास जी ने 1575 में की। यह अक्षर का समय था।

संसार के सात बड़े देश हैं। 1 अमेरिका 2 जापान  
3 जर्मनी 4 फ्रांस 5 इटली 6 कनाडा 7 ब्रिटेन

ये मानों पू जीवादी देग हैं । गोवियत सघ और चीन इनम नही है । इन माती को दतीनिए पू जीवादी बनव बहते हैं । इन दोना समाजवादी देशों को मिलाने स बडे देस आठ हैं । ससार के कुल देग 170 हैं । राष्ट्र सघ के सदस्य 160 हैं । 10 देस बहुत छोटे देग ह । य देग अधिकांश समुद्र म बस टापू ह ।

विश्व सदब है, असीम है । जीवन वाद का है । मनुष्य दस हजार वर्ष का है । समाज का विकास हुआ है और हो रहा है । प्राकृति का भी विकास हुआ है । पथी न अपना जीवन गम उगलते कीचट स शुरू किया । टुन्डा सूरज स टूटकर विश्व म घूमा । जहा अच्छा जनवायु मिला वहा रुक गया । यह सब समाग बन हुआ । इसके पीछे न कोई याजना थी और न कोई कर्त धरता था । वह अनादिकान माना भूमण्डल का अत्यवान था । प्रारम्भ सयोगवान हुआ । ज्या समय बीता, नियमानुबूल सेट विभाग बनते गये । नियम बढ़ता म जा बात सेट न हा सकी वे मिट गई ।

पश्चिमी दग सोवियत सघ के खण्डित होन के पक्ष मे नही हैं अमरीका और सोवियत सघ दो महा शक्तियां रही है और एक दूसरे का अमजोर करन के पक्ष मे रही है । एक न यह चाहा है कि वह दूसरे से आगे रहे । पर आज 1991 क अतिम दिनों मे अमरीका की प्रबल इच्छा है कि सोवियत सघ अब आगे टूटे नही । बारह गण राज्य जो बचे हैं वे एक रहें । तीन बालटिक गणराज्यों के टलन के बाद अब बारह ही रहें हैं । इन गारह मे पांच हैं कजाकिस्तान, उजबेकिस्तान, तर्कमानिस्तान, ताजकिस्तान और किरगिजिया ये पांचों इस्लामी देस हैं । सोवियत सघ के साथ सत्तर वर्ष रहन पर भी वह बहुमत के हिसाब से इस्लामी देस है । इस्लामी भावना

जागृत हा गयी है। पश्चिम को यानी अमरीका आदि का यह कि यह पश्चिम एशिया के मुगलिन राज्या की तरफ न युक्त अब। दूटे चार घमों म बस एक इस्लाम ही बट्टर ह। बाकी सब बायनिक श्रीर उदार हैं। सोवियत साथ उन पाच म स ह जिनके पास निपच अधिकार हैं। स विवत होन पर इस निपेधाधिकार का क्या हाता? यह प्रश्न गम्भीर है।

सी आर पी सटरल रिजर्व पुलिस बल राज्य सरकार का विषय है। परंतु सी आर पी पुलिस होत हुये भी बद्र के अघान ह। यह बल 1939 मे बना था। इसम महिला बटालियन भी है। जानने लायक बात है कि बद्र सरकार ने जब दवा कि पजाब पुलिस आतककारियों मे छीन नही निपट रही है तो यही सी आर पी बल भेजा गया था। आतककारी इसी सी आर पी पर घान लगा कर हमला करते हैं। ये आतककारी भारत मे सब जगह है। कार खाना की रक्षा के लिए सीट्रल इण्डस्ट्रियल सक्विरिटी फोर्स बन हुआ है।

आसाम राइफल्स— एक प्रकार पुलिस बल है। केन्द्र के अघीन है। आसाम के देश द्रोहियो के लिये है।

सिविल डिक्स— एक प्रकार की पुलिस है केन्द्र के अघीन। चाइल्ड मंरिज एक्ट 1929 नडका 21 वर्ष का श्रीर लडकी 18 वर्ष की हानी चाहिए। गैर कानूनी होन वह विवाह गलत होना कानूनी सहायता नही मिलेगी।

## ऑक्सीजन का काम

इसका काम जलाना है। ऑक्सीजन नहीं होगी तो आग नहीं जलेगी ऑक्सीजन नहीं हाँगी तो भोजन नहीं पचेगा। हजम नहीं होगा। भोजन पजता है का अर्थ है भाजन जलता है। जब हम सास लेते हैं तो हम ऑक्सीजन और नाइट्रोजन दोनों फेफडी में जाती हैं। वहाँ जाकर रक्त में मिल जाती है और शरीर को प्रत्येक कोशिका में पहुँच जाती है। भोजन का जलाना और शरीर को गर्म करना ये दो काम ऑक्सीजन के हैं। फूँक मारते हैं तो प्राण जलती हैं क्योंकि हम आग में अधिक ऑक्सीजन देते हैं, परिश्रम से ध्यायाम से अच्छी भूख लगती है क्योंकि हम अधिक साँस लेते हैं और अधिक ऑक्सीजन शरीर में पहुँचाते हैं तो भोजन अधिक तेजी में पकता है धानी जलती है।

ऑक्सीजन कब बनी, या वहाँ से आई, काई, नहीं जानता ?  
इतना ही कह सकते हैं कि जीव पैदा हुए क्योंकि ऑक्सीजन थी।

आक्सीजन के बिना पौधा नहीं बढ़ेगा, बीज नहीं उगाए।  
 ऑक्सीजन के बिना पौधे को गर्मी नहीं मिलेगी। भूमध्य रेखा के  
 दोनों तरफ वन होने का कारण है कि वहाँ ऑक्सीजन है गर्मी है।

Fossil remains of prehistoric men have been  
 Found that go back to a time 10 00000 years ago

मनुष्य के अवशेष जो मिले हैं, वे दस लाख वर्ष पुराने हैं।

### चीन की दिवार महान

विश्व का पहला साम्राज्य चीनी साम्राज्य था। यह 221 ई पूव की है। सम्राट ने विश्व दिवार बनाई। इस बनने में 15 वर्ष लगे। यह अब भी वायव्य है।

### विचित्र प्रकाश

धरती के उत्तरी भाग में परतु उत्तरी ध्रुव से पहले आकाश में प्रकाश छाया रहता है। यह प्रकाश कहाँ से आता है, क्यों होता है कुछ पता नहीं। यह घटना फिनोमेना—रहस्यमय है, समझ से बाहर है। इसीलिए इधर किसी वैज्ञानिक का ध्यान नहीं जाता।

### विकासवाद इवोल्यूशन क्या है, क्यों है

कुछ पता नहीं। परतु विकासवाद की प्रक्रिया की प्रारम्भ की खोज 1859 में डार्विन ने की। इसी तारीख में वैज्ञानिक गिज्ञा का आरम्भ मानना चाहिए। मूल नियम है कि मनुष्य प्राणी नहीं हुआ बना नहीं। उसका धीरे-धीरे हजारों वर्षों में विकास हुआ है सबसे पहले मनुष्य का उद्भव उत्तरी पूर्वी एशिया में नोबे विनारे मनुष्य का उद्भव हुआ। परतु ठोम सतत इस जगह का उद्भव में नहीं है।

प्रारम्भिक मनुष्यों के—प्रिमिटिव मनुष्यों के लक्षण—फोसिलि-  
मिन हैं। ये दस लाख वर्ष पुरान हैं। ता मान लो कि मनुष्य प्रार-  
म्भिक रूप यानी लो परा पर घना दस लाख वर्ष पहले शुरू हुआ।

ता मनुष्य दस लाख वर्ष का है। धरती पांच अरब वर्षों की है  
मनुष्यों के होने और रहने व प्रमाण पश्चिम एशिया में  
मिलते हैं। कहना चाहिए दजाल और फरत नदियों व किनारे  
मिलते हैं। इन का मैदाना म नील नदी का मैदान भी शामिल है।  
यह बात पाच लाख वर्ष पहले की है।

समस्तो मनुष्य का मनुष्यों की तरह रहना पाच लाख वर्ष  
पुराना है और स्थान है पश्चिम एशिया।

तीन लाख वर्ष पहले, मनुष्यों की टोपियां समुद्र के रास्ते से  
इंडोनेशिया और चीन की तरफ गईं।

कलेण्डर बना 6000 वर्ष छ हजार वर्ष पहले पहले मिश्र म  
वर्षों में 365 दिन निर्दिष्ट किये गए। महा कलेण्डर का आविष्कार  
हुआ।

मिश्र के बाद रोमा सम्राट न इसको और सही बनाया चौथ  
वर्ष 366 दिन वर्षों के कर दिए। इस ग्रेगरियन कलेण्डर कहलाता  
है। पोप ग्रेगरी ने चालू किया था।

पहली पुस्तक छपी 1440 म।

वणमाला 3500 वर्षों पहले यानी 1500 वर्ष ई पूव में बनी।  
यह हुआ मससामर के मेडिटरेनियन सागर के पूर्वी किनारे के पास।  
भाज यहा तुर्की, मिश्र, फिलिस्तीन, इजरायल आदि देश बसे हैं।  
यहां से यह वर्षमाना ग्रीस पहुंचा।

### Ancestor Language

बाप दादाओं की भाषा, for the sake of convenience

मुमीत के लिए सरलता के लिए, अंग्रेजी भाषा 450 ई. से बन  
हुई। परन्तु आधुनिक अंग्रेजी बनी सन् 1500 से।

### पैन—कलम

पहला पैन मनुष्य की अंगुली थी।

### पहली स्याही

कनों का रस और जानवरों का खून।

### लोहे का पैन

इंग्लैंड में 1780 में बना। फाउंटेन पैन बना अमरीका में  
1885 में। पेनसिल बनी 1795 में।

बागज चीन में बना सन् 105 में। आधुनिक बागज 1798  
में बना जा समाचार आज चल रहे हैं उनमें सबसे पुराना है 'टाइम्स  
ऑफ लंदन' यह पत्र 1785 में शुरू हुआ।

### किताबें कब बनीं

मध्य युग में पहले किताबें नहीं बनीं। 450 के आस पास  
भेड़ बकरी की खाद पर लिखाई होती थी। लेटिन भाषा में यह  
पहली किताब लिखी गई।

पहली अंग्रेजी की डिक्शनरी निकली 1552 में।

सोना — मनुष्य का पवित्र पीला और पहला धन है।  
मिश्र के लोगों के आज से 5,000 हजार वर्ष पहले सोना खाना  
शुरू किया था। मनुष्य के पहले हमसे जर्मन के लिए नहीं सोने  
के लिए हुए थे। सिरिया के लोग अपने पड़ोसियों पर सोने के लिए  
हमला करते थे। यह घटाना 4500 वर्ष पहले की थी। ग्रीक  
और रोमन बादशाह दूसरे कमजोर बादशाहों पर उनका सोना छिपाने

क लिए आक्रमण करते थे । उस समय के दासों से सोने की खुदवाई कराया करते थे ।

दो हजार वर्ष पहले विश्व का पहला वैद, डाक्टर हुआ । उसका नाम था हिरोक्रेटस दवाओं का जन्मदाता था ।

## साबुन कब बनी ?

साबुन पहली सदी ई पूर्व में बनी ।

## सुगन्ध

गुलाब के फूल को बड़े लोग 1300 वर्ष पहले काम में लेते थे । गुलाब का इत्तर भी इसी समय बनने लगा । इसी समय घदन की सुगंध का भी प्रयोग हुआ ।

## जूते

पहले लकड़ी की खड़ाऊ चली । सबसे पहले अमरीका 1629 में चमड़ के जूते बने ।

एनका आविष्कार 1352 में हुआ ।

## आटा और रोटी

दो पत्थरों के बीच में आटा पीसने का काम आज से पांच हजार वर्ष पहले शुरू हुआ ।

## चाय

चाय का स्यवेग चीन है । चीनी लोग चार हजार वर्ष से पीते आये हैं । योरप में चाय 1690 में पहुची 1790 के आस पास चाय योरप और अमरीका जाने लगी । सबसे ज्यादा चाय भारत में उगती है ।

चाय की जन्म भूमि आसाम है । आसाम में यह जंगल में



कुत्तरनी रूप में उगती थी। बाद में इस सेना में उगाया जाने लगा  
 चीनी लागू ग्रामाम से बीज ले गये और चाय की सेती बनता।  
 ग्रामाम से ही लता गई और उगाई जात लगी। आज तक चाय  
 जाना मुमात्रा और फोमूसा में उगाई जाती है। सबसे ज्यादा मात्रा  
 में लपती है।

## आज का दिन और चाय

पाच अरब की जनसंख्या में से साठे चार अरब लोग चाय  
 पीते हैं। जहाँ देखा चाय हर गली में चाय, सब जगह चाय।  
 किसी आदमी का रोबने का, राजी करने का यह बना बनाया  
 उपाय है। चाय एक A relaxation है विश्राम है। भाई चारे  
 का बना बनाया सूत्र है मंत्र है। बैठो सा, चाय तो पीके जाओ  
 यह मनवाहर चलती रहती है। सबसे ज्यादा चाय निर्यात करता है

## धूम्र पान-स्मोकिंग

धूम्रपान शुरू हुआ—फ्रांस में 1556 है पुतगाल में 1558,  
 स्पेन में 1559 में इंग्लैण्ड में 1565 में।

1556 से पहले धूम्रपान कहीं नहीं था। धूम्र को सग स  
 ही हानिकारक माना जाता रहा है। तुर्की सरकार ने घोषणा की  
 कि धूम्रपान करने वाले को मृत्यु दण्ड दिया जायेगा। इस व  
 सम्राट ने हुक्म निकाला कि स्मोकिंग करने वाले का नाक का  
 लिया जायेगा। आज हर काणा पर धूम्रपान मिलेगा। दिया सताई  
 1833 में बनी। पेट्रालियम 1859 में ढूँढा गया। पेट्रोलियम  
 में से ही क्विरोमिन निकाला जाता है।

बइसिकिल बनी 1865 में।

पहली उठान 1903 में।

Telephone में 1875

Typewriter 1873 मे

मजदूर की सुरक्षा के लिए फेडररी एक्ट 1948 बना। होम गार्ड बना बना 1946 मे। छात्रों का बच है। पुलिस की मदद के लिए 1962 मे इसमे सुधार हुआ।

पेट्रोल मे चनने वाली कार	1887 मे
हवा में पहली उड़ान दिसम्बर 17, 1903 मे	
चलते हवाई जहाज से उतरना	1912 मे
टेलीफोन बना	1875 मे
टाइप राइटर	1873 में
सीने की मशीन—सीगर मशीन	1851 मे

### उत्तरी प्रकाश

ध्रुव प्रदेश से पहने, आकाश में एक प्रकाश होता है। वही 50 किलोमीटर और कहीं तो किलो मीटर की ऊंचाई पर हाता है। यह क्यों होता है, कैसे होता है। अभी तक मालूम नहीं हा गया। यह विश्व का बड़ा आश्चर्य है और एक रहस्य है। दक्षिणी गालाई में भी होता है, पर थोड़ी दूर मे। उत्तरी कैनाडा में उत्तरी स्कॉट लैंड मे, दक्षिणी नोरवे फिर दक्षिणी स्विडन मे यह प्रकाश दक्षिण मे सरकार अमरीका मे यू एस ए में भी आ जाता है।

1951 में सार्वजनिक क्षेत्र मे केवल मे 5 फेक्टरिया थी जा 1988 में 231 हो गई।

पहला कारखाना बम्बई में खुला 1854 मे। रुई के बपडे बनाने का था। भारतीय पूजा और भारती प्रबन्ध था। दूसरा कारखाना कलकत्ते में खुला जो जूट का था। लेकिन इसमे विदेशी पूजा थी और विदेश प्रबन्ध। खान से कौयला निकालने का काम भी रानी राज पारिया में इसी समय शुरू हुआ।

सीमेंट का पहला कारखाना मद्रास में 1904 में बना।  
कागज का पहला कारखाना 1832 में। बंगाल में सिरापुर में  
खुला। लोहा और स्टील का कारखाना 1870 में बना। छद्दी  
फैक्ट्री 1951 में बनी।

### सोना-पोला धातु

भारत में सोने की तीन बड़ी खानें हैं। ये तीनों खास दक्षिण  
भारत में हैं 2 कर्नाटक जिले में और एक अनातपुर में।  
104 टन सोने का अनुमान है।

### लोहा-आधार भूत धातु

2100 इक्कीस सौ करोड़ टन लोहा भारत की खानों में है।  
चूना- भारत में 6030 करोड़ टन चूना है।  
रेल- 1853 में चली, बम्बई से घाना तक।

### सन्देश वाहन

पोस्ट आफिस सुले 1837 में।  
पहली पोस्टेज स्टाम्प कराची में निकली 1852 में। रेलवे  
में गुरु हुई 1907 में।  
हवाई डाक से गुरु हुई 1911 में। तार भेजना चालू हुआ  
1851 में।

हवाई डाक से गुरु हुई 1881 में।  
टेलीफोन कलकत्ते में चालू हुआ 1881 में।  
मजदूरी मुक्तान कानून बना 1936 में।  
यूनितम मजदूरी कानून बना। 1948 में।

विद्युत के मन्त्रिमंडल का नाम सुरक्षा परिषद है। इसका 15  
सदस्य हैं। इनमें 11 सदस्यों का चुनाव होता है। 4 सदस्य स्थाई

। इनका कभी चुनाव नहीं होता। यह मंत्रिमंडल 1945 में बना  
 गया, तथा से मे पाच राष्ट्र सदस्य ह और सदा रहेंगे। पाच देशों की  
 यह स्थायी पचायत ह। पाच की सरया बड़ी शुभ और नामी सग्या  
 है। अनादि काल से चली हमारी पचायत भी पाच में बनती थी।  
 रच फंसला कहलाता था। कोई भी पाँच मिलकर फंसला करते थे।  
 सबकी मान्य होना था। तो फिर ये पाच दश ह जो सदा रहने वाले  
 स्थायी सदस्य ह। ये पाच देग विश्व विजयी ह। इ हाने हिटलर  
 का हराकर विश्व को फसिज्म नाम के अधिनायकवाद से बचाया  
 था। पाच के मुह से परमेश्वर बोलता ह यह धारणा हमारी रही  
 है। ता ये पाच ह, सोवियत सत्र जिसने हिटलर को उसकी रसाई  
 में बद कर दिया था, जहा उसने आत्महत्या की थी। दूसरा सदस्य  
 है अमरीका जिसका लिखित नाम है सयुक्त राष्ट्र अमरीका। तीसरा  
 नाम है ब्रिटन जिसके साम्राज्य में सूरज नहीं छुपता था। पूव से  
 पश्चिम और पश्चिम से पूव सब जगह अंग्रेजी का राज्य था। अंग्रेजी  
 न विश्व को सम्य बनाया सब जगह लाकनत्र महुचाया। सब जगह  
 अंग्रेजी पहुचा कर एक विश्व भाषा बनाई। अंग्रेजी के वारण हमारा  
 दम भी एक हुआ है और एव हैं।

चीना नाम है - अरस। ससार को सम्य बनान में फ्रांस का  
 भी बहुत सहयाय रहा है। नपोलियन जमा उदार मोढा फ्रांस में ही  
 हुआ है।

पाचवा सदस्य हैं चीन जहाँ विश्व के पाचरे हिस्से की जन  
 सरया है। पाच अरब की आबादी में 90 करोड नब्बे करोड मनुष्य  
 चीन में है। सम्यता का आरम्भ चीन में हुआ था। सम्यता के  
 आरम्भ का दूसरा स्थान ग्रीस है, यूनान है। एक स्थान पूव में और  
 दूसरा स्थान पश्चिम में।

विश्व के ससद का नाम है जनरल असम्बनी । गरी 77  
सग्या 160 है एम सी माठ । सतार म इतन ही देा है ।

राज के दो भाग हैं । एक भाग है मन्त्रिमडल जो चतव के  
बनता है । दूसरा भाग है स्थायी नौकरियां जा स्थायी हैं जिनम स  
किसी एव नौकर भी नहीं हटा सकते । मानलो किसी आमी न  
रिश्वत लेली या किसी ढग से उसन सरकारी रूपये का दुर्ूपोते  
कर लिया तो उसकी जाच होगी । जाच म वप लग जाए तब तक  
उसे कुछ वेतन मिलता रहेगा । बगाल म 15 बप से कम्युनि  
सरकार हैं पर वह सरकार दबी रहती हैं । सरकारी नौकर के काम  
करने की गति धीमी होती है । हर काम को नियमों म उलपाणि  
जाता है । उलक्षण को सुलझाने में एक पक्ष बाधक बन जाता है ।  
नियमों के विभिन्न अथ लगाये जाते हैं । छोटे अफसर से बड अफ-  
सर की तरफ नियमों की यात्रा शुरू होती है । यह यात्रा ज्वा  
चढाव मे फसी रहती है ।

आर्थिकहित और राजनीतिक हित जहा टकराते हैं, लोकतन  
का पूरा लाभ मिल नहीं सकता ।

बगाल मे कम्युनिस्ट सरकार समाज का कल्याण इसीलिए नहीं  
कर पाई कि वह नौकरशाही के अर्थालकार मे फसी हुई है ।

चीन की जनमरया दस अरबों की है । एक अरब तेरह करोड  
छत्तीस लाख, विअसी हजार पाच सौ एक है-1133682501 है  
दुनिया की कुल पाच अरब के आस पास है । चीन मे 85 करोड  
भारत में 75 करोड ।

कम्युनिस्ट कार्यक्रम 1903 मे बना था जिसमें कहा गया है  
प्रालिटरियन जाति से वर्ग मिट जाए गे । इस प्रकार सामाजिक और  
आर्थिक असमानता हमेशा के लिए मिट जायेगी । यह था 1903 का

डाक सवा 1837 म शुरू हुई । पहला डाक टिकट 1852  
राजी से निकला । डाक विभाग शुरू हुआ 1854 में ।

मनीमाडर प्रणाली शुरू हुई 1880 में । डाक घर बचत बक  
882 में बना । रेल डाक सवा शुरू हुई 1907 में, हवाई डाक  
शुरू हुई 1911 में । पहली टेलिग्राफ लाइन 1851 म बन-  
रुता स चालू हुई । 1884 में कलकत्ता से आगरा टेलिग्राफ जान  
नेग ।

## अहिंसा

अंतर्राष्ट्रीय संधि में पहली बार अहिंसा दर्ज की मान्यता  
प्राप्त हुई । शांति के प्रचारक राजनेता गोर्वाचिव नवम्बर 1986 में  
पहली भारत यात्रा की । दोनों देशों ने पत्र तयार किया वह दिल्ली  
घोषणा पत्र कहनाता है । इस घोषणा में दोनों देशों ने अहिंसा के  
समय पर चलन का बचन लिया । गांधीवाद का पहली बार इतने  
बड़े दश में स्वीकार किया । अहिंसा का प्रण लेकर नवम्बर 1986  
में संधिगत संधि न देशों का दौरा शुरू किया । उसे सफलता मिली  
और राज युद्ध की आशंका मिट गई । यह दि ली घोषणा पत्र से  
शुरू हुआ था ।

गांधीजी का अहिंसावाद और संधिगत संधि का शांतिपूर्ण सह  
अहिंसा का दर्शन, दोनों ने आज हजारों वर्ष पुरानी समाज हिंसा  
को समाप्त कर दिया है ।

गांधीजी का अहिंसावाद और गोर्वाचिव का खुलावाद, इन  
दोनों विचारों से आज विश्व शांति की ऊँचे चरुतर पर विराजमान  
कर दिया है ।

गोर्वाचिव न संधिगत संधि न अमरीका से संयुक्त राज्य अमरीका  
से कहा आओ और देखो कि हमारे पास कितनी सेना है और धरा

हथियार ह । अमरीका ने देखा कि सोवियत सघ व पान वृ  
कुछ ह जो अमरीका के पास ह । विनाश का भूत अमरीका के  
पर चढ गया । सुरक्षा की सधिया करके और गोर्नावद स मिन  
बढाकर अपन भय को दूर बिया ।

सच्चे का समाज हितकारी को गोपनियता का तिकरेसी सी  
जहरत नही । सोवियत सघ की शाति की नीति सदा ही सच्चा और  
इमानदारी की थी, पर विरोधी को विश्वास कसे और क्यों हो ।  
दिखाओ और जचाओ । बस यही खुलापन ह । सोवियत सघ व  
यही क्रिया और विश्व शाति को बचाया । मानव को विनाश व  
बचाया । दो पक्षो के बीच में थोडे समय के लिए अनणय मुक्त राज  
जा सकता ह । इसे कौनफीडशल कहते ह । यह आवश्यक ह ।  
Confidential बना Confidence से । यह जहरी ह ।

सीमा सुरक्षा बल 1965 में बनाया गया ।

पहली रेलगाडी 1 अप्रेल 1853 में चली । बम्बई से थान  
तक 34 किलोमीटर चली ।

सरकारी क्षेत्र का खाद का कारखाना 1951 में बिहार में  
बना ।

यू एन आई की स्थापना 1959 में हुई । यह सरकारी  
कम्पनी है समाचार इकठे करके पत्रो को देती है ।

स्वण नियन्त्रण अधिनियम 1968 इस कानून क अनुसार भारत  
सरकार साने की विन्नी, भाव आदि पर कटराल रखती ह । देण  
माने की दो खाने ह भारत गोल्ड माइस लिमिटेड इट्टी गो  
माइस लिमिटेड । भारत गोल्ड माइस द्वारा निकाला गया सार  
सोना भारत सरकार ले लेती है । इट्टी खान स निकाला गया सार  
बम्बई बाजार क भावा पर सोने के उन औद्योगिक उपभोक्ताओं क  
बेचा जाता है जिनको लाइसंस मिल जाता है ।

देश में मुषरों की संख्या एक करोड़ दो लाख है।

देश में भेडा की संख्या पांच करोड़ है। 1987 में ऊन का उत्पादन 4 करोड़ टन और 15 लाख टन था। देश में ऊन की कुल मांग छ करोड़ किलोग्राम है। एक सौ असी लाख टन ऊन बाहर से मगवाई जाती है। 180 लाख टन 1982 में। 1924 करोड़ गाय बैल थे। सात करोड़ भसे थी। भसा में संसार में भारत का दूसरा नम्बर है। गाय बैलो में छठा नम्बर है। देश में दूध का उत्पादन 1987 में 440 टन था।

रिजर्व बैंक की स्थापना 1 अप्रैल, 1935 में हुई थी। 1 जनवरी, 1949 को रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण किया गया था। नोट छापने का अधिकार इसी को है। एक रुपये के सिक्के और उससे कम के सिक्के भारत सरकार निकालती है।

जीवन बीमा निगम की स्थापना 1 सितम्बर 1956 में हुई थी भारतीय यूनिट ट्रस्ट की स्थापना 1964 में हुई थी।

गृह रक्षक दल 1946 में बना और 1962 में इसमें व्यापक सुधार किया गया। यह दल राज्य पुलिस की सहायता करता है। गृह रक्षक दल केंद्र की संस्था है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस 1939 में हुई। राज्य पुलिस की मदद करता है।

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल 1962 में बना कारखानों का विनाश से बचाने के लिए है। हड़ताल में और इसी प्रकार के दूसरे शब्दों से कारखानों की मदद की जाती है।

असम राइफल्स, 1828 में बना। बंगाल के बाद अंग्रेजों ने असम अधीन किया और असम राइफल्स की स्थापना 1829 में की



यह प्रद्वंसनियम बन है ।

फ़ेडरल प्रोवेंसल एक्ट्स—सी डी आर 1963 म बना ।  
उत्तराधिकार अधिनियम 1925 म बना ।

हिंदु उत्तराधिकार अधिनियम 1956 म बना । परिहार  
प्रधान की मृत्यु हा जान पर, उसके उत्तराधिकारी बोन हाग, बह  
इसम बताया गया है ।

प्रतियोगिता और सहयोग सभ्य और सहयोग धर्मों क मन का  
द्विधात्मक कहने हैं ।

जेनेवा मे 21 नवम्बर, 1585 का निर्णय लिया गया कि युद्ध  
जीत नही जा सजते । इसलिए युद्ध की सोचना उमकी तयारी करना  
विश्व विनाश की तयारी है ।

विश्व विनाश का हथियार प्रथम बम्ब बनाया ।

- 1 अमरीका ने 1945 म
- 2 सोवियत सभ ने 29 अगस्त, 1949 म
- 3 ब्रिटेन ने 2 अक्टूबर, 1952 म
- 4 फ्रांस ने 13 अक्टूबर 1960 म
- 5 चीन ने 16 अक्टूबर 1964 म

ये पाच देश सुरक्षा परिषद क स्थाई सदस्य है विश्व के  
जीवन मरण का निर्णय इही के बश म है ।

दुनिया म कुल युद्ध हुए 14,500 चौ-ह हागर पाच सौ । ये  
युद्ध 5500 वर्षों म हुए । इनम कुल आदमी मर 36 अरब और  
50 करोड । दस हजार वर्ष के इतिहास में 292 वर्ष शांति क थ ।

फेरीक्लीज 490-429 ई पूर्व मे अथेनस की सरकार का  
प्रधान था । लोकतंत्र डिमोक्रेसी का पिता कहलाता है । लोकतंत्र

( 118 ) यह कक की बात है/चो० मालसिंह

एसेस में शुरू हुआ। निक्कर वस्त्र और गारिक बेग भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं।

मास के चौ हवे लुई ने 72 बहतर वर्ष राज किया। उसका समय था 1638 से 1715 तक राज किया।

भगवान महावीर 599 से 527 ई पूव म। उनके उपदेश है, हत्या मत करा। मच्छर भी मत मारो। मुह पर पट्टी बाधलो। जिससे कोई मच्छर-कीड़ा मुह म न चना जावे। ब्रह्मचार्य का पालन करो। तपस्या करो।

मार्कोपोलो 1254 से 1323 तक पूर्वी एशिया की पहली यात्रा की। उस तक इतनी बड़ी यात्रा नहीं हुई थी।

माओ-चीन का क्रांतिकारी नेता और 1894 1976 1920 म कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

शिवाजी ने दक्षिण में हिन्दु राज कायम किया 1675 म।

अपने विचारों के लिए जो लोग मरे गये

- 1 सुकरात 469-399 ई पूव सुकरात विश्व का पहला आदमी था जो अपने विचारों के कारण मारा गया।
- 2 अमरीका-यू एस ए का निम्ना नेता दूसरा आदमी था जो अपने विचारों के लिये मारा गया। उसका नाम था मार्टिन लूथर किंग।
- 3 महात्मा गांधी तीसरा आदमी था जो अपने विचारों के लिए मारा गया-दिनांक 30 जनवरी, 1948

## मार्क्स के पूर्ववर्ती है

मार्क्स में पहले का समाजवाद यूटोपियन समाजवाद कहलाता है। विचारकों ने एक टापू माना जहा समाजवाद को उन्होंने लागू किया। टापू का नाम यूटोपियन रखा गया।

- 1 जीन मसलियर-1664-1729
- 2 गैत्रियल बो नाट-1709-1785
- 3 मारेली-दिनांक उपलब्ध नहीं हैं ।

जीन मसलियर 1 एक किताब लिखी है जिसका नाम है 'टेस्टामेंट' इस किताब में फ्रांस के किसानों की दुदशा का वर्णन है। अठारवीं सदी तक 1701 से 1800 तक मजदूर बग बना नहीं था मजदूर बना उ नौसवी सदी में। उन्नीसवीं सदी में मशीनी कारखाने बन । पहला कारखाना ब्रिटेन में 1760 में खुला था । पचासवाँ बग उत्पीड़क बगों, शीम बग सामंतीता के बाद पूंजीवता यानी कारखानदार थे । इससे पहले उत्पीड़क बग जमीन के माली जिन्हें जमींदार, भूस्वामी कहते थे । एक मुफ्तखोर बग और था । ब्रिटेन में क्लेर्जी CLERGY कहते हैं । इन्होंने जगह-जगह बग खाल दिए यानी खुलवा दिए जहाँ धन आन लगा ।

- 2 हेररी टी सेंट साइमन 1760-1825
- 3 चार्लस फारियर 1772-1837
- 4 रोबर्ट ओवन 1771-1858

यूटोपियन समाजवादी सेंट साइमन का मानना था समाज सुसंरचित होना चाहिए । वर्तमान व्यवस्था हीता बंद हानी चाहिए मनुष्य की योग्यता और काम का अनुसार उसकी कमाई हानी चाहिए राज्य को चाहिए कि काम धंधे की योजना बनाए और जनता को काम दे । योजना में कृषि क्षेत्र और कारखाना क्षेत्र दोनों हों । समाज में सावजनिक संगठन बने और उ हरे राज्य मर्ता का कुछ भाग मिले । इस प्रकार हम देखते हैं उन्नीसवीं सदी का पूर्वार्ध समाजवाद का समाजवादी विचार का प्रारम्भ है ।

उत्तरी राजस्थान व किसान न जा तैत 1452 म खोया था, यह उसे 18 फरवरी, 1952 \* वापिस मिला 18 फरवरी 1952 न किसान न राजपूत व सामने माचे पर, मुठे पर बठना शुरू किया। गवानर राज में जाट को मना में भरती नहीं किया जाता था। 1939 में मुठ छिडा। भारत सरकार से आदेश आया कि दगी राज्य सना बढाय। उस लाचारी में 1940 म पैदल सना में भर्ती चानू हुई कवलरी में, तापस्थान आदि मे लेमा नहीं था। 1935 से पहन कोई जाट पुनिग मे नहीं था। 1927 तक कोई जाट रेवेयू म नहीं था। 1934 तक कोई जाट जुडिशल म नहीं था। फरवरी 18, 1952 म जाट का जीवन मानवाग्नी बना जब जागीर छतम हुई और राजपूत जाट दानों धरती पर बैठने लगे।

नोट-भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की पहली सभा 26 दिसम्बर 1925 का फानपुर मे हुई थी।

10 अक्टूबर को भारत सरकार न तहा है कि सार्वजनिक धन अब बहुत नहीं बढाया जायेगा। यह ठीक किया। मनुष्य सरकार क लिए और समाज के लिए काम नहीं करता। वह परिवार क लिए और खुद के लिए ही काम करता है। या भय से करते है। सोवियत सघ अब इसी नतीजे पर पहुचा है।

### अमरीका शांति का पक्षधर

अमरीका को विश्वास हा गया है कि सोवियत सघ वास्तव में शांति चाहता है। इसीलिए उसन अब एक बड़ी पहल की है अक्टूबर एक 1951 को उसने कहा है कि छोटी दूर की मार करने वाले धम्बों को समाप्त कर रहा है। और अगर सोवियत सघ तैयार हो जाय तो वह लम्बी दूरी की मार करने वाले जहाजों का हथियारों को नष्ट कर देगा।

## चीन में क्रांति हुई 1949

मुसलमान मगोनिया में भी है। सोवियत संघ व सिनकिंग गणतंत्र में मुसलमान हैं। सोवियत संघ के मध्य एशियायी भाग भी मुसलमान हैं। यह ध्यान में रखने की बात है कि मुसलमान हमेशा मुसलिम एतता चाहते हैं।

दुनिया में कुल देश 166 है। सब ही राष्ट्र संघ के सभ्य हैं। सुरक्षा परिषद है राष्ट्रसंघ का मंत्रिमंडल। सुरक्षा परिषद के 15 सदस्य हैं।

3600 ई पूव 1985 ईस्वी तक 14514 युद्ध हुए हैं। 3600 ई पूव से 1985 ईस्वी तक यानी पिछले 5600 वर्षों में 292 वर्ष शांति के रहे। इन युद्धों में 36 अरब और 40 करोड़ लोग मरे।



## व्यापार का रास्ता

प्राचीन-भारत ने बनाया और इसके बर्तन धाली, कटोरी और दूसरे बर्तन काशी से बनाये ये वार्गे 2500 ई पूव की हैं। और क्षत्र या सिंध नदी की छाटी। लोग खेती करते थे, पशु पालते थे। याद रखो सिंध नदी का क्षेत्र था।

1500 ई पू मे उत्तरी पश्चिमी सीमा से अफगनिस्तान की तरफ से आर्यो न हमला कर दिया। आर्यो के नेता राजा बहलान थे। राजा चुने जाते थे। आर्यो लोग अपन साथ गाय और भेड़ लाये। गाँव बहुत थी और थोडी सी भेसे थे। ये दोना जानवर भारत में बाहर से आये। भारत की नगा घाटी में और बिहार उडीमा होते हुए बगाल में चले गये। दक्षिण में गुजरात, मध्य प्रदेश में चल गये। आर्यो लोगो न गाँव बसाया और खेती करने लगे। आर्यो लोगो ने लोहा बुडा बिहार मे। यह एक हजार वर्ष ई पूव की बात हैं। लोहा निकालने में मे इसमे चीखें बनान में भारत पहले देशों में से है। यह मत भी है कि पहला देश है। पत्थरो

की और मिमट्टी की भट्टी घनाते थे और उसमें लोहा डाल डाले लकड़ी का कोयला भी डाल देते थे। लोहा पिघल जाता था। फिर ठंडा होने पर उसके गाने और छत्र बन जाते थे। लोहे के ज्यादा मजबूत होने के कारण हल के लिए इस लोहे की कुंजी जिसे दूसरे ने कुट्टाड़ी, चाकू, छूरा, वगैरह बनाए। यह भारत का देन है।

रूई— सबसे पहले भारत ने ही रूई उगाई। कपड़े बनाकर निर्यात किये। चीन ने रेशम दिया। भारत ने रूई दी।

भारत ने भस पाली, गाय पाली और हाया पाते। रूस और भारत इन दो देशों ने ये दो जानवर विश्व को दिये।

राजा— ईसा पूर्व की पहली सदी में भारत में छोटे छोटे राजे बन गये। राज्यों के मालिक राजा कहते थे। प्राचीन विश्वास था कि ब्रह्मा नाम का एक ईश्वर है। उसीने सृष्टि बनाई। ब्रह्मा आकाश में स्वर्ग में रहता है। उसने इस धरती पर ब्रह्म प्रति निधि छोड़ रखा है उसे भी ब्रह्मा कहते हैं। ब्रह्मा की सज्ज कहलाते हैं ब्राह्मण लोग को सिखाते थे कि भगवान ने ही वर्ण वर्ण बनाये।

गिनती— गिनती ब्राह्मणों ने बनाई। शतरंज का खेल ब्राह्मणों ने बनाया और राजाओं को सिखाया वर्ण माला जो आज हम गिनते हैं यह भी ब्राह्मणों ने बनाई।

यह जाननी मानी बात है जन जानकारी की बात है कि मोक्ष काममें हम प्राविधिक प्रगति में तीन युगियादी प्रवृत्तियाँ देख सकते हैं। प्रथम विद्युत् शक्ति के स्रोतों में प्राति सर्वोपरि इसका सम्बन्ध वेग के विद्युत्करण से अणु-विद्युत् के प्राति पूण उपयोग से प्रथम भविष्य में ताप नाभिकीय ऊर्जा उपयोग की सम्भावनाओं से है।

रेशमी व्यापार के रास्ते— रेशमी व्यापार के रास्ते सम्यता विस्तार के पहले रास्ते हैं। गहनत का पड चीन म उगा, कब इम पर रेशम का कीड़ा पैदा हुआ, कब उसे मनुष्य 1 देता कब, कब उस रेशम से पहला कपड़ा बना, कुछ पता नहीं है। कम इतना ही मालूम है कि पहला कपड़ा रेशम का था जो आज तक बन रहा है। इस रेशम का बेचने के लिए चीनी व्यापारी रुम सागर के किनारे बसे यूनान और मिश्र पहुंचे। अन्तर्राष्ट्रीयता व्यापार की तरफ यह व्यापार पहला व्यापार था। पहला अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार था। ईसा स ढाई हजार वर्ष पहले की बातें हैं। आज साठे चार हजार वर्ष पहले की बात हैं। यममान बाल म मनुष्य 10 कैमिस्ट्री की मदद से बहुत तरह के कोमल और पतले वस्त्र बना लिए हैं। कुदरत की बराबरी मनुष्य नहीं कर पाया है। वस्त्र की परख करने वाले लोग कहते हैं कि हम हाथ से पोल कर कह सकते हैं कि यह विशुद्ध, कुदरती रेशम है या बनावटी रेशम है।

गर्मी के मौसम के लिए रेशम के कीड़े 10 वस्त्र बनाया। सर्दी के मौसम के लिये, भेड 10 बनाई। ये गर्म और सरद दो कपड़े मनुष्य के आदि काल के कपड़े हैं।

यह कब तक की बात है पता नहीं। भेड कब बनी, गहनत का पड कब उगा पता नहीं। इतना ही जानते हैं ये दो कुदरत की दें मनुष्य के पहले वस्त्र थे। सम्यता के विकास में रेशम 10 पहल की। आज भी कैमिस्ट्री की बारीगरी के सामने निडर और निस्सकोच, रेशम आदर सम्मान के साथ टिका हुआ।

अचम्भा— प्राचीन सम्यता के विद्वानों अचम्भा होता है कि पाच हजार वर्ष पहले, जावा, सुमात्रा सीधापुर आदि द्वीपों म मनुष्य क्यों और कब गया जाखम बयो लिये।



प्रमरीकी राष्ट्रपति सनल्डरोगन न कहा, राष्ट्र एा है दुन  
 का भरोसा नहीं करते क्याकि य ह्यियारबद है। ह्यियार क  
 इसलिए है कि य एक दूगर का भरोसा नहीं करन। प्रमराता न  
 यह महान कथन यह क्या है ? इसलिए रमा है कि तीमरी दुनम  
 क देस निगु ट देग यह कहते हैं और सोचते नहीं यान कि प्रमरीता  
 एर साम्राज्यवादी देस हैं। पू जानादी दुनिया यानी जिहें ह्य  
 पश्चिमी दुनिया रहते है, वे दूरे देगा पर कब्जे की कोसिंग म  
 रहते हैं। महान सत्य यह है कि 1945 के बाद साम्राज्यवाद रहा  
 रहा ही नहीं। दुन की ब व ता यह है कि समाजवादी देग म  
 प्रचार करते हैं।

अविश्वास के इस घेरे को तोडा गया 1985 के 1990 क  
 चीन सोवियत ने नेतृत्व किया अगुवाई की गोबचिच न। जेनवा म  
 पहली अगुवाई की गई 21 नवम्बर 1985 म जेनवा के निर  
 सम्मलन म। उस दिन विद्या का प्रारम्भ हुआ। वह विद्या है।  
 खुलापन।

कूटनीति का सिद्धांत है कि प्रारम्भ स्पष्टता से करा। धीरे-  
 धीरे स्पष्टता की ओर बढ़ो। नया विचार कहता है 'सदैव स्पष्टता  
 सदैव मत्यवादीता' 1500 ई पूव म मिश्र ने सिरिया और किति-  
 स्टोन पर हमला किया। यह विश्व का पहला हमला था। बदीतान  
 का धेन मसीपोटेमिया का एक भाग है।

### मिश्रित अर्थ व्यवस्था

धिर धिर कर हम नहुरूजी की विचार धारा पर घात हैं मब  
 से व्यवस्था है मिश्रित अर्थ व्यवस्था। सरकारी काम, सामाजिक

काम बारउक म मूना काम हैं—कर बिना घनीघारी वा काम हैं ।  
सामाजिक स्वामीत्व किसी वा स्वामीत्व नही ।

प्राथमिकता निजी स्वामीत्व को हो मिननी चाहिए सामाजिक स्वामीत्व के दो बड़े नुसखान हैं प्रथम जगम नीतरगाही वा हाना स्वाभाविक है । नीतरगाही म छोट घरमर धीर बड़े अफमर की भतरावली हा जाएगी । जिम्मवारी एग दूगर पर टारत रहग । बिलम्ब सम्बा हाता जायेगा ।

वस्तु की कीमत मापेट म ही तय हाती है । समाज वा सर-कार तय नहीं कर सकते । भौतिवाद वा जम यानी घनीद्वरवाद वा जम प्रांस में घठारधी सदी में हुआ था । बाबा मार्क्स को काम से ही प्रेरणा मिलती थी । मार्क्स उनीसवी सदी वा व्यक्ति था । भारत म जातिपा 3743 हैं । दुनिया म प्राचीनतम ग्रथ ऋग्वेद है ।

- 1 सिर पर चाटी की जगह घोनी सी, छाटी भी टोपी मत रखो ।
- 2 बुर्जा पहनना बंद करो ।
- 3 दाढ़ी, मू छ की कटाई ऐसी न हा कि हिन्दु मुगलमान की पह-घान हा सके ।
- 4 जहां तक हो सके जीवन शैली को, पोशाक को, बाल कटाई को अंतर्राष्ट्रीय बनाओ । कोट पैंट धीर टाई रगो । या कुर्ता पाजामा रखो ।
- 5 समाज की प्रगति मुदरती हैं । उत्पादन के साधन यानी टेक्ना लोजी तो ऊ थी होगी । मशीनीकरण तो होगा ।

जमीन की बुआई धुरु सात हजार 7000 वष पहले हुई ।

लिखित भाषा धुरु हुई 3500 ई पूर्व मे । 400 ई पूर्व मे मिथ के साग Cooper वा प्रयोग करने लगे ।

40 हजार—चालीस हजार वष पहले मनुष्य दो परों पर बड़ा हुआ था। शरीर की सम्पूर्णता को प्राप्त हो चुका था। 40 हजार वष परिवार बने।

प्रकृति देवी न सोच विचार कर निणय लिए कि एक प्लेनेट Planet ऐसा हो कि जहा जीव खड़े हो सक इस निणय के अनुसार हमारी धरती माता को उचित स्थान पर रखा गया। परन्तु कही-कही बसर पाई गई। फेर बदल किया गया योरप क जनवायु को कई बार बदला गया। आज से 13,000 तेरह हजार वष पहले बहुत ठंडे यारप को कुछ गम किया। बर्फ को पिघला कर उत्तर की तरफ धकल दिया गया। यहा वह बर्फ आज तक है। कुछ जीव बर्फ के साथ चले गए दूसरे मर गए। मरने वाले जानवरो म ममष Mamoths थे। औजारा म सबसे पहले घनूप बाण बने। कुता पहला पालतू जीव था। दूसरा जीव बकरी था। ई की पूव 400 म ताम्बे का प्रयोग मिथ में शुरू हुआ। 400 ई पूव स धातु युग शुरू हुआ। धातु युग से बग शुरू हुए, क्योंकि सामान बचने लगा जा मजदूरी करने वाले किसान को लिया जा सक्ता है।

## इतिहास

कुदरत का प्रकृति का, नेचर का इतिहास और समाज का इतिहास। प्रकृति का प्रारम्भ नहीं। जिसका प्रारम्भ नहीं, उसका इतिहास नहीं। धरती माता प्रकृति मे स निकली। जिसका प्रारम्भ है उसका इतिहास है। धरती का जन्म और वास्तविक और परिवर्तन पर जीव का जन्म। लाखो वष के जीव विकास की सम्पूर्णता पर मानव का उदय। मानव का जन्म उस काल से माना जाता है जब वह एक दिन दो परों पर लडा होकर सीधा चलेने लगा। एक

दिन ऐसा आया कि मानव दो टांगों पर खड़ा हो गया और अगली दो टांग उसके दो हाथ बन गए। उन हाथों से वह झाड़ी के बेर तोड़ने लगा। यह कब की बात है, केवल अनुमान है। यह अनुमान लग लगभग सच है। दस लाख वर्ष पहले मानव ने झाड़ी के बेर तोड़े थे। साठी उठाई थी, परन्तु फल के दूमरे जीवा को मारा था। परन्तु फल अपने मनुष्य भाइयों को भगाया था इसलिए कि भोजन सामग्री थोड़ी थी। निवास स्थान छोड़ा था। भोजन और निवास स्थान सीमित रहे हैं और सीमित रहेंगे। मनुष्य जीवन अभाव में बीता है। अभाव हमेशा रहेगा। मारे अतिरिक्त में, असीम अतिरिक्त धरती माता एक ही है। दूसरी नहीं है, धरती माता नवगा मास्टर क्लाम रूम में टांगते हैं गाले का मेज पर रखते हैं। वस यह एक ही है।

हल सबसे पहले मसापेटेमिया में बना-चार हजार वर्ष पहले कागज बनने से पहले किताने मिट्टी की बनती थी।

खगोल विद्या का विकास मसापेटेमिया यानी इरान में हुआ। उहाँ 365 दिन का वर्ष, 30 दिन का महीना, 7 दिन का सप्ताह घंटे, मिनट बना लिए थे।

## साम्यवाद

मास, अगस्त और सेप्टेम्बर, ये तीनों युग पुरुष है। बहुत ही सूक्ष्म बूझ वाले विचारक थे। पर ये तीनों ही भूगोल के जानकार नहीं थे। धरती माता एक ही है, उस पर भी पहाड़ हैं, चार भागों में से तीन पर पानी है। बढती जन संख्या, घटती धरती। सीमित साधना में साम्यवाद सम्भव नहीं। मानव सदैव अभावों में रहेगा।

राज्य हमेशा रहेगा, प्रबंध की प्रशामन की जरूरत हमेशा रहेगी। जनसंख्या सीमित हो निर्णय लेना पड़ेगा। इस नियंत्रण के लिए और सीमित सामग्री के वितरण के लिए कोई मंत्रिमंडल होगा।

सीमित सामग्री होगी तो व्यापार होगा। व्यापार होगा तो वस्तुओं के भाग भी होंगे। मूल्य निर्धारण होगा, मूल्य नियंत्रण होगा। स्पष्ट है कि मांग और पूर्ति के मत्तुलन से होगा। निर्यात सम्पत्ति रहेगी, व्यापार रहेगा। यानी खुला व्यापार रहेगा। व्यापार और बड़े कारखाने समाज के हित होंगे। शोषण नहीं होगा। शापण विहीन समाज होगा। सामान्य बचने वाले गाड़ बने रहेंगे। विवाह प्रथा और परिवार रहेगे।

याद रखो मनुष्य परिवार के लिए काम करता है और करता रहेगा। समाज के लिए नहीं करेगा। स्टेलिन और लेनिन जैसे अकेले प्रशासक नहीं होंगे।

नोट भारत में प्राचीन काल को सतयुग कहते हैं मध्ययुग को द्वारपर और आधुनिक काल का त्रेतायुग। यह सूठा प्रचार है। प्राचीन काल तो अंधकाल था, मध्य युग था गुलामी का युग और गुलामी के व्यापार का युग आधुनिक काल है मुक्ति संघर्ष का युग।

क्या ऐसी सामाजिक व्यवस्था बन सकती है कि मनुष्य वित्त मैनेजर के काम करेगा। क्या जीवन होटल जसा और होस्टल जसा बन सकता है? नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। बाबा माप के समय में और लेनिन के समय में टेक्नोलॉजी पर मशीन पर बहुत भरोसा किया जाता था। विज्ञान पर कमीस्टरी पर विश्वास किया जाता था। जमीन तो सीमित है पर खाद की सहायता से अन्न उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। पर हम भूल जाते हैं कि धरती माता को मिट्टी के बिना कुछ नहीं हो सकता।

कहा जा सकता है कि राज्य विहीन Stateless Society की योजना थोड़ी कल्पना है ।

क्या सोवियत संघ का समाजवादी विचार की तरफ विकास आया । सोवियत समाज परिवार की सीमाओं में, कबीला और यूनानियों की सीमाओं में, मजहबी सीमाओं में आने के लिए तैयार आया है । जातीयता और क्षत्रीयता मौका मिलते ही, ढील देखते ही सिर उठा लेती है ।

परिवार रहने, जतीयता रहनी, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवादी रहने ।

सकीशर्मा में ममता है व्यापकता में ममता विहीन कारी कृतकृत्यता है ।

सीमित साधनों में, सीमित धरती पर, साम्यवाद की रचना असम्भव है ।

सीमित साधनों के आवंटन के लिए प्रशासन की आवश्यकता सिद्ध हमेशा रहेगी । अनुशासन की आवश्यकता हमेशा रहेगी ।

मुसलमानी राज्य की स्थापना 1186 में लाहौर में हुई थी ।

कनफूसन-551-479 ई पूर्व में चीन का मत या दार्शनिक था जिसने अपना धर्म चलाया ।

हीगल-द्वैतत्व पद्धति का विवरण किया ।

कमाल अतातुर्क-1818 1938 आधुनिक टर्की का निर्माता

था । राष्ट्रपति बना टर्की से यूनानियों को निकाल दिया ।

रुजवल्ड-1882 1945 चार बार अमरीकी राष्ट्रपति



## मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता

इसाई, बौद्ध और हिन्दु जब कम्युनिस्ट बन जाते हैं तो धर्म से उनका सबंध पूरा वा पूरा टूट जाता है। पर तु मुसलमानों के विषय में यह बात नहीं है। बहुत से कम्युनिस्ट नमाज के समय पार्टी की मिटिंग से चले जाते हैं और पश्चिम की तरफ मुंह करके ऊपर नीचे होने लगते हैं, कान में उगली डाल लेते हैं और कुछ रागिनी सी करते हैं। धोती का आधा भाग खोल लेते हैं। धोती को वे भारतीय पहनावा मानते हैं पायजामा नहीं खोलते हैं।

सोवियत संघ के बहुत बड़े भाग में मुसलमान रहते हैं स्टैलिन के समय में वे देश भक्त हो गए थे। मक्का और मदीना जना छोड़ दिया था। मस्जिदें मंदिरों बन गई थीं। पर तु गाबचिब के आन के बाद उन्हें डिलाई मिल गई। मंदिरों मस्जिद बनने लगे। मक्के और मदीने की तीर्थ यात्रायें शुरू हो गईं। मुसलमान जहाँ भी माइनोरिटी में हैं, अल्प संख्यक हैं, वे देश भक्त नहीं हैं। सब पश्चिम की तरफ देखने हैं और जीवन का उद्देश्य बना लत है कि

वे कभी अरब न तीर्थ स्थानों का दर्शन करेंगे। बौद्ध और इसाई भी विश्व व्यापी धर्म हैं। परन्तु वे हिन्दुओं की तरह उदार हैं। कोई तीर्थ स्थान नहीं है। उनकी कोई धर्म यात्रा नहीं होती। वे रोम नहीं जाते। बौद्ध कभी गया नहीं जाते। सोवियत संघ में छ मराठ से थोड़े ऊपर मुसलमान हैं। सोवियत संघ के मध्य एशियायी भाग में छ गणतंत्र हैं। उन गणतंत्रों में से तीन न कम्युनिस्ट पार्टी पर रोक लगा दी है। पिछले पाँच वर्षों में बहा पाँच हजार मस्जिदें खुल गई हैं। फारसी, अरबी के अध्ययन के लिए मदरसे खुल रहे हैं मुस्लिम पार्टियाँ बन रही हैं। इस्लाम का प्रचार कर रही है। कम्यूनिज्म को इस्लाम विरोधी बता रही है। उत्सवों पर कुरान के मंत्र बोले और गाए जाते हैं। कुरान की कापियाँ मुफ्त बाँटी जाती हैं। सादी अरब ने इन दो वर्षों में कुरान की पन्द्रह लाख प्रतियाँ बाँट दी हैं। भारत के मुसलमानों में धार्मिकता बढ़ती जा रही है। जलसों में शफ़त सोगंध फारसी अरबी में शुरू कर दी है।





## उत्तरी राजस्थान के जागीर विरोधी नेता

बीकानेर मुक्ता प्रसादजी वकील और रघुवर दयालनी गायन हनुमानसिंह दूधवा खारा ।

शुभ्रू नू गारीर निवासी शोधरी नसरामजी, देवरोज निवासी शोधरी प नसिंहजी बहुत ही लगनशील नेता थे बहुत दूरदर्शी थे । उनका बहुत आशयें थी, पर वे बिमार हाकर जवानी में ही मर गए । उन्होंने नई बात यह की कि 1932 में उन्होंने अखिल भारतीय जाट महासभा का अधिवेशन शुभ्रू नू में बुलाया । उस अधिवेशन में एक नई बात जो हम को बताई गई और दिखाई गई थी वह यह थी सारे राजपूनी राज्या में वस दो जाट सिद्धि थे । वे थे उत्तपुर का हरीसिंह जो आगरा से पढकर आया था । राजस्थान में उन भरती नहीं किया गया । दूसरा जाट था रामनद्रजी जा जाट म्बून सय-रिया में पढे थे । बाद में बनारस में पढे ।

यह बात भी जाननी चाहिए कि चूह जिले का कोई जाट शुभ्रू नू नहीं गया । जा इने गिने जाट वे उन पर महाराजा न राई

लगा दी थी। हा, बीमार ने गुप्तचर वहा बहुत थ। एफ गुप्त  
 चर मरा गस्त था। जाट स्कूल सगरिया मे पढ बना था। गरीब  
 राजपूत का लडका था। उमने मुने बनाया कि हमन तुम्हागे हिस्-  
 त्री लिख ली है। मेरे पीछे गुप्तचर 1938 के अगस्त तक रह।  
 उन समय बीकानर की मेना और पुलिस मे गुप्तचर मे काई जाट  
 नही था। पहना जाट पुलिस मे 1935 में आया। पहला जाट  
 मेना में 1941 में आया जब महायुद्ध चल रहा था। वह जाट था  
 सहीराम जा जाट स्कूल का छात्र रह चुका था।

राजपूत राज्य हात हुए भी थु मूनू के राजनीति मे आकर  
 जाट महासभा का अधिवेशन कर सके क्योंकि जयपुर राज्य में पुलिस  
 का महा निरीक्षक एफ अग्रेज था। उनका नाम था अफ अम यग।  
 महाराजा उस समय छोटा था। माइनर था। सीकर मे भी एक  
 अग्रेज था। वहां भी 1933 म जाटो ने एक बहुत बडा हवन किया  
 तीन दिन तक घी आग में जलाने रहे। हवन के बहाने उहोंने  
 जागीर विरोधी ठाकुर विरोधी बातें की। जागीरदार और राजपूत  
 एक ही बात थी। हर राजपूत के जमीन थी। किसी जाट के पास  
 जमीन नही थी। ठाकुर से लेकर खेती करता था। हर राज राज-  
 पूत भूमि वाला। हर जाट भूमिहीन। दूसरी बात के साथ जाट  
 पर दो रूकावटे थी। राजपूत के सामने जाट जमीन पर ही बैठ  
 सकता था। माचे पर, भूडे पर नही। वह अपन नाम के दूसरे  
 हिस्से पर सिह नही लगा सकता था।

में पहना जाट था जो 'सिंह' लगान लगा। मुझे ठाकुर समय  
 कर, एक अग्रेज अफसर ने ठाकुरो की स्कूल मे मास्टर लगा दिया।  
 उस अफसर को महाराजा ने स्टेट से निकालने चले जाने का हुक्म

दिया । भारत के वायस राय ने बीच बीचाव किया । गावू के एग  
न दोड-धूप की ।

साम्प्रदायिकता से मुक्ति का एक ही माग है वह है रोगर  
वाद "धर्म निरपेक्षता" ।

धम को एक अघविश्वास मानो । मंदिर जाना छोने ।  
मस्जिद जाना छाडो । धर्म मानना ही बद करो ।

धम मानना और धम निरपेक्ष होना रभव नहीं है । मानव  
महात्मा नहीं हो सकता । मानव महात्मा गांधी कभी नहीं बन पाएगा  
जहा धम होगा, वहा कट्टरता होगी । धम अघ विश्वास है और  
अघ विश्वास कट्टरता से मुक्त नहीं हो सकता । यह जीवन नौ  
वास्तविकता है । यह उपदेश काम नहीं करेगा ।



## विषय का परिचय

विषय नया है, इस विषय पर अब तक कोई पुस्तक नहीं है। कौन किसने कैसे, क्या आदि पर किताबें हैं। पर कथ पर कोई किताब नहीं है। और मूल बात यह है कि सीखने के लिए, जानने के लिए समझने के लिए पहला मूल मंत्र है, 'कब' इसी का नाम त्रिपि शास्त्र है।

आप छात्र है प्रशासनिक सेवा की नौकरी की तैयारी कर रहे है, बनक बनना चाहते है, मास्टर बनना चाहते है, तयारी करनी पडती है। लिखित परीक्षा होती है, साक्षात्कार होता है। सामान्य ज्ञान की तैयारी करनी पडती है। जो विषय आप सीखना चाहते है उन विषय के प्रारम्भ पकडो। वह शुरू कब म होता है। उसके बाद त्रिपियों का क्रम बना लो। क्रम विस्तृत भी हो सकता है और सक्षिप्त भी।

साम्राज्यवाद और कम्युनिजम दोनो अभिष्यक्तिया छवि

विभाजित बन गई थी। पर वस्तु स्थिति यह थी कि न की कहीं नज्ज  
जयवाद है और न कहीं कम्युनिज्म की स्थापना कौरी कपना है।

मार्क्स और अंग-स दानो भूल गए कि हमारी पृथ्वी के बरह  
कहीं भूमि नहो ह। विश्व मे आज भी जमीन की कमी ह। स  
परसा क्या स्थिति होगी। जनवद्धि रोकने का आदेश कोन को  
पालना कराने के अधिकारी कोन ह। साम्यवाद की व्यवस्था क  
नहीं आएगी। अभाव की स्थिति हमेशा रहेगी। मार्केट होगा स  
चीजो का भाव हमेशा मार्केट तय करेगा। मार्केट का संचालन होगा।  
नोट - रूसी राष्ट्रपति और सोवियत राष्ट्रपति मे क्या अंतर ह।

राजस्थान मे जागीर उन्मूलन कानून लागू हुआ। 18 फरवरी  
1952 मे। 1465 और 1952 के बीच उत्तरी राजस्थान के  
किसान और जाट निचली श्रेणी मे रहे।

1935 तक कोई जाट पुलिस मे नहीं था। 1927 तक कोई  
जाट रेवेन्यू विभाग मे नहीं था। 1934 तक कोई जाट बुग्गि  
नहीं था। 1949 तक जाट पक्का मकान नहीं बनाता था कहता  
था "साधु की खोवे चली और जाट की खोवे हेनी" पहला ब  
नौकरी मे आया 27 जून 1919 मे। मुखरामजी थे।

सत्तार के इतिहास मे सवधानिक शासन शुरू हुआ 15 म  
1215 मे इंग्लड के बादशाह से ऐसे नियम पर हस्ताक्षर करवा  
ये। इसे मैगनाकार्टा कहते हैं।

बिज ऑफ राइट्स 1689 मे हुआ। मैगनाकार्टा का सं-  
धानिक नियम पास हुआ।

यूरोप मे जन जागृति 1453 मे, ग्रिम के विज्ञान कॉन्से-  
नोपस मे रहत थ। उस पर 1453 मे मुगलमानों का अक्षितार हो

या। ग्रीस के रंग विद्वान पूर्वी यूरोप को यानी कोन्स्टेटीनापल को छोड़कर पश्चिमी में इटली आदि को चले गए। उन्होंने ग्रीस के विद्वानों का जिक्र किया। उनकी विद्या का भी जिक्र किया। इस प्रकार यूरोप की विद्यायें शुरू हुई 1453 में। विश्व की पहली गणतन्त्र क्रांति हुई 1789 में। अमरीका की स्थापना हुई 1783 में।

गांधीजी को कत्ल किया 30 जनवरी 1948 में। साम्यवादी चीन की स्थापना हुई 3 अक्टूबर 1949 में। भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्र होया।

26 जनवरी 1950 में भारत ने गणतन्त्र बनने की घोषणा की। स्टेलिन की मृत्यु 5 मार्च 1953 में हुई।

बिना तेन और बिना ऊर्जा के पहला भू-उपग्रह घूमा, 4 अक्टूबर 1957 में सोवियत संघ ने घोषणा की।

श्री नहरू का अंतकाल 27 मई 1964 में। विस्मय चर्चित अक्टूबर 1965 में। चीन राष्ट्र सच का सदस्य बना 1971 में। अफगानिस्तान गणतन्त्र बना 1976 में। चीन का प्रधानमंत्री मरा चाऊ एन लाई 1975 में। सोवियत संघ और भारत में दोस्ती दोहराई 1976 में। रोनाल्ड रीगन अमरीकी राष्ट्रपति और तोरक युद्ध की शैतानी हुई 1981 में। चीन ने माओ के सिद्धांत छोड़ा 1982 में। आतंकवादी स्वर्ण मंदिर में घुसे 1984 में। आतंकवादियों को पवित्र स्थान से निकालने के लिए सेना भेजी 1984 में भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या 1984 में हुई। दो देशों के बीच में विश्व की पहली लड़ाई 490 ईसा पूर्व में हुई। पाकिस्तान विद्रोहियों की मदद कर रहा है। सऊदी अरब भी बहुत मदद करता है, विद्रोहियों की।

दो देशों के बीच में होने वाले युद्धों में सबसे पहला युद्ध हुआ

फारिस और ग्रीस के बीच में । यह मराथीन का युद्ध कहना है ।  
जो 490 ई पूव में हुआ ।

ग्रीस यूरोप में है और फारिस पश्चिमी एशिया में । परन्तु  
दोनों एक दूसरे की सीमा पर है ।

हर आदमी अपना खाता है, हर आदमी चाय पीता है, न  
जिकता बढ़ाने में चाय का पहला स्थान । चाय कुदरती रूप से सबसे  
पहले असम में उगी । निजी खेती निजी व्यापार निजी सम्पत्ति  
कभी समाप्त नहीं होंगे । भूमि सीमित है, जनवृद्धि असीमित है ।

मेरे अभिन मित्रों के नाम हैं, कानदान और लक्ष्मीदान दोनों  
भाई हैं । 1927 में मेरे मित्र हुए । कानदान का बेटा है नरसिंह  
दान—मैडिकल डाक्टर है ।

मेरे तीसरे मित्र का नाम है, चतुरसिंह शुभू नू जिले में बल  
तावर पुरा उनका गांव है ।

जीवन के दो आधार हैं—हवा और पानी । हमें हवा और  
पानी सबसे पहले चाहिए । सात किचोमीटर तक हवा है, धरती के  
तीन गुणा अधिक पानी है । ये दोनों चीजें खत्म नहीं होती, इन  
दोनों चीजों का प्रतिक्षण नवीनीकरण होता है । भोजन का हर वर्ग  
नवीनीकरण होता है कुदरत की वृत्ता है । प्रकृति छोटी से बड़ी हुई  
है । विकसित हुई है । समाज भी जगलीपन से निकल कर साम  
हुआ । कुदरत न विकास करना बंद कर दिया है । जमीन और  
अधिक नहीं माएगी । अगवादी बढ़ेगी, भविष्य भयकर और भया-  
नक है ।



## अहिंसा को मान्यता

अंतर्राष्ट्रीय संधि में अहिंसा को मान्यता मिली 27 नवम्बर, 1986 में। राष्ट्रपति बनते ही गोबर्धेव ने शांति अभियान छेड़ दिया। सोच विचार के बाद उसने प्रथम दौरा भारत का ही किया।

जो संधि हुई उसके दस सिद्धांत हैं—

- 1 शांतिपूर्ण सह अस्तित्व
- 2 मानव जीवन सर्वोपरि है।
- 3 सामाजिक जीवन का आधार अहिंसा हो।
- 4 भय और सदेह की जगह विश्वास और समझावन हो।
- 5 प्रत्येक देश को आर्थिक और राजनीति व्यवस्था की छुट्टी ही।
- 6 सेना पर होन वाला व्यय देश के विचार पर हो।
- 7 प्रत्येक व्यक्ति का व्यापक विकास हो।
- 8 मनुष्य जाति का पूरा ध्यान विश्व विकास पर हो।
- 9 डराने धमकाने के स्थान पर व्यापक सुरक्षा हो।
- 10 अहिंसा के लिए निरस्त्रीकरण आवश्यक है।



## तारक पुढ

सोवियत संघ को नष्ट करने के लिए अमरीका ने आतंकवादी सैनिक ठिकाना बना लिए थे। यह बात 1983 की है। सोवियत संघ ने इसके विरुद्ध जन मन नैपार किया। यह योजना फिर बन म ही छोट दी गई।

## मुद्रा

ऐसा समय कभी नहीं आया कि मुद्रा के माध्यम क बिना ही चीजों की बदला बदली होने लग जाय। मुद्रा रटेगी, मार्केट और हाट बाजार रहेंगे। माघन हमेशा सीमित रहेंगे, भूमि सीमित है।

मार्क का ज म 5 मई 1918 म हुआ था। मृत्यु हुई 14 मार्च, 1883 म।

अहिंसा परमो धर्म यह सिद्धांत भारत की ओर स विश्व से देन है, वरदान है।

एक चिर तटस्थ राष्ट्र एक आदर्श राष्ट्र क्या संसार म कोई ऐसा देश है जिसने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया। और उस पर किसी ने आक्रमण नहीं किया। वह चिर काल से टनस्थ बना रहा है। उस देश की एक विशेषता और है वह कभी गृह युद्ध नहीं हुआ। एक तीसरी विशेषता भी है, वहा नोगी म आपसी हिंसा नहीं है। वहा कोई कत्ल का बेस नहीं हाता। वहा हमेशा मगतन रहा है। वहा सम्पाट कभी नहीं रहा वहा हमेशा लोतन रहा है। वहाँ अधिनायतवाद कभी नहीं रहा हर प्रकार से एक आदर्श राष्ट्र है। दुनिया म 165 देग है, इनम राष्ट्र संघ के सदस्य हैं 160 देग। जा पाच देग बचे के नाम मात्र के देग हैं। समुद्र म बसे छोटे देग हैं जिनम किसी की भी जनसंख्या एक लाख से ऊपर नहीं है। पर

उस देश की जनसंख्या एक करोड़ के घास पास है। 165 देशों की घावादी पाच घरव हैं।

यह देश है स्विजरलंड। इसकी राजधानी का नाम है जेनवा। मिगीग तीन दिन चली। एक दिन का अधिवेशन घाठ घटे का था। कुल समय लगाया गया 24 घटे। दोनों राष्ट्रपति पूरे माहित्य स मुमज्जित। दोनों म स हर एक के बीसियों सहायक और विशेषण। घास आदचय नहीं करते कि दोनों विश्व की शीर्षस्थ शक्तिया आखिर क्या किया ? साराग निकाला।

- 1 युद्ध जीने नहीं जा सनते घत युद्ध नहीं होने चाहिए।
- 2 दोनों महाशक्ति वर्ष में एक बार घवश्य मिलेगी।
- 3 अच्छा हो दो घर मिले।
- 4 सनिक शक्ति म ऊ चा होन की कोणिस नहीं करेंगे।
- 5 8 जनवरी 1985 मे हुई घार्ता पालन करेंगे।

## 8 जनवरी 1985 के निर्णय का महत्व

घमरीना ने 1983 मे निणय लिया कि आकाश मे बाह्य अंतरिक्ष म Outer space आउटर स्पेस मे किसी आज्ञात स्थान पर सैनिक अड्डे बनाएगा। सोवियत संघ की क्षमता नहीं है कि अंतरिक्ष मे हमारी सेना को दुब लेगा। इसम यह निर्णय भी लिया गया कि अणविक हथियारों के परीक्षण बंद किए जाएंगे जिससे कि इन हथियारों की मार की भयकरता से बचा जा सके। इन देशों के बीच बनी 1962 की हाट लाइन को और अधिक तीखा बनाया जाय जिससे कि बातचीत की कुशलता बढ सक दोनों शक्तियों के बीच सम्मेलन की नियमित तीक्षण की जाएगी।

एक बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि रूसी भाषा और अंग्रेजी भाषा एक दूसरे के यहा पढाई जाएगी।

बहुत ही महत्व की बात यह हुई कि आजाग म बनन वाली अमरीकी पीजी ठिकाने रूख गए । सोवियत संघ न अमरीका को बताया कि सोवियत संघ के पास भी यह जानकारी है कि वह ज़रूरी ही आजाग म सनिक ठिकाने बना सरता है ।

सोवियत संघ ने अपन प्रयोगों से विद्वय विनाग की सम्भावना को मिटाया शांति के लिए यह प्रथम प्रयत्न था ।

दसियों शिसर वार्तामा मे यह पहनी वार्ता थी । इग शिसर सम्मेलन से अतरिक्ष म बनने वाले सनिक ठिकान बंद हुए । सोवियत संघ अमरीका को यह बात जचानी कि अजर आजाग म सनिक ठिकान बन गए तो वे मिटेगे नही । एक दूसरे को पता नही लगेगा कि किसका सनिक ठिक ना कहा है । इन ठिकाना के बनन के बाद दोना महाशक्तिया को पता ही नही लगेगा कि किसके ठिकाने कहा है । अविध्य म दाना देश संधि नही कर पायेंगे कि इन आजागीय ठिकानो को नष्ट किया जाय । एक दूसरे के ठिकानों की जान नही हो पाएगी कि दूसरे हिस्सेदार अपने ठिकान बंद किए कि नही । धरती सीमित है पर आकाश सीमित नही । कहा और कस पता लगायेंगे कि दूसरा क्या कर रहा है । संधि की शर्तों की जांच नही हो सकेगी । अमरीका मान गया क्योंकि सोवियत संघ न अमरीका को जचा दी कि वह पीछे नही है । एक डाल-डाल है ता दूसरा पात-पात है एक डाली पर है तो दूसरा पत्तो पर है । हम अजरी सुधारने की कोशिश करते हैं पर हिन्दी सुधारने की वाणिग नही करते । एक टीचर हिन्दी का एम ए है । ग्यारहवीं क्लास को पढाता है । क्लास मे हिन्दी यो बालता है, मेरे को तो इस बारे म पता नही । तेरे को पता हो तो मेरे को जानकारी दे । इसी प्रकार हमारे को, तुम्हारे को बोलता है । हिन्दी पास मास्टर को पूछता है

मास्टरजी आप शीर्षस्थ शब्द बोर्ड पर लिखो। वह गलत लिखेगा। बाद में मुझे झोझना देता है कि आपका उच्चारण ठीक नहीं था। इस पर मैं कहता हूँ कि उच्चारण को मत देना। जनता उच्चारण गलत करेगी पर तुम उनसे बाले हुए को सही लिखोगे। उच्चारण को कभी मत देखो आपन अगर सीखा है वही लिखो। सही लिखना सीखा। सही मात्रा में, सही सयुक्त अक्षर सीख कर सही लिखो। स्पेलिंग आप के द्वारा दिमाग में चित्रित होते हैं। उही चित्रित शब्दों को लिखो। उच्चरित को छोड़ा चित्रित लिखो।

वर्तमान विश्व शांति का पहला प्रयत्न नवम्बर 1985 में हुआ था, दो महा शक्तियाँ व वीच में। स्वीजरलैंड की राजधानी जेनेवा में। स्विजरलैंड सड़ और उसकी राजधानी जेनेवा सदा स शांति-स्थल रहे है।

### साधन सदा सोमित रहेगे

धन विराध हमसा रहने। साईस और टेक्नोलोजी सदा ऊची होती जायेगी। सधन सदा रहेगा। प्रगासन सदा रहेगा। कारण स्पष्ट हैं। भूमि सीमित है। कृषि क्षेत्र सीमित रहेगा।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पहली मिटिंग वानपुर में 26, निसम्बर 1925 में हुई थी। महात्मा गांधी की हत्या 30 जनवरी 1948 में की गई थी।

नोट हत्या का दिन वही वही 31 जनवरी मिलता है। पर सही है 30 जनवरी 1948।

भारत में पहली कम्युनिस्ट सरकार केरल राज्य में घनी थी

( 145 ) यह कब की बात है/बी० मालसिंह

1957 में दो वरस के बाद इस कम्युनिस्ट सरकार का डिकमिशन कर दिया गया। अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। सीमाविवाद की बात थी। चीन बहुत बड़ा देश है दुनिया के चौथे हिस्से की धारवादी चीन में है। जानने का बात है कि वह एक कम्युनिस्ट देश है जिसे भूमि बढ़ाने का सीमा क्षेत्र का लोभ लालच नहीं हाना चाहिए। पर देशाहंकार से मुक्ति हर कम्युनिस्ट को नहीं मिलती। मेरा घर, मेरी जमीन मेरा देश प्रतिस्पर्धावादी विचार पीछा नहीं छोड़ते। लोकमत के दबाव से देख कर चीन रुक गया पर विवाद अस्त क्षेत्र चीन ने नहीं छोड़ा। विश्व व्यापी साम्यवाद की स्थापना सदिग्ध है। पाच महाद्वीपों में 165 देश हैं। सारी जमीन पर कब्जा हो चुका है। साधन सीमित सकुचित होते जा रहे हैं।

राजनीतिक प्रचारों में साम्राज्यवाद की बुराई होती है। वस्तु स्थिति यह है कि साम्राज्यवाद कहीं है ही नहीं। सत्तार में 165 देश हैं। किसी का भी किसी पर राज नहीं है। सबसे बड़ा निगाम है संयुक्त राज्य अमेरिका। उसे अंग्रेजी में सक्षप्ट्यू एस ए कहते हैं। कई देश अमेरिका के हैं और न कभी रहा है। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, हालड, बेलजियम आदि किसी के पास कोई उपनिवेश नहीं है। उपनिवेशवाद का नारा भी निराधार है।

कम्युनिज्म की बुराई भी एक निराधार बुराई है। कम्युनिज्म कहीं नहीं है। कोई भी देश इसकी स्थापना में लगा हुआ नहीं है। सब जान गये हैं कि कम्युनिज्म की स्थापना असंभव है। भूमि सीमित होती जा रही है। सीमित भूमि, मनुष्यों, पशुओं और पक्षियों का पेट नहीं भर सकती। जब मिट्टी ही नहीं होगी तो भोजन खत्म कहा से, किससे निकालेगा जन संख्या पर नियंत्रण कब

होगा, कौन कराएगा, नियन्त्रण का आदेश कौन निवालेगा । सब बातें भूख मरने आदमी कर सकते हैं । भूख मरने की स्थिति आ सकती है, तो सामाजिक अनुशासन बिगड सकता है । स्थिति लगभग ऐसी ही रहेगी, जैसी आज है । सीमित साधनों में सीमित भूमि पर साम्यवाद असम्भव है ।

## संसार

जिसे हम संसार दुनिया World कहते हैं उसके तीन मुख्य क्षेत्र हैं— प्रकृति, समाज और विचार Nature, Society and Thought संसार में पहली हडताल 1831 में हर्ष फ्रांस में लिम्बोन नामक नगर में किसी उद्यम के मजदूरों ने यह हडताल की । मजदूर नामक वर्ग का उदय 19वीं सदी के आरम्भ में हुआ । पहले ब्रिटेन में और फ्रांस में, फिर बेल्जियम में दूसरी हडताल 1834 में हुई ।

सत्ता, सम्पत्ति और स्वामिमान

PROPERTY, PRIVILEGE AND POWER



## किराया कानून तथा आवास विकास

अनक देगों में किराया नियंत्रण कानून द्वितीय महायुद्ध के दिनों में लागू किए गए थे। महायुद्ध के दौरान मकानों की कमी हो गई, महंगाई बढ़ गई और किराए पर मकान मिलना मुश्किल हो गया था। इस कानून का मूल उद्देश्य गरीब नगर निवासियों को लोभी मकान मालिकों के संरक्षण करना था। पर धीरे धीरे इस कानून के कारण बड़े शहरों में किराये पर देने के लिए मकान बनवाना कम हो गया। योग किराया कानून से बचने के अनेक रास्ते निकालने लगे। पगड़ी का रिवाज सर्वव्यापी बन गया। मकान मालिकों ने मकानों की मरम्मत करवाना छोड़ दिया जिससे मकानों की हालत खस्ता हो गई, उनकी उम्र घट गई और किराएदारों पर किराए के अलावा आवश्यक मरम्मत का भार भी बढ़न लगा। अब बम्बई जैसे शहरों में हालत यह है कि पुराने किराएदारों द्वारा देय किराया इतना कम है कि गृहकार या रॉरपोरेशन टक्स प्राप्ति मिता कर अनक घरों में मकान मालिकों को किराए की आमतो से

अधिक टैक्स देना पड़ता है। यद्यपि मकानों व जमीन के मूल्य घाम मान छूने लगे हैं। पर यह मकान मालिकों के लिए एक खयाली राहत भी नहीं है क्योंकि वे मकान खाली होने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। घने शहरों में अब मकान खाली कराने के लिए किराएदार को माटी मोटी रकम देनी पड़ती है जिसकी जितनी सम्झौता बार्ता करवाने में दलानों की चादी बनने लगी है। एक दूसरा प्रभाव इसके कारण अपर भूतियों का रोजगार पतन भी है, क्योंकि मकान मालिक अब अदायत में आन व बढ़ते इन गिरावों की कारण में आत हैं। ये गिरावें अधिकतर राजनीतिक संरक्षण में पलत पुलिस से माठ गाँठ रखते व लठेठों व गुण्डों के बल पर मकान खाली करवा लेते हैं। घनवानों के अपहरण की जितनी घटनाएँ आज प्रसवारों में छप रही हैं उनसे कई गुना अधिक मकानों की खबर खाली करवाने की घटनाएँ हो रही हैं जिनका अति अधिकतर न प्रसवारों की घिनती में होता है न प्रसवारों की सुखिया में।

### सरकार को भी घाटा

किराए को असांस्कृतिक व अव्यवहारीक स्तर पर स्थिर कर देने से सरकार भी घाटे में है। स्टैम्प ड्यूटी, सम्पत्ति कर भायकर, भेटकर आदि सब की उगाही कम होती है। काना घन, पगडी तथा ऊपर के किराए के माध्यम से बढ़ता जाता है। सरकारी सम्पत्ति तो कौठियों के दाम किराए पर चलती है। राजस्थान में ही देवस्थान विभाग की सम्पत्ति का किरा करों का रूप बढ़ सकता है। जयपुर के बाजारों की दुकानों के किराए की वृद्धि से ही चुंगी पूरे राजस्थान में पूर्णतः खत्म की जा सकती है। सरकार व जनता सबकी बाजार की शक्तियों को दबाने का सामियाजा भुगतना पड़ रहा है।



“अदालतों में भी जितने मामले लम्बमान हैं उनमें किराए कानून सम्बन्धी मामलों की प्रतिशत काफी बड़ी है। ममाज का एक भाग दूसरे में अप्रिय रिश्ते में उलझा हुआ है। नागरिक जीवन अस्वस्थ व कलहमय हो रहा है। लोग किराए पर देने व लिए मकान अधिवाशत नहीं बनाने। आवासन समस्या गहराती जा रही है। सरकार त्रिशकु की तरह कोई भी व्यापक सुधार करने में असमर्थ है। अपने ही कानून द्वारा स्थिति से निपटने में सर्वथा असमर्थ है।”

ऐसा नहीं है कि मालिक मकान व किराएदार दो अलग अलग वर्गों में आर्थिक वर्ग हों। बहुत से मालिक मकान कमजोर आर्थिक स्थिति में होते हैं व कई किराएदार धनवान भी होते हैं। कई विधवाओं अल्पायु के बच्चों व सेवानिवृत्त लोगों की जीविका का एकमात्र साधन मकान किराया होता है तथा बहुत से किराएदारों के अपने मकान होते हैं जिन्हें वे दूसरों की किराए पर रखते हैं। सरकारी अफसरों व सार्वजनिक उपक्रमों के कई अधिकारी हल्के ब्याज पर सावजनिक ऋण लेकर मकान बनवाते व उन्हें अच्छे किराए पर देते हैं तथा स्वयं सरकारी मकानों में नाममात्र के किराए पर रहते हैं। उच्चाधिकारियों में खासा अच्छा प्रतिशत ऐसे लोगों का है जिनके अपने मकानों के बहुत बड़िया किराए आते हैं और जो तथाकथित ‘उचित किराए’ [फेयर रेंट] देकर आलीशान बगला में रह रहे हैं।

सरकार की किराया नियंत्रण कानून बनाने की मशा मूलतः समाजवादी थी कि अल्प आय वाले व्यक्ति भी किराए पर मकान लेकर आराम से रह सकें। किन्तु कालांतर में मालिक मकानों ने वे तरीके ढूँढ लिए जिनसे यह मशा फलीभूत नहीं हुई। नतीजा यह है कि गहरों में गहरी वस्तियों की बाढ़ आ रही है। गरीब वस्तियों तक की आयोजना व प्रबंध प्रभावशाली व धनिक व्यक्ति

ही करते हैं व वहा भी अधिकनो को लठता ये बल पर हर महीना कुष न कुछ देना पडता है । केवल जो लोग किराया कानून के लागू होते समय या बीच मे कभी घोले से किराएदार बन गए वे ही इस कानून का लाभ अधिकारत कमा रहे हैं ।

किराया नियंत्रण कानून के कारण मकाना की खरीद फरोस्त बहुत कम हा गई हैं । जिस मकान मे एक भी किराएदार हो उसे कोई खरीदना नहीं चाहता । इस सम्पति के स्थानांतरण मे झंझट हो, उसका मूल्य हमेशा सीमित रहता है । पश्चिमी देशो मे जहा बडे शहरो की कमी नहीं, सम्पति, गह दूकान आदि की खरीद फरोस्त लगभग चौबीस घंटों मे पूरी हा जाती है । वहा सम्पति पर बिक्री कर या रजिस्ट्रेशन फीस मामूली एक या दो प्रतिशत के आस पास हैं । हमारे यहा सम्पति का सौदा एक पूरा कानूनी पहाड व कर चोरी व सावधानी से वाली व सफेद सम्पति बाटने की सरिलिप्त कला है । जो सीधे साधे खरीदना बेचना चाहे उसे ग्राहक ही नहीं मिलता । जमाने के रुख से उल्टा चलना हो तो मकान को कोठियों मे बेचना होगा । दलालो को चादी होगी । नुकसान म सिर्फ सरकार व ईमानदार लोग रहगे ।

## काला धन

इन हालातों मे लोग मकान बनाने मे पू जी केवल काला धन छिपाने, कमाने या पडे पडे मकान की कीमत बढाने के लिए ही लगाते हैं । किराए पर देने का सौदा महंगा पडता हैं । किराए के लिए मकानो की मांग व आपूर्ति में जमीन आसमान का अंतर हो गया है । इसलिए एक तरफ बहुत कमा सकने के अवसर हैं पर दूसरी तरफ कानूनी जजीर हैं, इसलिए आभास योजनाए निजी

शास्र म न के बराबर ही बन रही है। सरकारी नीति भी इसमें सहायक नहीं है। सायंजनिक निर्माण विभाग मकान की अनुमानित लागत पर केवल साढे सात प्रतिशत दर से किराया तय करता है। मकान की अनुमानित लागत भी बहुत ही दिक्कानूसी ढग से घाती जाती है। इस चक्कर में आकलन करने वालों का भी प्रत्यक्ष महनताना देना पडता है। फिर एक गार जो किराया तय हो गरा उसमें वृद्धि का कोई प्रावधान नहीं है। जबकि मुद्रास्फीति रुकने का नाम नहीं लेती।

आज जब बैंको की ब्याज दरें आसमान को छू रही है, वित्तीय सस्थाए यथा रीको व वित्त आयोग उस प्रोजेक्ट पर ऋण ही नहीं देते जिसमें विनियोजित पू जी पर भाय बीस प्रतिशत स कम हो। एक खुदरा व्यापारी भी पञ्जीस प्रतिशत तक नफ कमाना चाहता है, ऐसी अवस्था में गृह निर्माण पर पू जी लगान वालों से केवल साढे सात या दस प्रतिशत आमदनी पर विनियोजन की अपेक्षा करना बेकार है। नतीजा यह है कि किराए के लिए कौलोनी बनाने का काम कोई निजी पू जी वाला हाथ में नहीं लेता अत आवासीय समस्या का हल केवल सरकारी हाथों रह जाता है और सरकारी हाथों में आज तक किस समस्या का सुलझाया है ?

### विश्व बैंक का अध्ययन

विश्व बैंक न विकामशील देशों के चार वडमान नगरों में किराया कानून व आवास समस्या का गहन अध्ययन करवाया है। इनमें भारत का बंगलौर घना का कुमासी, मिश्र का बयरो व ब्राजील का रियो डी जेनेरी शामिल है। बंगलौर में पिछले चार दशकों से चल आ रहे किराया नियन्त्रण कानून के कारण मकानों की

बहुत कमो है। इस कमो को और भी भयानक बना दिया है जमीन के व्यापार के सरकारीकरण, गहननिर्माण के लिए वित्त व श्रमों की अनुपलब्धता तथा सीमेट-लोहा लकड़ी आदि की कमो ने। शहर की आबादी का दो तिहाई भाग किराए पर रहने वाला है। किराया नियंत्रण कानून 1940 की स्थिति को यथावत रखन की कोशिश कर रहा है। कुछ मशाघन हुए हैं पर ढाचा वही चल रहा है। रेट कंट्रोलर की "उचित किराया" तय करन का अधिकार है जिसमें काफी भ्रष्टाचार है। मकान मालिक राजनितिक प्रभाव से खाली करवा लेने हैं। कानून की निरन्तर अवहेलना से भी उच्च मुद्रिकल से कभी कभी ही सजा मिलती है। मालिक मकान अपन तरीकों से किराया बढ़वाते रहने हैं। इस प्रकार यह कानून वहा सिर्फ भ्रष्टाचार, राजनीतिक प्रभाव व अव्यावहारिक स्थितियों को पनपा रहा है।

मकान मालिका व किराएदारो की औसत आय का अध्ययन बताता है कि कथन पच्चीस प्रतिशत मकान मालिको की औसत आय किराएदारो की औसत आय से अधिक है। इतनी ही प्रतिशत मकान मालिको की आय किराएदारो की औसत आय से कम भी है किराएदारों में से दस प्रतिशत आय मकानो के मानिक भी हैं। इनकी आय मकान मानिका की आय से कम नहीं है। किराया नियंत्रण कानून कोई भी सार्वजनिक हित माघने में असम रहा है।

दूसरे देशों के नगरो की स्थिति का अवलोकन करने की आवश्यकता नहीं है। बंगलोर के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि किराया नियंत्रण कानून गुनाह बेलज्जत है और इसका उन्मूलन या व्यापक सगाधन अत्यंत आवश्यक है। यह स्पष्ट है कि कुछ ही समय में

गुले बाजार की परिस्थितियाँ कानूनी प्रावधानों पर विचार पाने की हैं और सरकार व जनता दोनों के हित में है कि जनता पर उपस्थित परिस्थितियों का ध्यान में रखकर किराया नियंत्रण कानून का मरल, व्यवहारिक व भाषागत विकास में सहायक बन जा सकेता है।

## कानून में सुधार जरूरी

विश्व बैंक की टीम ने किराया नियंत्रण कानून में सुधार करने के कुछ उपाय सुझाए हैं—उनमें से प्रमुख निम्न हैं—

- [1] मरान खाली होने पर नए किराएदार को दान में नियंत्रण कानून लागू न हो।
- [2] कुछ मोहल्लों, इलाकों को किराए नियंत्रण से मुक्त कर दिया जाए। फिर दान दाने अन्य इलाकों में यह व्यवस्था लागू की जाए।
- [3] एक हद तक किराए पर नियंत्रण हटा दिया जाए यथा वा तो ऊपर से 1000 रुपए मासिक में अधिक किराए वाले मकानों को नियंत्रण मुक्त कर दिया जाए या नीचे से ढाई सौ या पांच सौ रुपए तक के किराए वाले मकानों को नियंत्रण मुक्त कर दिया जाए। यह स्थानीय परिस्थिति के अनुसार होना चाहिए।
- [4] किराया नियंत्रण के हटाने का समयबद्ध कार्यक्रम बन व घोषित हो जाए ताकि किराएदार नई परिस्थिति के अनुसार अपना नया प्रबंध करने के लिए समय व पूर्व सूचना प्राप्त कर सके।

[5] मकान मालिक किराएदारा को निश्चित दरा पर घन राशि देकर उनसे मकान खाली करवाने का कानूनी अधिकार पा सके ।

[6] एक साथ किराया नियन्त्रण कानून का हटा दिया जाए ।

उपरोक्त विधियो या उनके चतुर मिश्रण द्वारा किराया नियन्त्रण कानूनो की आवास निर्माण मे अवरोधक शक्ति का हनन किया जा सकता है । यह स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि इनम से कौनसी विधि या विधिया अधिक उपयुक्त व उपयोगी होगी ।

“जा भी हा किराया नियन्त्रण कानून अपनी पूरी उम्र जी चुके हैं उनके लागू करन की परिस्थितिया मे अप्रत्यागित बदलाव आ गया है । आज आवास योजनाओं के साथ म निजी प्रयत्नो के सहयोग की सम्व आवश्यकता है । अत सरकरो को चाहिए कि इन पर गभीर ध्यान कर व्यापक संशोधन करें व आवास विकास व उपयोग का मार्ग निष्कटक व प्रशस्त करें ।”

यह आश्चर्य की बात है कि समाज मे इतनी श्रद्धा व वेदमानी फलाने वाला यह निरर्थक अधिनियम अभी तक जीवित व मक्षत है ।



## समाजवादी देशो मे अनुशासन

समाजवादी देशो मे सामाजिक अनुशासन और नियमों का पालन अपेक्षा कृत अच्छा होना चाहिए। पर सोवियत संघ का उदाहरण सामने है जहा अप्रीमची 1991 के माच मे इस प्रकार था।

कुल अप्रीमची-15 लाख यह संख्या सोवियत संघ के बचक एक गणतंत्र की है जहा कोरी से अप्रीम के पाँचे विशेष रूप से उपाय जाते हैं।

सोवियत संघ गणतंत्र-राज्य-घोट जनसंख्या पूरा सावियत संघ 1991 मे जनसंख्या 29 करोड़ 30 लाख थी उनकीम करोड़ तीस लाख। रूसी जाति के लोग हैं 51 प्रतिशत ये हैं गणतंत्र

- 1 रूस-14 करोड़ 70 लाख इसमे रूसी 83 प्रतिशत हैं।
- 2 कजाखस्तान-1 करोड़ 70 लाख, रूसी 41 प्रतिशत
- 3 अस्तानिया 20 लाख रूसी 30 प्रतिशत
- 4 सटविषा 30 लाख रूसी 33 ,,

5	रिथुभानिया	40 लाख	रुसी	9	„
6	ताजिकिस्तान	50 लाख	रुसी	10	„
7	थिरगिस्तान	40 लाख	रुसी	22	„
8	वलोरसिया	एक करोड	रुसी	12	„
9	यूकन	5 करोड	20 लाख	रुसी	21 प्रतिशत
10	मोलोविया	40 लाख	रुसी	14	प्रतिशत
11	जोरजिया	50 लाख	„	7	„
12	भारमिनिया	30 लाख	„	3	„
13	अजेरबाइजान	70 लाख	„	8	„
14	टकमेनिया	40 लाख	„	13	„
15	उजबेकिस्तान	2 करोड	„	11	„

माट—सोवियत सघ खडिन हो रहा है। हमे जानना चाहिए कि वे कौनसे गणतंत्र हैं जा घलग हो रहे हैं।

## वस्तु और पदार्थ

पदार्थ की व्याख्या की जा चुकी है। पदार्थ का उल्टा है 'विचार'। भौतिकवाद और विचारवाद। मटिरियलिजम और आइडियलिजम।

वस्तु इसका विशेषण है वास्तविक। वस्तुगत भी है। इसका उल्टा है मन। मन का विशेषण है मनोगत मन की बातें हैं मनोगत सत्य। मन के बाहर की बातें हैं वस्तुगत सत्य। SUBJECTIVE मनोगत शब्द है SUBJECTIVE और OBJECTIVE

पदार्थ मँटर—उल्टा है अध्यात्मवाद का वस्तुगत दुनिया और मनोगत दुनिया।

गुलसीदासजी ने रामायण लिखी 1575 में अकबर के समय



सुकरात का समय था 469-399 ई पूव म पलेटा का एक था । सुकरात को फासी दी यूनान की सरकार न ।

पलेटो 426-347 ई पूव म-सुकरात का शिष्य था बरि-टाटल का गुरु था ।

पेरिक्लीज-490-429 ई पूव-येथेस की सरकार का प्रधान था । लोकतंत्र का पिता था ।

शकगचार्य-जम 788 ईस्वी मे, दार्दिक  
रोग बिना मा भी बोबा नहीं देती है ।

भारत मे सैनिक शासन की म्यागना नहीं हो सक्ता क्योंकि सेना मे जातिया हैं, धर्म है । वो जाट चाहेंगे, राजपूत उस नहीं चाहेंगे । राजपूतों की बान जाट नहीं मानेंगे । इसी प्रकार मराठों की द्राविडों की बातें हैं ।

पश्चिम एशिया मे सात दश है । सब मुसलमानी है । इनके बीच म म्थित है इजराइल । यह गृहयुद्धों का देश है । राजधानी जेरुसलम इनका तीर्थ स्थान है । यह मुसलमानों का भी पवित्र स्थान है । सा मुसलमानों का श्रीर यहूदियों का जूज का विवाद सदा स ही है । पर 43 वर्षों से तो उनमें आपसी मुद्द चल रह है ।

ताजा शांति प्रयासों मे पहना प्रयत्न जेनवा म 19 स 21 नवम्बर 1985 तक हुए ।

यारप मे हमेशा लडाइया होती रही है । पर 1945 के बाद वहा लडाई नहीं हुई । कारण यह है कि मोरप द देशो न बहुत सघिमा कर रखी है । इनमे पहली 1975 मे हुई थी । सधि का नाम है फाइनल एक्ट FINAL ACT 1975 के बाद भी यारप के देश समय समय पर सम्मेलन करते रहते हैं ।

वास्तविक दुनिया OBJECTIVE WOULD वस्तुगत दुनिया प्राप्ती निभरता Interdependence इतनी बढ गई हैं कि योरप म शुद्ध नहीं हा सकता ।

1991 म सोवियत सघ मे मत लिया गया कि वे किस प्रकार की सरकार चाहने है । आध से ऊपर लागो न कहा कि वे पश्चिमी देशो जसा लोकतंत्र चाहते हैं पश्चिमी देशो मे शामिल ह अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस बेलजियम आदि ।

सोवियत सघ के समाजवाद को तन्नीकी भाषा मे राजकीय समाजवाद कहते हैं । बहुमत ने मत दिया कि बाजार भाव की अर्थ व्यवस्था चाहते ह । 44 प्रतिशत न मत दिया कि भावो की राजकीय व्यवस्था चालू रहनी चाहिए । खुली आर्थिक व्यवस्था हा । सोवियत जनता का बहुमत है ।

चमार महर्षि वाल्मीकि की सतान ह वाल्मीकि चमार थे । रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी ।

पश्चिम एशिया मे छ देश हैं । सभी मुसलमान हैं, इन देशो के प्रशासक और नेता आधुनिक ढग की जीवन मे रहते हैं । बाल कटाई और पोशाक आधुनिक ढग की ह यानी पश्चिमी ढग की ह । योरप और अमरीका के लोगो जसी जीवन शैली और बाल कटाई ह । भारत पाकिस्तान के मुसलमान भी आधुनिक ढग से रहने ह । पर कुछ मुसलमान मध्य युगीन हैं । उनकी स्त्रिया पगयली से लेकर चोटी तक ढकी रहती हैं । उस पोशाक को बुर्का कहते ह ।

मध्य युगीन भारतीय मुसलमान बाल कटाई और पोशाक मुसलमानी ढग का रखते हैं । होठो के पास से लेकर चेहरे के ऊपरी हिस्से तक पतली कटाई करते हैं । सड़क पर चलते इनसान को कह

समते हैं कि यह मुसलमान है और अरब देश और परिवर्तन एशिया की नज़र करता है। ये मुसलमान भारत के देश भक्त नहीं हैं। इनकी सहानुभूति पाकिस्तान के साथ है। ये अरबी फ़ारसी मुसलमान हैं।

शारीरिक परिश्रम करने से और व्यायाम करने से श्वेत रक्त जानी है उत्तर दीजिए उत्तर यह है कि ओक्सीजन ज्यादा पचाने पहुंचती है। ओक्सीजन भाजन को पकाती है। शारीरिक काम करने से ओक्सीजन कम मात्रा में पेट में पहुंचती है। इसलिए ओक्सीजन का ईंधन नहीं पहुंचती। आग नहीं जलती। आग न जलने के कारण, भोजन पकता नहीं है यानी पचता नहीं है पचना और पकना एक ही बात है।

## विश्व शान्ति की स्थापना

विश्व शान्ति की स्थापना में पहला प्रयत्न हुआ 4 अक्टूबर 1985 में। उस दिन सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव फ्रांस की राजधानी पेरिस में थे। फ्रांस के राष्ट्रपति मित्ररा से सतोपजनक बात हुई। इसके बाद गोर्बाचेव ने शिखर सम्मेलन शुरू किये। पहला शिखर सम्मेलन 21 अप्रैल 1985 में जेनेवा में हुआ। 5 मार्च 1953 में स्टेलीन की मृत्यु हुई। 1961 में क्विन्स की मृत्यु हुई। साम्यवाद और साम्यवाद विरोधी दोनों प्लटी विचारधारे मिली सब हिटलर हारा। वह विजयी लगभग हो गया था। सारे पश्चिम को उसने लगभग जीत लिया था। हिटलर 21 जून 1941 में सोवियत संघ पर हमला बोल दिया और मर गया। आत्म हत्या करती अपनी रक्षा में छुप कर।



स्टेलिन शासन का उठा गार्बाचिवी शासन स्टालिन न कठोरता की कठोरता की प्रति कर दी। गार्बाचिव न डिनाई की नरमो की प्रति कर दी। महावत ताड़ भी नि प्रति सबत्र वज्रत। इन गजना को माफिया टोल MAFIA GANG बहने हैं। सूटना हमार करना, स्त्रिया के साथ बलात्कार करना आदि। यह भा टरच स्थाना पर नही। मास्को नगरी की सडकों पर। रात को नही दिन म। छुपकर नही, सडका पर झगडे सडको पर सक्म प्रस्त। वास्को वार्निगटन से भाग हा गया। गर्भापात के विशेषज्ञों का एक बग बन गया।

कठोरता एम बुराई है तो ढिलाई दूसरी बुराई है। कठोरता बडा के लिए बुराई है, ढिलाई छोटे के लिए बुराई है। बुरा होने है, छाटो से समाज बनता है।

माद प्रशासन और अनुशासन साथ चलने चाहिए। कठोर हैड मास्टर की स्कून मे पढाई अच्छी होगी। विद्यालय का उद्देश्य पढ़ाई है। बच्चों पर अनुशासन और मास्टरों पर अनुशासन साथ चलने चाहिए।

सोवियत सघ की जन सत्या 1991 मे 29 करोड है। उनतीम करोड है। तीसरा नम्बर है।

आकाश मे सनिक ठिकान SDI STRATEGI DEFENCE INITIATIVE 23 मर्च 1983 मे अमरीका ने स्त्रीम याजना तयार की नि वह अतरिक्ष मे, अमीमित और अज्य आकाश मे सनिक ठिकान बनाएगा जिनको सोवियत सघ दूड नही सकेगा। काम आरम्भ हो गया था नीव पड चुकी थी। कारीगर

घोर मजदूर जान लग गये थे। गोर्बनिय उस समय बेबल नता था। पर उमने उसी समय हुगरे एतरीं स सावधान किया। विश्व के दबाव म और सावियत सघ की घोषणा से कि यह पीछे नहीं रहेगा।

अमरीका न यह माजता छाड दी। आजाग के पडी लगान का काम गोवधिब की धमकी स और यिरज जनमा को जमाने ए ब द हुपा।

यह है समाजवाद की विद्व को दी गई सेवा। Communism is Humanism सम्यवाद ही मानववाद है। मानववाद की दूसरी व्याख्या है ही नहीं। यदि हैं तो पाठक बटाये।

पृथ्वी का चौथा भाग एसा है जहां अफ है। पिघलती नहीं है। बर्फ क्यों है ? पिघलती क्यों नहीं है ? पाठक जानकारी प्राण करें।

रूसी प्रेजीडेंट और सावियत प्रेजीडेंट म क्या अंतर है।

## दिल्ली घोषणा पत्र नवम्बर १९८६

भारत और सावियत मघ के बीच एग सिद्धात कायम करन निर्णय किया गया। सिद्धात अहिंसा पर आधारित है। विश्व की राजनीति मे यह पहला सिद्धात है जा अहिंसा पर आधारित है। इस सिद्धात से हैं -

- 1 शान्ति पूरु सह अस्तित्व विश्व व्यापी अ धार बनना चाहिए।
- 2 मानव जीवन सर्व श्रेष्ठ माना जाना चाहिए।
- 3 अहिंसा सामाजिक जीवन का आधार बनाना चाहिए।
- 4 मय और शक्ता के स्थान विश्वास बैठना चाहिए।

- 5 प्रत्येक देश की अगण्यता का आधार ही ।
- 6 जो साधन गत्या पर मजबूत हैं, वे विकास पर सगने चढ़ें ।
- 7 नागरिक का बहुमुखी विकास है ।
- 8 वनमान भय का यातावरण दूर है ।
- 9 निरस्त्रीकरण करने अहिंसा की स्थापना हो ।
- 10 अर्थ देना व कामा में महा शक्तिवाहक तत्त्व न करें ।

## मार्क्स और अगलस दोनों भूल गये थे

जब साम्यवाद का सपना देखा और सामाजिक आर्थिक व्यवस्थाओं की कल्पना की उस एक भूल भूत तथ्य भूल गया । जो सभ्यता की बढन की प्रवृत्ति है । और राके तो कौन रोक और क्यों कोई मान ।

जमीन सीमित है और सीमित होती जायेगी । प्रहाड ने कही जमीन नहीं है । रामजी न बस एक ही पृथ्वी बनाई थी । कोई प्रयाग करना था । सो रामजी ने कर लिया ।

साम्यवाद कभी नहीं बोगा । भारतीय कम्युनिस्टों की पहली सभा 26 दिसम्बर 1925 में वानपुर में हुई थी ।

## त्यौहार

हमारे त्यौहारों में किसी भी त्यौहार का इतिहास से सम्बन्ध नहीं है । हाली कब चली, क्या चली, किसने चलाई इसका इतिहास नहीं है । दिवाली की भी यही हालत है । इतिहासिक घटना होने की यह कसौटी है कि उसका प्रमाण होना चाहिए । सबसे आघार

भूत बात है कि उसका काल हो। रामायण, महाभारत, होली दिवाली, दसहरा आदि सब काल्पनिक हैं, कवियों की रचनाएँ हैं। उप-वासना कहानीकारों की रचनाएँ हैं।

इतिहासकारों के लिए ये कथाएँ ग-प हैं Fiction हैं।

बस, एक त्योहार सही है। वह इतिहासिक घटना है। वह बुद्ध पूजिमा। बुद्ध महाराज का समय 400 ई. पू. के आगे गीछा है। महाभारत का युद्ध 900 ई. पू. में भ्रम माना जाने गगा है। पर इसे इतिहास का भ्रम नहो बनाया जा सकता। राम-रावण गद्दी हुई कथा है। बुद्ध की मृत्यु 544 में हुई।

भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग आधुनिक काल है। यह युग 1757 से शुरू हुआ। बंगाल से शुरू हुआ। भारत भूमि का निर्माण वर्ष 1757 है। बंगाल में पू. से शुरू हुआ। उत्तर पश्चिम की तरफ भारत भूमि बढ़नी गई। दिल्ली पहुँचने में इस एकता धारा की एक सी वप लगे। 1757 से 1857 के बीच भारत बना। इससे पहले भारत था ही नहीं। मगध नामक राज्य का केवल बिहार और उत्तर प्रदेश में प्रभाव था। अशोक की भी यही सीमा थी। देश को गौरव है अशोक महान पर। उसने दो इतिहासिक काम किए। बौद्ध धर्म यानि अहिंसा का प्रचार और उस समय तक के सबसे बड़े राज्य पर शांति काल की स्थापना मौर्य काल यानी बौद्ध काल और गुप्त काल यानी हिंदु काल।

इसी प्रकार आखातीज अक्षय तृतीया नाम बहुत बड़ा है। पर इसकी हिस्ट्री नहीं है। इसलिए इसका कोई महत्व नहीं है। इसी तरह राम-रावण युद्ध एक बहुत बड़ी गल्प है। गल्प है। गौरव-पांडू आदि वंश का इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं है। कहानी, उप-

( 165 ) यह कब की बात है/ची० मालसिंह



यास निम्नने की प्रथा सदा से रही है। कहानीकार, उपासकार सदा से रहे ह।

राजस्थान बना 17 मई 1949 मे। गीत युद्ध गुरु हुआ 4 माच 1946 मे। चचित न सावियत रम्यूनियम के विरुद्ध भाषण दिया। द्वितीय युद्ध की समाप्ति के बाद शानि का दशन गाम्भज मा 567 ई पूव मे जब गीतम बुद्ध जम थे। राज्य स्तर पर शाति के दशन का प्रारम्भ हुआ चौथी सदी मे जब अशोक महान न अहिंसा का सक्ल्प किया और अहिंसा का प्रचार किया। गीतम बुद्ध और अशोक महान प्राचीन भारत के अहिंसा के जमनाता बने। आधुनिक भारत मे महात्मा गांधी अहिंसा के प्रचारक बने। मध्य काल के भारत मे अकबर महान ने शाति का मार्ग दशन अनाया। आक्रमण की नीति हिंसा का मार्ग अशाक न बद किया अकबर न अपनाया और महात्मा गांधी ने इसे विद्व व्यापी बनाया।

विश्वी सवत ईस्वी सन मे अठारवन बष पुराना ह।

## स्वर्ण युग

भारत के इतिहास का स्वर्ण युग गुप्त काल मे था। उन काल मे भारत मे कोई लडाई नही हुई। ह्य वर्धन का समय भी शाति का समय था। यह समय था 606 ई से 647 ई तक। हिंदु सम्राटा में ह्य वर्धन ही कारगर और बडा सम्राट था। या रखना चाहिए अशोक जोड था। च द्रगुप्त भीय हिंदु था।

मुसलमान का पहला हमला 712 ई मे हुआ। पर आक्रमणकारी वापिस चना गया।

हिंदु मुसलमानों का पहला साम्प्रदायिक झगडा महम्मद गजनवी ने गुजरात में सोमनाथ का मंदिर तोडा। यह पहली साम्प्र-

दायिक घटना है। धर्म के नाम पर होने वाला पहला लड़ाई मगडा यह घटना है 991 ईस्वी।

## 1991<sup>1</sup> में लेनिन की दुर्घति

माथ और अगस्त ने समाजवाद का दशन दूँटा। लेनिन न उस सावियत सघ में सफलतापूर्वक लागू किया। स्टैलिन उन आकांक्ष पर चढ़ाया और अथ समाजवाद के दुश्मनों ने समाजवाद की नगरी मोस्को में लेनिन की मूर्ति को उखाड़ फेंका।

### लेनिन के मस्तिष्क का अध्ययन

लेनिन की मृत्यु जनवरी 1924 में हुई थी। स्टैलिन के आदेश से लेनिन का मस्तिष्क अध्ययन के लिए सुरक्षित रख दिया गया। मस्तिष्क का अध्ययन नये नये आविष्कारों द्वारा आज तक हो रहा है। उस अनमोल मस्तिष्क को समाजवाद के कट्टर दुश्मनों ने फूँट मारा। आजकल सावियत सघ का अनुशासन कसा है। कल्पना करो। स्टैलिन का दिमाग भी वही है। वैज्ञानिकों के दिमाग भी वही हैं।

- 1 राजस्थान नहर का उद्घाटन 27 अक्टूबर 1927 में हुआ। जी डी रडकन के प्रयत्न से यह नहर घाई थी।
- 2 ओलम्पिक खेल 776 ई पूर्व में ग्रीस में चले। खेलों का प्रारम्भ यही से होता है। सम्मिता का विकास भी यही से गुरु होता है। सन 394 में ये खेल बढ़ हो गए।
- 3 रामायण एक कवि की कल्पना है। वह एक कहानी है, समय, काल आदि का पता नहीं है। इसी प्रकार महाभारत एक कहानी है। इतिहास का इन घटनाओं से कोई संबंध नहीं है, भगवद्गी में ऐसी कहानी का LEGEND लीजड कहते हैं।

- 4 लाला लाजपत राय की मृत्यु 1929 में पुलिस की गोली से हुई।
- 5 स्मारक में 3500 मापाये हैं।
- 6 शांति स्थापना का कार्यक्रम शुरू हुआ 15 जनवरी 1986 में सफलता मिली 21 नवम्बर 1985 में, जेनेवा नगर की शांति वार्ता में।
- 7 भारत में छापाखाना चालू हुआ 1556 में।
- 8 स्टीम इंजन बना 1712 इंग्लैंड में।
- 9 जीवन का आरम्भ हुआ छ. कराड 90 लाख वर्ष पहले।
- 10 इसाइयो की संख्या 1986 में एक अरब 62 करोड़।
- 11 सबसे पुराना विश्वविद्यालय बना मोरोको में, उत्तरी अक्षांश 859 ई. में।
- 12 सबसे पुरानी सभ्यता मध्य पूर्व में दजला और फरात नदियों के किनारे वहां आजकल जो देश है वह है मैसेपोटमिया। यह 3500 ई. पूर्व की बात है। उस नगर राज्य होने में आगामी वर्ष होने के लमीनो पर, बाणियों पर कब्जा नहीं किया जाता था। नील नदी के मैदान में मिश्र भी पहली सभ्यताओं का देश है। मिश्र, मैसेपोटमिया यूनान टर्की आस पास ही हैं। पूर्व में चीन भी सभ्यता का जन्म स्थान है तो सभ्यता के जन्म स्थान पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं में है। भारत का स्थान तीसरा है। आस भी मध्य पूर्व में ही आए थे। अजला फरात के मैदान में।

पाठ की सवारी भी मध्य पूर्व में यानी दजला और फरात के किनारे शुरू हुई। लाठी के बाद मोहों का प्रयोग होने लगा वह भी एगी स्थान पर हुआ। कुहाड़ी खादों की कुण्डों का प्रयोग तब तक था। मिट्टी की पलटों पर निर्माई शुरू हुई। यह भी

यहाँ से शुरू हुई। घड़े, हाड़ी भी यही वनन लगे। कुम्हार पहला कारीगर था, लुहार दूसरा।

सतर की जन सख्या पांच अरब है। पच्चासी करोड भारत की आबादी है। खेलों का प्रारम्भ यनान म 1370 ई पूव मे हुआ फिर मिट गए।

## विश्व के सात बडे औद्योगिक देश

1 अमरीका 2 जापान 3 जर्मनी 4 फ्रांस 5 इटली  
6 कनाडा 7 ब्रिटेन। सीखने की बात है कि इन नामो मे सोवियत संघ का नाम नहीं है। कारण यह है कि औद्योगिक देश नहीं हैं यहाँ कल कारखाने नहीं हैं। कच्चा माल बहुत है पर उसकी मशीने आदि नहीं बनती। सिविल कारीगरी नहीं है, हा सैनिक कारीगरी है। स्टेनिन ने सैनिक कारीगरी पर जोर दिया था। कारण यह था परिवर्तनो पूजी पति देश आक्रमण की तैयारी मे थे। कम्युनिजम को उलट फेरने, यह उनका उद्देश्य था। प्रव गोबिन्द उस औद्योगिक देश बनाना चाहता है, भाय दौड करता रहता है।

# वस्तुगत संसार के तीन विभाग

प्रकृति, समाज और विचार, चिंतन

विचार चिंतन होना चाहिए प्रकृति और समाज के विषय में ।

परिवार नियोजन

भारत में आबादी बढ़ती जाएगी । मुसलमान बढ़ाना चाहते हैं सिख भी पीछे नहीं हैं । हिंदुओं में मतभेद है, जसा कि सदा रहा है ।

लेबर मार्केट

जैसे वस्तुओं की मार्केट होती है वैसे ही लेबर मार्केट होती है । मोल तोल में कम्पीटीशन जरूरी है ।

पाकिस्तान में साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता दोनों हैं । शिया और सुन्नी दो वर्ग हैं । फिर सिंधी आगतुक लोग जा भारत से गए एक बड़ा सम्प्रदाय उत्तरी पश्चिम सीमा का है । भाषा का प्रश्न भी

( 170 ) यह सब की बात है/बो० मालसिंह

हैं। पंजाबी, सिंधी, पंजावरी, बंदावरी आदि। पाकिस्तान में सेक्युलर दल भी हैं—विशेषकर कराची और सिंध में। इंडोनेशिया भी मुसलिम देश हैं। वहाँ नौ करोड़ मुसलमान हैं। अरब देश व्यापारी वहाँ गए थे उन्होंने स्पानीय लोगों को मुसलमान बना दिया कसर से बचने के लिए पर्तों की सज्जी, छिलके सज्जी हानी चाहिए। यानी सज्जी का छिनका होना चाहिए। जैसे घानू का छिलका उतरना नहीं चाहिए।

सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के टूटने से पहले उसकी सदस्य संख्या 22 करोड़ थी। सोवियत संघ की कुल आबादी 1988 की जुलाई में 29 करोड़ थी। पार्टी के पास करोड़ों रुपये थे। जप्त हो गए। बड़े-बड़े भवन भी ज्वन हा गए। पार्टी गैर कानूनी बन गई। सोवियत संघ में बहोरता घटन से, पश्चिम में टिन्नाई आई। उत्पादन कम हुआ। सामान घटा, भाव बड़े सामान की कमी होने के कारण अब लोग मोबतन्न को बोलने लगे हैं।

मध्य युग के मत बकि कहा करते थे

जात पात पूछे न कोई, हरि को भज सो हरि को हापी।

## एक साम्प्रदायिक युद्ध

दो धर्मों के बीच का युद्ध साम्प्रदायिक युद्ध कहता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अब साम्प्रदायिक युद्ध समाप्त हो गए। केवल एक अपवाद है। वह है इजरायल और पलेस्टाइन के बीच में। इजरायल नाम के देश की स्थापना 1948 में हुई थी। यहूदी लोगों का एक होमलैंड देने के लिए 1948 में एक देश बना दिया गया। यह इजरायल है। अरब जाति के मुसलमानों के बीच में इजरायल

बना। झगड़े में बना और झगड़ा आज तक चल रहा है। यह प्रश्न पश्चिम एशिया कहना है। पश्चिम एशिया में छ देश हैं। अरबों के देश का सिरिया है। यह सिरिया फिलिस्तीनी युद्ध भी कहना है यहूदी और अरब एक दूसरे को घणा करत हैं कि 1948 से 1991 तक आपस में नहीं मिले। बात नहीं की इन वर्षों 1991 में अक्टूबर में स्पेन की राजधानी मैड्रिड में मिले। सम्मेलन में दोनों पक्षों ने हाथ नहीं मिलाए, मुझराए नहीं। इतनी गहरी नफरत, इतनी पुरानी नफरत आज की परिस्थिति में यह एक अरवाद है।

43 वर्षों पुराना युद्ध बेमिसाल है। यह साम्प्रदायिक बेमिसाल है। सत्तार की पहली लड़ाई 490 ई. पूर्व में हुई। यूनान और फारिस के बीच में हुई। 26 जनवरी का उत्सव मानना महत्वपूर्ण नहीं है। 15 अगस्त मानना महत्वपूर्ण है। उस दिन पूरा स्वतंत्र हुए थे।

1465 और 1952 के बीच राजस्थान का जाट जमीन से बटा रहा।

15 जून 1215 में लोकतंत्र का जन्म हुआ। ब्रिटिश सम्राट ने स्वीकार किया वह सत्तार के अधिकारों को मानकर उस द्वारा बनाए कानूनों पर हस्ताक्षर करेगा।

मनु महाराज—ईसा से पूर्व चौथी सदी में हुआ। उसी ने जातियां बनाई और उनके कर्तव्य बताये।

26 जनवरी 1929 में कांग्रेस ने स्वतंत्र होने का यानी गणतंत्र होने का निर्णय लिया।

पहली पुस्तक छपी चीन में 1471 में।

सबसे पहले कपड़ा बना 4500 वर्ष पहले।

भौतिकवाद का दर्शन प्राप्त में अठारवीं सदी में बना ।

युद्ध जीते नहीं जा सकते, युद्ध नहीं हाने चाहिए, यह निर्णय  
गिण्टर सम्मेलन में लिया, 21 नवम्बर 1985 जेनेवा में ।

बाल्मीकि ने रामायण लिखी 600 ई पूर्व में, बाल्मीकि जाति  
का अंगार थे ।

सद्यमान विद्यायें बालू हुई 1859 में ।

लेती बालू हुई ग्यारह हजार वर्ष पहले ।

कुत्ता पालन शुरू हुआ 7700 ई पूर्व में ।

भेड़ पालन शुरू हुआ 7200 ई पूर्व में ।

मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 में हुआ, मृत्यु हुई 14 मार्च,  
1883 में ।

‘मजदूरों का अधिनायकवाद’ नामक व्यवस्था का विचार  
मार्क्स ने स्वयं ही प्रस्तुत किया था । इस विचार के कारण समाज-  
वाद की स्थापना में बहुत सफलता मिली ।

पुरानी दुनिया में तम्बाकू का पीघा नहीं था । 1492 में  
अमेरिका बूँदी गई । 1501 से योरप के निवासी वहाँ बसने लगे ।  
तम्बाकू खान लगे और पीने लगे । सबसे पहले पुर्तगाल और स्पेन  
में आई । फिर फ्रांस में आई । गोया, डामन और डिऊ में पुर्तगाली  
बसने लगे और घुंए का प्रचार करने लगे । तबनाशक धुंआ केवल  
500 वर्ष पुराना है । पुर्तगाली और अंग्रेज लाए । ज्यों अंग्रेज  
फलते गए, धुंआ फैलता गया । अंग्रेजों ने पाइप बनाया, हमन  
बिलम और हुक्का बनाया । बिलम और हुक्के की हिस्ट्री नहीं  
मिलती ।

कमर से बचना हो तो घुंए से बचो, किसी मादमी का भीड़ी



सिगरेट से स्वागत करना, उसे हानि पहुंचाना है।

प्रण करलो कि बीड़ी—सिगरेट किसी को नहीं पिनाश्रण।  
चुप मत रहो, गोरख के साथ झेल कर बूह दो कि मैं प्रापको बीड़ी  
सिगरेट नहीं पिलाऊंगा। सबनाश का पहना बदम मैं नहीं उठाऊंगा

## चाय

यह नुकसान नहीं करती, लाभ भी नहीं करती। हां, मन का  
राजी करती है। लाभ यह है कि चाय के नाम से थोड़ा दूध भी पेट  
में चला जाता है।

## छाछ

खूब पीओ, घाप कर पीओ, पिलाओ। फीकी पीओ, नम  
मिलाओ, चीनी मिलाओ।

दस लाख को मिलियन कहते हैं। एक करोड़ को दस मिलियन  
कहते हैं। पर भारत में चलन हो गया है कि करोड़ को Crore  
कहते हैं, लाख को Lakh कहते हैं। एक—One Hundred Tho-  
usand हिंदी में एक सौ हजार। दस करोड़—Hundred million  
इसके बाद की सरया विलियन कहनाती है जो हमारे में नहीं आती।  
हमें यह जानना जरूरी है कि मिलियन Million किस कहते हैं।  
फिर सीखो—मिलियन—दस लाख।

सावियत संघ की जनसंख्या 1988 में 28 करोड़ थी।

चीन की जनसंख्या एक अरब का पहुंचन वाली है। संसार  
की जनसंख्या 5 अरब है। भारत की जनसंख्या 85 करोड़ है।

मानव जाति का जो पहला समाज बना वह कहनाता है  
प्रारम्भिक समूह प्रणाली—PRIMITIVE COMMUNAL SYS

TEM यह समूह दस हजार वर्ष चला। इससे पहले मनुष्य हिरणो की तरह जंगल में बिना किसी व्यवस्था रीति रिवाज के रहता था। ठीक इसी तरह जैसे हिरण रहते हैं। यही से इतिहास शुरू होता है। इससे पहले मनुष्य जानवर था। ज नवरी का इतिहास नहीं होता।

## इतिहास का अध्ययन हम चार भागों में बांटते हैं

- 1 परिवार पूर्व का काल मानव इतिहास शुरू होता है। जब मानव दो परो पर चलने लगा। अगली दो टांगे हाथ बन गई थी। यह समय था आज से दस लाख वर्ष पहले का।
- 2 परिवार काल यह काल शुरू होता है आज से 40 हजार वर्ष पहले।
- 3 सामंत काल जब मनुष्य अच्छी जमीन पर कब्जा करना शुरू किया यह समय शुरू होता है आज से दस हजार वर्ष पहले।
- 4 उत्तर सामंत काल— जब राज्य बनने लगे। राजा बनने लगे। राजाओं के नीचे भूमि पति बनने लगे। फिर छोटे भूमि पति बनने लगे। किसान वर्ग का उदय हुआ प्राक्रमण होने लगे। सेनाओं हाने लगी।

विद्यार्थे बढ़ने लगी। विज्ञान उदय हुआ प्रकृति पर नियंत्रण होने लगा, आविष्कार होने लगे मशीन बनी।

- 1 पूजावाद इंग्लैंड में शुरू हुआ 1760 में जब यहाँ पहला कारखाना खुला और मशीन से चलने लगा।
- 2 सामंतवाद शुरू हुआ जब राजा होने लगे। बडा। बादशाह था। बादशाह के नीचे छोटे राजा। राजाओं के नीचे जमींदार।

जमींदारों के कौचे किसान ।

3 प्रारम्भिक समाज—Primitive Society परिवार बढ़ते गये ।

समाज बनने लगा पीड़िया बनने लगी । गोत्र बनन लग ।

4 समाजवाद—जसा सोचियत सघ मे है ।

स माजिक आधिब 'याय के सिद्धात का प्रारम्भ हुआ टोमस मूर स वह 1478 से 1535 के समय मे था । दूसरा ध्यकित है टोमासो कपानेल जो 1568 से 1639 के बीच था । ईसा से 3500 वष पहले मिश्र म वगै जन गए । ईसा से 3500 वष मिश्र में युद्ध हाा लग गए थे । प्राचीन मे घरती, सोना और दास ये तीन चीज सम्पत्ति मानी जाती थी ।

पावक, बैरी, रोग रिण,  
सपने ही राखिण नाहि ।  
ये थोडे दू बढई पुनि,  
महा यत्न सू जाहि ।

ये पकितया मैंन 1926 में कठस्थ की थी । परन्तु मैंने इन्हें काम में नहीं ली । मेरा पुत्र सगजन कुमार अम्रेल और मई, 1991 में दो महीने बिमार पडा रहा । मैं उग होस्पीटल नही ले गया । वह दा जून 1991 के दिन चल बसा । यह 'सापरवाही मैंन कसैं की बयो की, मैं रात दिन आंसू भरता हू । उसकी मा नारामणी देवी की बया हालत ह, वणन से बाहर है ।

बडे लोग

वह दुर सिंहजी—जाट समाज के पहने सेवकों में है । उन्होंने 1917 मे जाट स्कून् सगरिया की स्थापना की । बीमार हा जान के क रण वे वृद्धावस्था स पहले ही चले गए । उनका देहात । जून

( 176 ) यह कब की बात है/चो मससिठ

1924 में हुआ था। उनके जीवन का यह अंतिम दिन हर वर्ष याद किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय झंडे का डिजाइन 1219 में पड़ा। डेनमार्क ने बनाया था। 1339 स्वीडन ने बनाया।

प्रतिरक्षा के लिए पहली दिवार 271 ई पूव चीन में बनी। इस दिवार के बनने में 15 वर्ष लगे। यह भी जानने की बात है कि यह दिवार आज भी कायम है। चीन की सभ्यता पहली चीन सभ्यताओं में है। मिश्र, इरान और चीन, ये सभ्यताओं के पीछे क्या कारण है, इसका अध्ययन आज तक नहीं है। मिश्र और यूनान तो पास पास है। पर चीन तो इन दोनों स्थानों से हजारों किलोमीटर दूर है। एक पूर्ब में है, दूसरे दो पश्चिम में है। इतिहास में यह भी रहस्य है कि आर्य लोग वहाँ से आए? वापिस क्यों नहीं गए? यह भी यह है कि संस्कृत भाषा किसने बनाई और कब बनाई। वेद उसी विचित्र विधा जिसने और कब बनी।



1921 में मैं भारत भ्रमण पर निकली। राठी कपड़ा और  
 मकान की सलाह म निकली। उस समय 1920 र लिए जो नयी  
 चीज थी वह थी कि राठी कपड़ा और मकान के साथ विद्या भी प्राप्त  
 हा। श्रीर 1926 म मुने ये सब चीजे मिल गई। तब मैंने कहा

राठी कपड़ा श्रीर मकान,  
 सग मे हा विद्या का वान,  
 दम्ब डाला देश तमाम,  
 धना न कही मरा काम  
 बहादुरसिंह का वर गुणगान  
 मंचमुच था वह मनुष्य महान ।

बहादुरसिंहजी न 1917 म सगरिका कम्प म स्कूल थी ।  
 जिसका नाम जाट स्कूल था ।

### सयोगवश

सब रचना सयोग वश हुई । मूल रचना सयोग वश हुई मिट्टी

( 1787 ) यह वर की बात है/ची० मालसिंह ।

पानी और हवा ये तीनों चीजें उपयोग 'बच' हुईं। सूरज 'इन' तीनों चीजों ने बना है। सयोग हुआ कि सूरज का एक टुकड़ा टूटा। वह टुकड़ा भागता चला चला चला रहा। उसे जहाँ अनुकूल स्थान मिला वह सूरज का टुकड़ा बन गया। अनुकूल तापक्रम में वह टुकड़ा ही जड़ ठंडा जल लगा। मिट्टी सिकुड़ने लगी, क्योंकि 'हवा' अलग हो गई। मिट्टी के सिकुड़ने से पहाड़, मदान और सागर बन गए। उसके बाद सूरज में से कोई और टुकड़ा नहीं टूटा। यह अनुकूल वातावरण यहाँ ही सीमित स्थान पर है। यह सीमित स्थान अब भर रहा है। मनुष्यों से भर रहा है। इसीमें ब्रह्माण्ड में हवा सीमित है, पानी सीमित है, मिट्टी सीमित है। तीनों प्रकार के जीवों की वृद्धि की प्रवृत्ति है। पशु-पक्षी और मनुष्य। मुख्य समस्या मनुष्य वृद्धि की है। पशु, पक्षी का बढ़ना या न बढ़ना मनुष्य के हाथ में है।

हमारी पृथ्वी पर पाच महाद्वीप हैं और पाच ही सागर हैं। द्वा महाद्वीप पुराने हैं और इनकी सीमाएँ मिलती हैं। एशिया की पश्चिम सीमा और योरप की पश्चिमी सीमा मिलती हैं। परिभाषा की दृष्टि से दानो महाद्वीप एक ही महाद्वीप बनते हैं। परन्तु दोनों महाद्वीपो फरक बहुत है। इसलिए इन्हे दो महाद्वीप माना गया है। एशिया और योरप सीमा जाँट है। तीसरा और चौथा महाद्वीप टूट गए पन्द्रवी सदी न अत म। 1498 म कोलम्बस न टूटे चौथा महाद्वीप आस्ट्रेलिया 1793 मे टुडा गया। पाचवा महाद्वीप अफ्रीका की जानकारी तो थी पर यह जानकारी बेबल किनारो तक ही सीमित थी पन्द्रवी और सोलहवी सदी म धीरे-धीरे भीतर जान गये लाग।

पानी, हवा और तापक्रम—ये तीन चीजें केवल हमारी छोटी एक मात्र पृथ्वी पर है। जनबायु के अनुसार हमारी पृथ्वी के तीन भाग हैं। उष्ण शीतोष्ण और शीत आखिरी भाग जन सूख हैं।

पहला भाग पिछड़ा हुआ है। केवल शीतोष्ण कटिबंध पर विचार ही  
जाता बनी हुई है। यह शीतोष्ण कटिबंध एक दिन जन सख्या क  
भार से जहर दवेगा। बचने का एक ही उपाय है कि कोई कठोर  
नियम बनाया और कठोरता से उसका पालन कर या जाय। वना  
कभी कठोर प्रशासन कायम होगा।

साम्राज्यवाद और कम्युनिजम दोनों अभिव्यक्तियों छवि विनाश  
वन गई थी। पर वस्तु स्थिति यह थी कि न ही साम्राज्यवा  
हैं और न वहीं कम्युनिजम हैं। साम्राज्यवाद भूत मात्र रह गया  
है। कम्युनिजम की स्थापना की बोरी कल्पना है।

याद रखो—मनुष्य परिवार के लिए काम करता है करता  
रहेगा। समाज के लिए नहीं करेगा। स्टैलिन और लेनिन उनके  
अकेले प्रशासन नहीं होंगे।



## बीकानेर के कम्युनिस्ट

दोस्त उस्मानी 1921 में स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया। पेशावर पर्यटन वेस में बंद हुए 1924 में पार्टी के प्रथम आंदोलन में हिस्सा लिया। कैद हुए यह आंदोलन कानपुर में हुआ था 1928 में मेरठ पर्यटन वेस में कैद हुए। 1923 में लेनिन से मिले अफ-गानिस्तान होने हुए खुशकी के रास्ते छुपकर गए थे। उसी वर्ष टर्की के क्रांतिकारी नेता श्रीर तुर्की के प्रेजीडेंट कमाल पागा से मिले थे। ध्यान देने की बात है कि हमारा आंदोलन एक मुसलमान न शुरू किया था आज यह स्थिति है कि एक भी मुसलमान पार्टी का सदस्य नहीं है।

मदन अजमानी-कोमरेड मदन अजमानी को स्मृति में हमने अपने पार्टी भवन का नाम रखा है। मदन अजमानी डिप्यूटी पर धारे गए थे। पलाणा में कोथले के मजदूरो की सभा में अध्यक्षता धरन और मुख्य अतिथि की हैसियत से गए थे। लौटते समय गाडी का एक्सीडेंट हो गया था यह 1953 की घटना है।





## बीकानेर क्षेत्र के बड़े 'आदमी'

११ बीकानेर पोकर रामजी—एक 'भूमिहीन' गृह हीन, ठेला धकेलने वाला जाट 1931 में भारत का दूसरा लक्षपति बना। जो उस समय दानुबोर, मुठ, छाजूराम सहजाते, धे, 1931 में एक दिन की बात है बीकानेर रेलवे का लूनरल, मैनजर, पात्र साहब रेल की पटरी का निरीक्षण के लिए निकले। सुजातगढ़ से P.W.D का ट्रेना Trolley रतनगढ़ की तरफ था, रक्षा था। रतनगढ़, पहुचन, पूर, साहब न टरोपी पुनर्स में प्रविचय पूछा। पोकरजी से भी पूछा। साहब जाट जाति के नाम से खुदा होते थे। पोकरजी हमरे ही दिन बीकानेर में पात्र साहब से मिले रेलवे कामो का उह ठकनार बना दिया। वस पाकरजी बन गए पोकर ठेकेदार। कुछ ही महीनो में लक्षपति बन गए। बीकानेर में उस घर में रहन तगे जहा आजमल अमरनाथजी बसप रहते हैं। वही घर आज भी वैसा ही है जैसा 1931 में था लकड़ी की छत है लकड़ी ढही है जो पोकर न रखवाई थी। यह जगह मुझे इतनी प्यारी है कि मैंने भी अपना मकान उही के मकान

(1831) यह कब की बात है/चौ० मालसिंह ।

के पास बनाया है। बस्ती का नाम है पोकर क्वाटस। उस वक़्त जा  
 उठ बनाई हुई वह उहोंने परमार्थ पर लगाई। जाति सेवा म  
 लगाई। यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि दुखी जाटा की सेवा म,  
 उनका दुख दूर करने म लगाई।

उस समय का जाट भूमिहीन था, फोग की लकड़ी बेव कर  
 गुजारा करते थे। रात भर चल कर सवेरे बीकानेर पहुचते थे।  
 बिल्काने लगते लादा लेलो, लादा लेलो। ऊट दुखी, जाट दुखी।  
 दोपहर हो जाता, शाम हा जाती थी। लादा नहीं बिकता था।  
 1931 का वह जमाना मदी का था, भाव गिर गए थे।

पोकरजी दुखी थे, उहोंने जाट धर्मशाला बनाई।

छादो लादे वाला को कतारिया कहते थे। लादे बर्लों की  
 कतार रात की गावो सं चलती थी। वह कतार बीकानेर की गलियों  
 म फिरती थी, लादा लेलो, लादा आ।

पोकरजी ने यह कतारिया धर्मशाला स्थापित की 1931 मे।

1947 मे लोकतंत्र की लहर बीकानेर म भी चली, चौधरी  
 कुम्भारामजी, चौधरी छागारामजी और मैं, हम तीनों ने इसे छात्रा  
 वास बनाया। मैं इस छात्रावास का प्रबंधकर्ता हो गया। उसी म  
 रहन लगा। 1947 से 1961 तक छात्रावास मे ही रहा। फिर  
 पाकरजी की बस्ती मे पोकर क्वाटस मे आ गया।

ये थे भारत के दूसरे जाट लम्पपति, और वह दुर सिंहजी के  
 बाद दूसरे विद्या प्रचारक।

पोकरजी का गोद लिया बेटा रामनाथजी गगानगर जिले मे  
 नहरी जमीन का मालिक है।

पोकरजी को देखने से ऐसा लगता था कि इनक पास न रोटी

है, न कपड़ा है, न निवास है। और इनकी जानकारी भी बहुत कम है। पर वे थे महा मानव, कहना चाहिए जाट जाति का एक आदर्श मॉडल Model मेरे तीखे स्वभाव को सह लेते थे, मुझे घर पर ठहराते थे। समय समय पर रूपया देते थे। मेरी इच्छा के अनुसार भोजन तयार करवाते थे। खीर बनवाते थे। और मैं मेरे पास क्या था। आप पाठक जानते हैं मेरे पास क्या था।

पोकरजी की तुलना किसी दूसरे आदमी से नहीं जा सकती। उनका स्वभाव, उनकी सहनशीलता उनका पहनावा, उनका बोलना क्रोध कभी नहीं, ऊँची आवाज कभी नहीं, मूड का बदलाव कभी नहीं सदा एक मूड, एक ध्वनि स्वर, एक चाल, कभी जन्दवाजी नहीं कभी ताकी दी नहीं। घमंड अभिमान नहीं, सारी उमर शरीर हल्का एक सा रहा। हमेशा धोती कमीज, काट नहीं, बनियान नहीं स्वेटर नहीं, और सुनो एक ही कमीज था धोकर उसी को पहनते थे।

## मित्रों के नाम

1 कानदान 2 लक्ष्मीदान 3 चतरसिंह

रिक्तारामजी—नोखा पचायत समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष, जन नेता सादगी के आदर्श व्यक्ति।

स्वामी सागरनाथजी—सच्चे, सादे और सरल स्वभाव के स्वामी ग्रामीण जन नेता।



## बीकानेर के प्रमुख व्यक्ति

शापतसिंह-बीकानेर के प्रथम कम्युनिस्ट सांसद (लोकसभा)

पूर्व महाराजा करणीसिंह-पूर्व महाराजा जो बहुत बड़े बट्टमें मे लोक सभा के सदस्य बने । इनकी विशेषता यह रही है कि इनमें बड़प्पन का अहकार नहीं था ।

चुनीलाल इन्दलिया-बीकानेर जिले के महत्त्वपूर्ण किसान नेता हैं और विधान सभा के सदस्य हैं ।

श्री गिरधारीलाल भोविया-लोकप्रिय नेता हैं आप शुरु से ही किसान वर्ग से जुड़े रहें । बीकानेर जिला किसान सभा के अध्यक्ष रहें । किसानों की समस्याओं को लेकर कई आन्दोलन किये । नाखा मगरा विधान सभा क्षेत्र में विधायक चुने गये । राजस्थान विधान सभा में किसान हित के लिए आवाज बुलन्द की । बाद के वर्षों में सहकारी आन्दोलन में भाग लेकर बीकानेर जिला के सहकारी समिति का गठन किया । नाखा, लूनकरणसर एवं बीकानेर मार्केटिंग सहकारी समितियों का गठन किया । किसान छात्रावास के अध्यक्ष

रहे। बीकानेर जिला परिषद के चुनाव में प्रमुख चुने गए। लगातार तेरह वर्षों तक बीकानेर जिला परिषद के प्रमुख रहे। कृषि क्षेत्र में कार्यरत हाकर गांव में बुझा खुदवाकर कुण से सेती धुरू की आज सकडो कुण नोखा तहसील में खुद रहे हैं। तहसील के लोगों को यह रास्ता भी स्वयं करके दिया है। बीकानेर शहर से इनने एक मान सहयोगी शिवरतन डावा रहे हैं। आज भी साथ देखे जा सकते हैं। श्री भोविया प्रगतिशील विचारक है एक मिलनसार व्यक्तित्व के धनी है। आज भी उमूल डेयरी एवं डेयरी फेडरेशन के अध्यक्ष है।

कोमरेड गिरधारी लाल—सदा से ही कम्युनिस्ट है। गदा से ही सेक्यूलरवादी है। सत्ता से निष्ठावान है। कम्युनिस्ट होने के साथ साथ सामाजिक कार्यकर्ता है। नागरी भंडार के विकास में आपका बहुत बड़ा सहयोग है। राज्य स्तर की कार्यकारिणी के आप सत्ता से ही सदस्य रहे हैं। सावजनिक मंत्रालय में अच्छा भाषण कर्ता है हर मौसम कुर्ना पाजामा में रहते हैं। आना जाना पदन करते हैं। कभी अडते नहीं, घमं नाम की चीज नहीं महत्वाकांक्षा इनके स्वभाव में कभी नहीं रही। पार्टी क्षेत्र में, नमाज क्षेत्र में गिरधारी खानजी एक आदर्श मानव आदर्श कार्यकर्ता और आदर्श साम्यवादी है। 1981 से ये नागरी भंडार के अध्यक्ष है।

कोमरेड गिरधारी लाल—1991 में जिला सेक्रेटरी है। राजस्थान की कार्यकारिणी के सदस्य है। 1956 से 1982 तक रेलवे में जौवरी थी। सेवा में साथी मजदूरों का संगठन किया। ऐच्छिक रिटायरमेंट लिया जिससे कि पूरा समय पार्टी के कामों में लगा सकें। समाजों में अच्छे भाषण देने हैं। विशेष बात यह है कि आज भी मजदूर नेता है। 1983 में सात महीने सोवियत संघ में रहे।

( 187 ) यह कम की बात है/बी० मातासिंह

1960 में रेलवे हड़ताल में पूरा भाग लिया। डिसमिस हुए फिर नौकरी में ले लिए गए। राजीने की शर्तों के अनुसार लिए गए।

श्रीगोपाल जाशी—प्रगतिशील विचारों से ओत पात, बीकानेर नगर के पूर्व विधायक प्रगतिशील युवक सम्मेलन के वर्षों पूर्व स्वागत अध्यक्ष रहे। रूस यात्रा करके आए। अच्छे वक्ता व कई विषयों पर जाता। सभी से सामान्य भाव मिलते हैं, घमंड से बोधो दूर हैं। मृदुल स्वभाव भावपक व्यक्तित्व के धनी।

कमल मोहनसिंह—बड़े अफसर हैं। भूमिपति हैं। फिर कम्युनिस्ट नेता हैं, सक्रिय और गतिशील है।

हरिराम चौधरी—नागौर निवासी, बीकानेर में डूंगर कालेज के छात्र थे। छात्रों में प्रगतिशील और वाम पथ का प्रचार किया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के लिए धन भेना करते थे। जन समावृत्त कर उसे सफलता पूर्वक संबोधित करते थे।

शौकत उस्मानी भारतीय स्तर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में बहुत बड़ी भागीदारी थी। सोवियत संघ और अरब देशों का दौरा किया। जन मुक्ति संघर्षों में सक्रिय भाग लिया।

कुम्भारामआर्य—भूतपूर्व बीकानेर स्टेट की नौकरी में रहते हुए भी जन जागृति में सक्रिय थे। उस समय के महाराजा ने जनता सरकार बनाई। उसमें कुम्भारामजी मिनिस्टर थे। बाद में राजस्थान स्तर पर भी मिनिस्टर रहे। अस्सी से ऊपर की उमर में होते हुए भी आज भी सक्रिय नेता हैं।

प्रोफेसर केदार—भूतपूर्व बीकानेर राज्य में सक्रिय नेता थे। राजस्थान बनने पर राजस्थान स्तर पर मिनिस्टर रहे। समाज सेवा में इतने सक्रिय रहे कि इन्होंने विवाह नहीं किया। सेक्स के दान में बहुत सत्कारि और एक आदश ग्रहणकारी रहे।

मनोहर मिस्त्री—बीकानेर स्तर पर श्रीर राजस्थान म  
विछोड़ी जातिवो क उत्थान मे बहुत योगदान रहा ।

मुरलीधर व्यास—बीकानेर स्टेट के समय से ही एर बहुत ही  
जनप्रिय नेता थे । सरकारी नौकरी छोड कर समाज सेवा मे लगे ।  
सेवा भाव की जगन से प्रेरित होकर उन्होंने नौकरी छोडी । समाजों  
मे भीड बहुत बडी हो जाया करती, जब वे बोलते थे ।

स्वामी सागरनाथजी—बहुत ही सरल स्वभाव, सदाचारी जन  
सेवक हैं । किसानो में बहुत माननीय हैं ।

दुर्गाराम—कालू निवासी, पुराने नेता, छात्र जीवन से पार्टी के  
क यैकर्ता रहे ।

चौधरी साराचन्दजी पुलिस अधीक्षक—जाटों मे पहले एम पी  
थे । इनको हमेशा जो कार्य सौंपा जाता था, वह जान जोखिम का  
हाता था । अत न ये डाकुओ के साथ मुठभेड मे ही मारे गए ।  
मृत्यु सदिग्ध अवस्था मे हुई ।

धर्मवीर चौधरी—नाराचन्दजी के सुपुत्र बहादुर आदमी का  
न्ह दुर बडा । भारतीय सेवा के अफसर हैं कलेक्टर थे । पर अब  
जयपुर मे किसी कार्यालय के हेड हैं ।

इब्राहीमजी—अवकाश प्राप्त तहसीलदार गगाशहर रोड बीकानेर  
श्रीगण्डिनन्दनल व्यास—आकर्षक व्यक्तित्व के धनी प्रगतिशील  
विचारक, लेखक शिक्षा विद्, मूक सेवक, विद्यालय निरीक्षक पद से  
राजकीय सेवा से अवकाश ।





## विश्व शांति का रक्षक अटम बम्ब कहा और कब जन्मा

जब से युद्ध होन लगे, सभी स शांति की बातें हान लगी । पर सफलता नहीं मिली । विरोधी को हरा कर जीतने की इच्छा इतनी प्रबल होती है कि उन न्याया नहीं जा सकता । सेना और सैनिक की मनोवृत्ति युद्ध करन के लिए इतनी जारा स तैयार करनी जाती है कि बम युद्ध हो नो ही जीउन सफत हैं । सिपाहिया का और अफसरों का प्रामोहन होते हैं ।

परतु हथियारों के हथियार अटम बम्ब का जन्म अगरीका म यू एस ए म हो गया । 16 जुलाई 1945 की बात है । पांच बज कर 29 मिनट और 45 सेकंड पर इम महा विस्फोति का जन्म हुआ 5 अगस्त 1945 म इसने अपना कर्तव्य दिखाया । जापान क नगरों हिरोगिमा और नागासाकी पर ये बम्ब डाल लिए गए । वहा कुछ भी नहीं बचा । जापान ने हाथ जोड लिए । यषों का काम एक

मिनट में हो गया। जर्मनी, और इटली पुरी राष्ट्र कहताने थे। जमीन धुरी पर घूमती है। विश्व समान उस धुरी पर घूमने लगा जो धुरी राष्ट्रों ने निमित्त की। परन्तु अटम बम्ब ने धुरी साह दिया।

अटम बम्ब को गिराने का समय और दिनांक सोच समझ कर रखा गया। उस दिन और उम समय अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ की मीटिंग चल रही थी। मीटिंग में वे स्टालिन के चेहरे, व्यवहार, पक्षादि से वे जानना चाहते थे वह उदाम हुआ कि नहीं। स्टालिन के चेहरे पर कोई नया भाव नहीं देखा गया। स्टालिन के साथी देना जान गए कि यथा नाम तथा गुण स्टालिन वास्तव में स्टालिन थे।

घर आकर स्टालिन ने अपने वैज्ञानिकों को आदेश दिया कि एक महीने के भीतर अटम बम्ब बन जाना चाहिए। आदेश का पालन हुआ और लगभग एक महीने में सोवियत संघ का बम्ब तैयार हो गया। आज यह विश्व पंचायत के पांचो सदस्यों के पास है। सुरक्षा परिषद के पांचो सदस्यों के पास है। दूसरे मतभेद होते हुए भी इस घात में पांचो पक्ष सहमत हैं कि बम्ब का भेद खोला न जाए।

- 1 अमरीका ने 16 जुलाई 1943 में बनाया।
  - 2 सोवियत संघ ने 29 अगस्त 1945 में बनाया।
  - 3 ब्रिटेन ने 2 अक्टूबर 1952 में बनाया।
  - 4 फ्रांस ने 13 अक्टूबर 1960 में बनाया।
  - 5 चीन ने 16 अक्टूबर 1964 में बनाया।
- ये पांचो पक्ष सुरक्षा परिषद के सदस्य हैं।

### सेक्यूलरवाद

सेक्यूलरवाद की विचार धारा एक मुस्लिम देश में चालू हुई।

टर्की के प्रशासक कमाल पार्श ने 1923 में इस विचार को अपने देश में चालू किया। इसके बाद मिथ्र यानी इजीप्ट ने इस विचार को अपनाया। ये दोनों ही मुस्लिम देश हैं। मिथ्र के प्रशासक नासिर ने इसे 1984 में अपने देश में प्रचलित किया।

असीम अंतरिक्ष में ओबसीजन नाम की गस बेशक घरती पर ही है। दूसरी जगह कहीं नहीं हैं। और समझन लायक बात यह है कि रामजी ने इस हवा को ह्वम दे रखा है कि यह हवा सात किलोमीटर से अधिक ऊँचाई पर नहीं जायेगी। इस आदेश का कारण यह है कि अधिक ऊँचाई पर जान के बाद यह हवा फिर इस घरती पर नहीं आयेगी।

तन ढकने का रिवाज शुरू हुआ 4500 ई पूर्व में।

प्रकृति और समाज को समझन की विद्या चालू हुई 1859 में डारविन इस विद्या के स्राज करता थे।

स्टेलिन को धाखा देकर हिटलर ने सोवियत सघ पर हमला कर दिया। विश्व विजय की अभिलाषा रखने वाले हिटलर ने अपनी प्रेमिका के साथ बर्लिन के रसोईघर में आत्महत्या की।



## बुढ़ापा

डाक्टर जे डी पाठक बुढ़ापे के विषय मे लिखने हैं, "यह समय ऐसा है जब हमारी सारी कोशिकायें और टिस्सू बूढ़े हो जाते हैं।" दिमाग को ओक्सीजन भरा रक्त नहीं मिलता है। इसलिये हमारी स्मरण शक्ति, हमारा बर्ताव, व्यवहार और हमारी बुद्धि असफल हो जाती है। ओक्सीजन भरा रक्त न मिलने से ये तीन अंग बेकार हो जाते हैं स्मरण शक्ति, व्यवहार और बुद्धि सब अंग, प्रत्यग, शिथिल हो जाते हैं। पाचन शक्ति घट जाती है। शरीर का तापक्रम घट जाता है। संक्षेप मे कहना चाहिए कि मनुष्य का जीवस स्तर गिर जाता है।

तो क्या कोई ऐसी व्यवस्था, प्रक्रिया है जिससे इस उतरती प्रक्रिया को कुछ समय के लिए रोका जा सके? हां, है। सब जानते हैं पर इस प्रक्रिया का सहारा कोई कोई ही लेते हैं। वह क्या प्रक्रिया है? वह है कसरत, व्यायाम है, और साथ साथ ही हवा AIR हवा मे ओक्सीजन की मात्रा पूरी हो। यह पूरी प्रक्रिया तो

शिमो गुरु से ही सीपी जा सजनी ह । पर माटे रूप से गभी जानने हैं कि हवा साफ ह । साफ हवा प्राजकल कहां मिलनी ह यह भी गुरु से ही सीपी । पर यह याद रखो की बात है कि यह हवा उन्हें नहीं मिलती जो प्रात साय पुरानी घास्त के, प्रक्रिया के अनुसार घूमने निकल जाने हैं ।

डॉक्टर जे डी पाठक 1973 बोम्बे हास्पिटल के मेडिकल रिसर्च केन्द्र के डाइरेक्टर हैं । यह केन्द्र बुद्धावस्था क विषय में खोज कर रहा है । व्यायाम करने से ये सारी इन्द्रिया सक्रिय हो हो जाती है ।

## सोना

आदिम मनुष्य को भी सोना प्यारा था । ईसा पूर्व की पाँचवीं सदी में मिश्र देश में सोने के बदले में अथ चीजें लेने थे ।

संसार के 166 देशों के 36 हजार टन सोना है । सरकारी खजानों में है । गहनों आदि अभूषण अलग है । अनुमान है कि गहने आदि में 21 हजार टन सोना लगा है ।

## स्वीजर लैंड

संसार में 166 देश हैं और एक स्वीजर लैंड है । यह निराला रिया है कि वह राष्ट्र सभ का सदस्य नहीं है । वह न राब का है न दब का है । उसने कभी युद्ध नहीं किया । बड़े नेता बड़े सरकारी अफसर, बड़े धनी सेठ-श्रेष्ठ अपना धन स्वीजर लैंड में रखते हैं । स्वीजर लैंड सोने से पीला है ।

योरप म एक दग है स्वीजर लण्ड । पहाडा पर है । उस पर कभी विदेशी आक्रमण नही हुआ उस पर सब दश भरोसा करते हैं । सत्र कुछ गुप्त रखा जाता है । बादगाहा, नताओ का देश निकाला हा जाता है । ऐस धनी तग स्वीजर लण्ड म जमा धन पर यानी सान पर जीते हैं ।

याद रला की बात है कि सावियत सघ का साना स्वीजर लण्ड म जमा गही है । अत्र सोवियत सघ खण्डित हो रहा है । विन्ब जानन को इच्छुक है कि सोना किसके पास जमा है ।

अय चीजो की तरह सोन की कीमत भी मांग और पूर्ति से निर्दिष्ट हाती है ।

### भारतीय मुसलमान

सडक पर चलने मुसलाम न वो देखकर आप बता देगें कि यह मुसलमान है । बहुत से मुसलमान एमे भी हैं जिह देखकर आप नही बता सतत कि यह हिंदु है या मुसलमान है । दोनों म क्या अंतर है ? यह अंतर क्या मुसलमान पने में कभी लिखता है ? क्या भारतीय पन मे कभी दिखाता ? सडक चलते हिंदुओं को आप बता सकते हा कि वह हिंदु है । क्या पहचान ह गले मे जनऊ माथे पर टीका घोसी की एक ताग खुली, मिर पर लम्बी चोटी हागी । यह सब चीजें न होने पर आप किस तरह पहचानेगें कि हिंदु है या मुसलमान ।



## छठा महाद्वीप इंडोनेशिया

एशिया, अफ्रिका, दो अमरीका, आस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया ये छ महाद्वीप हैं। इंडोनेशिया भी एक महाद्वीप यह बात बहुत कम लोग जानते हैं। दुनिया की पाच अरब की जनसंख्या में इंडोनेशिया की बीस करोड़ की जनसंख्या है। पांच महाद्वीपों से दूसरा हिन्द महासागर के दक्षिण में यह छठा महाद्वीप स्थित है। जनसंख्या के अनुसार यह पाचवां सबसे बड़ा भूखण्ड है भूभाग है। मुख्य निर्यात तेल और गैस रहे हैं, पर अब यह खुद ही औद्योगिक देश बन गया है। इस छठे महाद्वीप में तेरह हजार द्वीप हैं। यह द्वीपों का महाद्वीप है।

कोलम्बस ने 1498 में अमरीका ढूँढी  
डार्विन ने 1859 में विद्याय ढूँढी  
भारतीय उपमहाद्वीप की स्थापना और भारत में  
ज्ञान विज्ञान की स्थापना हुई 1757 में

जिस युद्ध से यह निर्णय निकला वह था पलासी युद्ध  
 भारत की राजधानी बनकत्ता रही 1911 तक  
 दिल्ली भारत की राजधानी बनी 1911 में  
 मार्क्स का समय था 1818 से 1883  
 अगस्त का समय 1820 से 1895  
 मार्क्स का जन्म 5 मई 1818  
 अगस्त जन्म 28 नवम्बर 1820, मृत्यु 5 अगस्त 1895  
 मार्क्स 5 मई 1818 से 14 मार्च 1883  
 अंतिम लड़ाई जपान से हुई 1 सितम्बर 1945 में  
 जापानी सेना की सोवियत सेना ने मिसूरी नामक जहाज पर  
 हस्ताक्षर हुए थे। सोवियत और जापान के बीच संधि हुई।

### जाट स्कूल की स्थापना

जाट अ गाँव सश्रुत मिडिल स्कूल की स्थापना 9 अगस्त 1917  
 में हुई। स्थापना का नाम था चौधरी बहादुरसिंहजी भोमिया। वे  
 कुछ दिन बीकानेर की पदम सना में रहे थे। ठाकुर शाही से मिल  
 मिलाप यद्योचित न होने के कारण उन्होंने जाटों को ऊँचा उठाने का  
 संकल्प किया जाट स्कूल की स्थापना की।

स्कूल टूटन की स्थिति में हो गया तो सनाउकी ने स्वामी के  
 पवानन्द महाराज को 1932 में आमंत्रित किया। स्वामीजी ने  
 इस काम को सफलता से सम्भाला।

स्वामीजी का अन्तकाल 12 सितम्बर 1973 में हुआ सर  
 छाजूरामजी, सर छोटूरामजी आदि ने इसे सब तरह की सहायता  
 दी। जाट शिक्षा के क्षेत्र में यह स्कूल पहली संस्था थी।

नोट—चौधरी बहादुरसिंहजी का अन्तकाल 1 जून 1924 को हुआ



## 1757 मे आधुनिकता की स्थापना

पराधीनता से सुख-समृद्धि और राष्ट्रियता मिली ।

- 1 भारत के इतिहास में पहली बार भारत निर्माण की नींव पटी । भारत की राजधानी कलकत्ता बना । 1911 तक कलकत्ता ही भारत की राजधानी रहा । 1911 में दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया गया ।
- 2 भारत के इतिहास में पहली बार एक भाषा की स्थापना हुई जिसने भारत को एक राष्ट्र के रूप में बनने में एक नींव का काम किया । इससे पहले भारत था ही नहीं । मुगल भी इतना बड़ा भारत नहीं बना पाए थे । इससे पहले अशोक का साम्राज्य भी आज के भारत के बराबर नहीं था )
- 3 आधुनिक विद्याओं का आरम्भ ही यही में हुआ था फिजिक, कॅमीस्ट्री, बायोलोजी, इंजिनियरिंग, मेडिकल इतिहास भूगोल आदि की पढ़ाई यहीं से शुरू हुई ।

4 न रत को पहली एक राष्ट्र बनाने प्राधुनिक विषयों चालू करने में अंग्रेजी रज की देन है ।

5 अंग्रेजी राज एक बहुत बड़ा वरदान रहा ।

1 लाहे को विधानों का कारखाना 1815 में मद्रास में खुला ।

2 रुई को कातने का कारखाना 1818 में कलकत्ते में खुला ।

3 बिहार के शनीग्रज में कोयले की खान 1820 में खोदी गई ।

4 1823 में कोफी का पौधा उगाया गया ।

5 1854 में जूट के कारखाने व सन व कारखाने बने ।

6 1900 में रबड़ के पौधे उगाए जाने लगे ।

7 सीमेंट का कारखाना मद्रास में 1904 में खोला गया ।

जो आज भी चल रहे हैं ।

1 डाम्ब स्पिलिंग और विविंग 1854

2 बंगाल गार्डरन बक्स 1854

3 रैली पेपर मिल 1870

4 टाटा आइरन एण्ड स्टील 1907

5 1951 से पंचवर्षीय योजनाएँ बनने लगी

जैसे बंगाल की खाड़ी से मानसून हवाएँ उठती हैं और सारे उत्तरी भारत को हरा भरा और सुखी समृद्ध बनाती हैं वैसे बंगाल की खाड़ी से 1757 में प्राधुनिक विद्याएँ और विश्व में पाएँ उठी जिन्होंने भारत को प्राधुनिक ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र बनाया ।

भारत में रेल 1853 में बम्बई से एक छोटे में कच्चे तरु चली भारत में पांच करोड़ भेडे हैं । 1990 में पांच करोड़ किलोग्राम ऊन का उत्पादन हुआ । मांग साडे पांच करोड़ किलोग्राम की है ।



# इंडिया अर्थात् भारत

## INDIA that is BHARAT

इन शब्दों की उत्पत्ति बहुत ही कम लोग जानते हैं। हमारा संविधान इन्हीं शब्दों से प्रारम्भ होता है। तीन वष के विवाद के बाद भारत शब्द ठूँटा गया और अपनाया गया। भारत कौन था, क्या था, कब था, यह तो मैं भी भूल गया। पर इतना याद है कि तीन वष के विवाद के बाद ये शब्द अपनाये गये। भारत' शब्द गढ़ा गया 1950 में। 'इंडिया' शब्द गढ़ा गया 1857 में।

वर्तमान भारत भूमि, हमारी मातृ भूमि भारत का जन्म हुआ 1757 में। जन्म स्थली हैं कलकत्ता। कलकत्ता एक छोटा सा गाँव था। बहना चाहिए एक छोटी सी ढाणी थी, एक छोटी सी बस्ती थी। 1757 से 1911 तक यही बस्ती भारत की राजधानी रही। इससे पहले दिल्ली एक छोटा सा गाँव था।

आप अचम्भा मत करना। 1757 में अंग्रेजों की विजय से वर्तमान भारत भूमि का निर्माण शुरू हुआ। इससे पहले न भारत था न इंडिया था और न ही कोई दूसरा नाम था जिससे इस भूमि का बोध होता है। अंग्रेजी राज्य भारत के लिए एक बहुत बड़ा वरदान रहा।

- 1 पहली बार भूमि बनी।
- 2 पहली बार सक्का भाषाओं की जगह देग की एक भाषा बनी।
- 3 पहली बार देश में शांति कायम हुई।
- 4 पहली बार शेर-बकरी एक घाट पर पानी पीने लगे।
- 5 पहली बार आधुनिक विद्याएँ चालू हुईं। इतिहास, भूगोल, गणित, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान वनस्पति विज्ञान, इंजिनियरिंग, मेडिकल आदि सब विद्याएँ 1757 से चालू हुईं।
- 6 देश में कल कारखाने लगे।
- 7 राजस्थान के सेठ साहूकार, पूर्ब में बगाल, बिहार आसाम में जाकर व्यापार करने लगे। राजस्थान के सेठ लोग, श्रेष्ठ लोग सड़े हुए उदम हुआ। कनकत से याना बगाल की खाड़ी से, मानसून हवाएँ उठनी हैं। सारे उत्तरी भारत को हरा-भरा बनाती हैं। कतकतों से आधुनिक विद्याएँ उठी शांति और प्रशासन उठा, और हमारा देश एकता के सूत्र में बंधकर स्मृद्धि शाली बना, धन ध्याय से परिपूर्ण हुआ। अंग्रेजों ने जाटा धीरों, गूजरो आदि पिछड़ी जातियों को सेना में भरती किया जाटा आदि पहली बार सैनिक जाति बने।

इस प्रकार अंग्रेज विजय ही भारत की विजय है। अंग्रेज विजय से ही वर्तमान इंडिया बना है। याद रखो सम्राट अशोक का

राज्य विद्वार तक ही सीमित था । मुगल भी दक्षिण में नहीं पहुँचे थे।

1757 में अंग्रेजों की जीत हिन्दुओं की जीत थी । हमारे देश की जीत थी । टूटी, फूटी, बिखरी धरती को उदार अंग्रेजों ने एकता के वातावरण में खड़ा किया ।

मत्त भूलो 1757 में अंग्रेजों ने कलकत्ता लिया । 1857 में उन्होंने दिल्ली ली । इतिहास में पहली बार 1857 में इंडिया बना भारत नाम रखा गया 1950 में । इंडिया नाम रखा 1857 में ।

—

### श्रेष्ठ व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय

श्री पी आर जतकर—पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय के डीन सज्जनता की प्रतिमूर्ति आकर्षक व्यक्तित्व कई वैज्ञानिक पुस्तकों के लेखक । सफल प्रशासक एवं आदर्श शिक्षक महा मानव ।

श्री जुगल किशोर जोशी—अखिल भारतीय स्टूडेंट फेडरेशन के पूर्व जिला सचिव एवं अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष, शिक्षक समुदाय की सेवा में तत्पर रहने वाले ।

श्री सौभाग्यमल जैन (जैसलमेर)—गांधीवादी विचारों के सज्जन पुरुष । रा उ माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त लेखक एवं शिक्षाविद आजकल गांधी वाल विद्यालय का संचालन करते हुए राष्ट्र निर्माण में लगे हैं, सरल स्वभाव आकर्षक व्यक्तित्व के धनी हैं ।



## उत्तरी भारत के लोग

उत्तरी भारत के हिंदु पश्चिम की तरफ से भारत में आये । मूल निवासी नहीं है । पश्चिम की तरफ से आने वाले का मूल पूव में होगा, पीठ पश्चिम में होगी । दाहिना हाथ दक्षिण में होगा । बाया हाथ उत्तर में होगा । उत्तर का अर्थ है ऊपर । उत्तर की भूमि ऊची है यानी ऊपर है, हिमालय ऊपर हैं । हिंदु नाम इसलिए पड़ा कि ये सिंधु की तरफ से आये । सिंधु से हिंदु हुआ । यह हिंदु नाम मूल निवासियों ने रखा । अपने आपको वे लोग आर्य कहते थे क्योंकि वे मूल निवासियों से हर बात में श्रेष्ठ थे-रंग में, रूप में ऊँचाई में, विद्या में, जीवन प्रणाली में सब प्रकार से श्रेष्ठ थे ।

दक्षिण नाम आर्यों ने रखा क्योंकि यह उनके दाहिने हाथ की तरफ था । पश्चिम से आने वाले का दाहिना हाथ दक्षिण की तरफ होगा इसीलिए दक्षिणी भारत नाम पड़ा ।

ये लोग कब आए, यह पता नहीं । कोरे अनुमान अन्दाजे हैं । उत्तरी पश्चिमी सीमा से आए, इरान से आए । यों भी कहते हैं मध्य एशिया से आये जहाँ अफगानिस्तान है । दोनों कथनों में अन्तर भी नहीं है ।

आर्यों ने जीवन के सभी विभागों के लिए मंत्र बना लिए थे । ये मंत्र ही हिंदुओं के सामाजिक जीवन के आज भी आधार हैं ।  
शैक्लरी, समाजवादी जीवन अभी दूर हैं ।



## जातिवाद ETHNICITY

1926 म मैंन अख्ययन और चिंतन दोनों गुरु किये । मेरी धारणा थी कि जातीयता और जातिवाद ज दो ही मिट जायेंगे । मेरा चिंतन दो प्रचारों पर आधारित था—विद्या प्रचार और साम्यवाद का प्रचार । विद्या प्रचार से जानकारी बढ़ेगी, चिंतन बढ़ेगा । सच्चाई और स्थायी क्या है, यह जानकारी हा जाएगी । प्रथाएँ और कुप्रथाएँ मिट जाएगी । पर ऐसा हुआ नहीं । सकीणताया मनुष्य को सुख सुविधाएँ देती हैं । ममता दती है । एक मुनिश्चिन सीमा प्रदान करती हैं । सीमाएँ अपनापन देती हैं सकीण जानकारी ही पूरी जानकारी है । सबधा की सीमाये पहुँच पैदा करती हैं मिलन की मात्र बढ़ाती हैं । इसीलिए जातियाँ रहगी राष्ट्रीयता रहेगा, प्रशासनिक सीमाया रहेगी, सम्मेलनों की सुगमता रहेगी । साम्यवादी व्यवस्था इसीलिए रूक गई । मानव जाति के भेद सकीणता देते हैं और सकीणता से ममता बनती हैं ।

याद रखो सकीणता से, सीमाबधी से ममता बनती हैं ।



## मम्मी पापा वाद-विवाद-संवाद

राजस्थान शिक्षा विभाग की पत्रिका "शिविरा" दिसम्बर 1991 के पृष्ठ 287 पर प्रकाशित लेख की सच्ची प्रतिलिपि

### जब 'मम्मी' नाचेगी

मेरे पढोम मे एक मायता प्राप्त विद्यालय चलता है। गीत-गाली सिखाने हुए छोट बालकों को एक गीत प्राय सिखाते गवाते हैं (1) नाल टमाटर खाएंगे। (2) स्कूल पढने जाएंगे। (3) सबको मिठाई खिलाएंगे। यहाँ तक तो कोई आपत्तिजनक बात नहीं है किन्तु अगली ही पंक्तियाँ—(4) मम्मी को नचाएंगे। (5) पापा को हसाएंगे।—इन बच्चों को जिस 'संस्कृति' (विकृति) की आरम्भ दिखाने हैं वह चिन्तनीय है। बच्चे 'मम्मी' को नचाकर पापा को हसाना के उद्देश्य में जिस किन्म का निर्माण करेंगे उसे आनवाना राष्ट्र देखकर घबरा हो सकेगा।

इसमें पहली विकृति तो यही है कि ससार की अनेक भाषाओं जननी संस्कृत और उसकी पुत्री-भाषाओं का अस्तित्व और प्रयोग और उनमें लक्ष लक्ष शब्द-सपदाँ में मम्मी और पापा के लिए कोई शब्द कम में नहीं लाए जाते मातृ माता, जननी, पितृ-पिता, जनक



आदि वरन काम मे लाए जाते हैं ऐसे विदेशी शब्द जो ध्वनि, अर्थ की दृष्टि से गहित हैं। बहुप्रचलित 'द एडवास्ड लनसं डिक्शनरी थाव इ गलिश' म 'मम्मी' शब्द का अर्थ अंकित है—'वाँडी आव ए ह्यूमन बीग और एनीमल एम्बाम्ड फार बरियल, ड्राइड अप बाडी प्रिजर्ड फाम डिक्, एज इन ईजिप्ट।' रहा सवाल 'डडी' का जो कणमधुर नहीं साभिप्राय नहीं, ककश और सक्षिप्त होते रूप 'डड' म 'मृत' की ध्वनि आती है। 'पापा' को पापी कहने का साहस कौन करे ?

उस भारतीय जननी, माता, अम्बा का वह रूप जो अपने पुत्र को जन्म से ही अपनी सोरी से उसे स्वेच्छया प्रवृत्ति या निवृत्ति माग की और उन्मुख कर देने की क्षमता रखती थी।

प्रवृत्ति—धन्योऽसि रे । यो वसुधाम धानु रे कश्चिद पालयि-  
तासि पुत्र । तत्पालनादस्तु सुखोपभोगो धर्मरत्न प्राप्स्यास चामरत्वम्

निवृत्ति—शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरजनोऽसि सत्तारमाथा परिव-  
जितोऽसि । सत्तार स्वप्न त्यजमोहनिद्रा हे तात । त्व रोदियि कस्य हेनो ।

कितना भवमूल्यित हो गया आज कि वह 'नचायी जाएगी' और 'पापा' को उसका नाच से हसाया जाएगा, धन्योऽसि रे ।

महाकवि और भक्त सूरदास का इस बात का सक्त अफसोस था—अब हा नाच्यों बहुत गोपान, किन्तु कहने वाले कहते हैं कि नृत्य एक ललित कला है किन्तु समय और परिस्थिति की मिनता देखी जानी चाहिए ।

जब बच्चे पापा को हसाने के लिए अपनी मम्मी को नचाएंगे तो निश्चय ही एक विशेष युग होगा जिसकी झकार स्कूलों से शुरू हो रही है । एक बार सोचें तो । भारत की भारत रहने दें ।

★

—अमरसिंह पाण्डेय

## बीकानेर के परिचित व्यक्ति

स्व० श्री रामरतन कोचर—बीकानेर राज्य प्रजा परिषद के उत्तरदाई शासन स्थापना आन्दोलन में योग दिया। बीकानेर में कांग्रेस संगठन को उन्होंने पुनर्गठित किया और उसका काय गाव-गाव फैलाया। वे जिला कांग्रेस के अध्यक्ष बने, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस व उसकी कार्यकारिणी तथा कांग्रेस महामिति के सदस्य रहे। राजस्थान के राजनतिक फैसलों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मुख्यमंत्रिया, अनेक मंत्रियों, सांसदों व विधायकों के उत्थान में उनका सहयोग रहा है। वचो सरपंचों से उनका सीधा सम्पर्क रहा। बीकानेर जिले का शायद ही कोई गाव ऐसा होगा जहां वे नहीं पहुंचे हों।

बीकानेर द्विबीजन के राजनतिक निर्णयों में उनका निष्पक्ष स्थान रहा। राजस्थान के महत्वपूर्ण चुनावों में उनके सक्रिय सहयोग के कारण उनका राजस्थान के सभी भागों के नेताओं व कार्यकर्त्ताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क बना। सन 1956 में वे लूणकरणसर

क्षेत्र से विधान सभा के लिए चुने गए ।

श्री हरिश्चन्द्र व्यास—इमानदार एवं चरित्रवान् अनेकानेक पुस्तिका के लेखक । लेखन के कार्य पर सरकारी और गैर सरकारी पुरस्कार प्राप्त । अपनी मेहनत एवं लगन से बराबर आगे बढ़ते हुए समाज सेवा में लगे हैं । मित्रो में लोकप्रिय हैं । सही अर्थों में कामशील मानव स्वरूप हैं ।

श्री कान्तसिंह पवार—प्रगतिशील विचारों के सरल इंसान । सुयोग्य प्रशासक एवं अध्यापक । राजकीय सीनियर हायर सनडरी स्कूल नापासर के प्रिंसिपल । मित्रो में कान्हेज जीवन सही लोकप्रिय । सादा जीवन, कमशील व्यवित्त के धनी । -

श्री आज्ञाराम मुथार—विकलांग समिति के अध्यक्ष विकलांगों की सेवा में हर वक्त तैयार । सेवाभावी स्वभाव, प्रगतिशील विचारों से ओत पीत ।

श्री रूपचन्द गगा—मिलनमार व्यक्ति के धनी कई समाज सेवा संस्थाओं के पदाधिकारी, राज नेताओं के सहयोगी सेवा भावी स्वभाव मित्रो में प्रिय । शब्दवाणी के गायक ।

मोहम्मद हुसन—शांत एवं गम्भीर स्वभाव के धनी । अच्छे मित्र पुस्तक मुद्रण में मददगार ।

मोहम्मद तोसिक—प्रगतिशील विचार के अच्छे प्रिंटस ।

सुरेश सेवग अच्छे कम्पोजिटर सरल स्वभाव भाकपेंक व्यक्तित्व

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

33

34

35

36

37



## लेखक की अन्य रचनाएँ

- (१) जगलपुरी का हैडमास्टर
- (२) जगलपुरी का हैडमास्टर (शिक्षा प्रशासन)
- (३) सक्पूलर वाद
- (४) राज काज की बातें
- (५) राजस्थान में पचायत राज
- (६) राजस्थान के पेड़ पीघे पशु पक्षी
- (७) राजस्थान का पशु धन गावों की अथ व्यवस्था
- (८) राज काज की बातें
- (९) लादे वाला
- (१०) जगलपुर का हैडमास्टर, हिंदी भी पढ़ाता था ।